कृष्ण पक्ष, 21 वर्ष, अंक 351, पृष्ठ 8, मूल्य 3.00

अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज | मंगलवार 17 जनवरी 2023 | विश्व निर्माण एवं मानव विकास को दुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

'सेना के लिए गेमचेंजर साबित होंगे अग्निवीर'

अग्निपथ सशस्त्र बलों के लिए गेमचेंजर साबित होगी: मोदी

नई दिल्ली: प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सोमवार को तीनों सेनाओं के अग्निवीरों के पहले बैच को संबोधित किया। इस दौरान उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला कि यह परिवर्तनकारी नीति हमारे सशस्त्र बलों को मजबूत करने और उन्हें भविष्य के लिए तैयार करने में एक गेम चेंजर साबित होगी।

प्रधानमंत्री ने इस पथ-प्रदर्शक अग्निपथ योजना के अग्रणी होने पर अग्निवीरों को बधाई दी। प्रधानमंत्री ने कहा कि युवा अग्निवीर सशस्त्र बलों को और अधिक युवा व तकनीक की समझ रखने वाले बनाएंगे। अग्निवीरों की क्षमता की सराहना करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि उनकी भावना सशस्त्र बलों की बहादुरी को दर्शाती है जिसने हमेशा राष्ट्र के झंडे को ऊंचा रखा है। मोदी ने कहा कि इस अवसर से उन्हें जो अनुभव प्राप्त होगा, वह जीवन भर के लिए गौरव का स्रोत होगा। प्रधानमंत्री ने कहा कि नया भारत नए जोश से भरा हुआ है और हमारे सशस्त्र बलों को आधुनिक बनाने के साथ-साथ उन्हें आत्मनिर्भर बनाने के प्रयास चल रहे हैं। उन्होंने कहा कि 21वीं सदी में युद्ध लड़ने का तरीका बदल रहा है। संपर्क रहित युद्ध के नए मोर्चों और साइबर युद्ध की चुनौतियों पर चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि तकनीकी रूप से उन्नत सैनिक हमारे सशस्त्र बलों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। उन्होंने कहा कि युवाओं की वर्तमान पीढ़ी में विशेष रूप से यह क्षमता है, और इसलिए अग्निवीर

आने वाले समय में हमारे सशस्त्र बलों में अग्रणी भूमिका निभाएंगे। प्रधानमंत्री ने यह भी बताया कि कैसे यह योजना महिलाओं को और सशक्त बनाएगी। उन्होंने इस बात पर प्रसन्नता व्यक्त की कि किस प्रकार अग्निवीर महिलाएं नौसेना बलों का गौरव बढ़ा रही हैं, और कहा कि वह तीनों सेनाओं में महिला अग्निवीरों को देखने के लिए उत्सुक हैं। प्रधानमंत्री ने सियाचिन में तैनात महिला सैनिकों और आधुनिक लड़ाकू विमानों को चलाने वाली महिलाओं का उदाहरण देते हुए यह भी याद किया कि कैसे महिलाएं विभिन्न मोर्चों पर सशस्त्र बलों का नेतृत्व कर रही हैं। प्रधानमंत्री ने कहा कि विभिन्न क्षेत्रों में पोस्टिंग से उन्हें विविध अनुभव प्राप्त करने का अवसर मिलेगा और उन्हें विभिन्न भाषाओं और विभिन्न संस्कृतियों और जीवन जीने के तरीकों को सीखने का प्रयास करना चाहिए। उन्होंने कहा कि टीम वर्क और नेतृत्व कौशल का सम्मान उनके व्यक्तित्व में एक नया आयाम जोड़ेगा। उन्होंने अग्निवीरों को अपनी पसंद के क्षेत्र में अपने कौशल को बेहतर बनाने पर काम करने के साथ-साथ नई चीजें सीखने के लिए उत्सुक बने रहने का आह्वान किया। युवाओं और अग्निवीरों की क्षमता की सराहना करते हुए,

सरकार ने गिनाए फायदे

अग्निपथ योजना पर सरकार की ओर से जारी फैक्ट शीट में बताया गया है कि यह अग्निपरीक्षा नहीं, बल्कि अवसर है। आगामी वर्षों में अग्निवीरों की भर्ती तीन गुना ज्यादा होगी। सेवा पूरी होने पर उद्यमी बनने के इच्छुक जवानों को वित्तीय मदद मिलेगी। रिटायर्ड अग्निवीरों को केंद्रीय बलों और राज्य पुलिस भर्ती में प्राथमिकता दी जाएगी। अग्निवीरों के समाज के लिए खतरा बनने की आशंका बेबुनियाद है।

युवाओं ने शुरू में किया योजना का विरोध: अग्निपथ स्कीम का युवाओं ने शुरू में विरोध किया। पूरे देश में प्रदर्शन किए गए। युवाओं के गुस्से को ठंडा करने के लिए गृह और रक्षा मंत्रालय ने आरक्षण देने का ऐलान किया। गृह मंत्रालय ने अग्निवीरों के लिए केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बल और असम राइफल्स में भर्ती के लिए 10% आरक्षण देने का फैसला लिया। इन्हें आयु सीमा में भी 3 से 5 साल की राहत देने का ऐलान किया।

प्रधानमंत्री ने यह कहते हुए अपनी बात समाप्त की कि वे 21वीं सदी में राष्ट्र को नेतृत्व प्रदान करने जा रहे हैं।

4 साल बाद होगा प्रमोशन

चार साल बाद सेना में प्रमोशन के लिए रेगुलर टेस्ट होंगे, जैसे अभी होते हैं। जो 25% अग्निवीर प्रमोशन पा लेंगे, वे सेना में बने रहेंगे। एक बटालियन में अमूमन 1000 लोग होते हैं। इनमें 14 से 18 अफसर होते हैं। अफसरों की भर्ती अग्निपथ से नहीं, बल्कि नियमित परीक्षा के माध्यम से ही होगी। बटालियन में 700 हथियारबंद सैनिक होते हैं, जिनमें अलग-अलग रैंक के ठउड (नॉन कमीशंड ऑफिसर) होते हैं। जैसे सूबेदार, नायब सूबेदार आदि। हालांकि, अग्निपथ योजना के जरिए सिर्फ जवान चुने जाएंगे। चार साल बाद इन जवानों में से 25% के प्रमोशन होंगे, जो आगे चलकर सूबेदार-नायब सूबेदार के पद तक पहुंचेंगे। फिर वे अग्निवीर नहीं, रेगुलर फौजी कहलाएंगे। ये 17 से 20 साल तक सेना में रहेंगे। इनके अलावा लगभग 280 जवान क्लर्क, चालक, रसोइए आदि होते हैं। इनकी नियुक्ति भी अग्निपथ योजना से ही होगी। इस हिसाब से देखें तो हर बटालियन में आने वाले वर्षों में 700 सैनिक अग्निपथ योजना वाले होंगे। रेजिमेंट्स को सैनिक उनके मापदंडों के अनुरूप अग्निपथ योजना से मिलेंगे। अब रेजिमेंट्स अपने स्तर पर भर्तियां नहीं करेंगी।

चंद्रशेखर के बचाव में उतरे तेजस्वी...

जदयू ने पूछा उन्हें क्यों बचा रहे उपमुख्यमंत्री; बीजेपी ने कहा- सब उन्हीं के इशारे पर हो रहा है

पटनाः रामचरितमानस के विवाद पर तेजस्वी यादव ने शिक्षा मंत्री चंद्रशेखर का बचाव किया है। इसे लेकर अब जदयू उग्र हो गई है। जदयू के नेता तेजस्वी यादव से सवाल पूछने लगे हैं कि आखिर वह शिक्षा मंत्री का बचाव क्यों कर रहे हैं? जदयू नेता साफ शब्दों में कह रहे हैं कि नीतीश कुमार के खिलाफ बोलने वाले आरजेडी में कुछ नेता हैं तो उन्हें बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। वहीं, भाजपा भी महागठबंधन में मचे घमासान में यह कह रही है कि सब कुछ तेजस्वी यादव के इशारे पर हो रहा

है।

तेजस्वी बोले- यह बीजेपी की साजिशः उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव ने शिक्षा मंत्री चंद्रशेखर का बचाव करते हुए कहा कि संविधान सबसे बड़ा ग्रंथ है। और उसी में बोलने की आजादी दी गई है। यह बीजेपी की साजिश है। बीजेपी इस मसले को बढ़ा रही है, लेकिन जेडीयू के नेता इस जवाब से खुश नहीं है। जेडीयू प्रवक्ता अभिषेक झा ने तेजस्वी यादव से पूछा है कि आखिर चंद्रशेखर का बचाव क्यों कर रहे हैं? महागठबंधन जिन मुद्दों पर बना है उससे आरजेडी के नेता भटक रहे हैं। तेजस्वी यादव तो लगातार कह रहे हैं कि जो इस तरह के बयान दे रहे हैं वह भाजपा की मदद कर रहे हैं तो, फिर उन नेताओं पर कार्रवाई क्यों नहीं हो रही है?

बक्सर पहुंचे किसान नेता राजेश टिकैत

बक्सरः बक्सर के बनारपुर खेल मैदान में किसानों के राष्ट्रीय प्रवक्ता राकेश टिकैत पहुंचे हैं। उन्होंने एक बड़े आंदोलन का संकेत भी दिया है। साथ ही कहा है कि जब तक सरकार आंसू के गोले और लाठी चार्ज नहीं करती, तब तक कोई आंदोलन बड़ा नही हो पाता है। साथ ही किसानों के नेता रवि आजाद की ओर से भी एक वीडियो जारी कर किसानों के साथ हुई घटना को दुःखद बताया गया है।

पुलिस अधिकारियों पर कार्रवाई होः पुलिस अधिकारी पर सख्त करवाई करने की बात कही गई है। किसानों की जमीन की 2013 के रेट से मुआवजा देना और किसानों की पिटाई को गलत बताया गया है। साथ ही कहा है कि अगर सरकार नही मानती है। राष्ट्रीय स्तर पर आंदोलन तेज करना होगा। किसान अपनी मांगों को लेकर 92 दिन से धरने पर बैठे हैं।

किसानों के खिलाफ 5 एफआईआरः चौसा के बनारपुर में आने की सूचना राकेश टिकैत ने वीडियो जारी करते हुए दिया था। किसानों पर अभी तक प्रशासन की ओर से पांच एफआईआर किया गया है।

जोशीमठ केसः सुप्रीम कोर्ट का दखल देने से किया इंकार

नई दिल्ली: सुप्रीम कोर्ट ने जोशीमठ में जमीन धंसने के मामले पर शंकराचार्य अविमुक्तेश्वरानंद की याचिका पर सुनवाई करने से मना कर दिया है। चीफ जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़ की अध्यक्षता वाली बेंच ने कहा कि आप उत्तराखंड हाईकोर्ट में अपनी बात रखें। सुनवाई के दौरान चीफ जस्टिस ने कहा कि उत्तराखंड हाईकोर्ट पहले ही इस मामले को सुन रहा है। वह याचिकाकर्ता की तरफ से रखी गई सभी मांगों को सुनने में सक्षम है। शंकराचार्य अविमुक्तेश्वरानंद की ओर से वकील परमेश्वर नाथ मिश्र ने कहा कि भू-धंसाव की जद में ढाई हजार साल से भी ज्यादा प्राचीन मठ भी आ गया है। पूरे इलाके में दहशत है। घरों की दीवारों और छतों पर दरारें आ गई हैं। इससे ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और प्राचीन धरोहरों के अस्तित्व पर संकट आ गया है। याचिका में क्षेत्र की जनता के जानमाल की सुरक्षा सुनिश्चित करने की मांग की गई थी।

जोशीमठ-औली रोपवे के पास दीवार में 20 फीट लंबी दरार उभरीः जोशीमठ-औली रोपवे के पास बड़ी दरारें उभर आई हैं। इस रोपवे के ऑपरेशंस एक हफ्ते पहले बंद कर दिए गए थे। रोपवे इंजीनियर दिनेश भाटी ने बताया कि इस रोपवे परिसर के पास एक दीवार पर चार इंच चौड़ी और 20 फीट लंबी दरार आ गई है। इस इलाके में दरार पड़े घरों की संख्या भी 723 से बढ़कर 826 हो गई है। इनमें से 165 घर असुरक्षित इलाके में हैं। राज्य आपदा प्रबंध संस्थान ने बताया कि अब तक 233 परिवारों को रिलीफ सेंटर्स में शिफ्ट किया जा चुका है।

वैवाहिक रेपः सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र से मांगा जवाब

नई दिल्ली: सुप्रीम कोर्ट ने वैवाहिक रेप को अपराध में दायरे में रखने के मसले पर केंद्र सरकार को जवाब दाखिल करने का निर्देश दिया। कोर्ट ने 15 फरवरी तक जवाब दाखिल करने का निर्देश दिया था। इसके अलावा कोर्ट ने सभी पक्षकारों को 2 मार्च तक लिखित दलीलें दाखिल करने का निर्देश दिया था। कोर्ट 14 मार्च से अंतिम सुनवाई करेगा। सुप्रीम कोर्ट ने इस मामले में 16 सितंबर, 2022 को केंद्र सरकार को नोटिस जारी किया था। सुप्रीम कोर्ट को ये तय करना है कि पति का पत्नी के साथ जबरन संबंध बनाना रेप है कि नहीं। वैवाहिक रेप के मामले पर 11 मई, 2022 को दिल्ली हाईकोर्ट ने विभाजित फैसला दिया था। जस्टिस राजीव शकधर ने भारतीय दंड संहिता की धारा 375 के अपवाद को असंवैधानिक करार दिया था, लेकिन जस्टिस सी हरिशंकर ने इसे सही करार दिया है। अब सुप्रीम कोर्ट इस मामले पर सुनवाई करेगा। हाईकोर्ट में सुनवाई के दौरान केंद्र सरकार ने कहा था कि उसका ये रुख नहीं है कि भारतीय दंड संहिता की धारा 375 के अपवाद 2 को हटाया जाए या रखा जाए। केंद्र सरकार अपना रुख संबंधित पक्षों से मशविरा के बाद ही तय करेगी।

'कॉलेजियम में केंद्र का प्रतिनिधि शामिल करें सुप्रीम कोर्ट'

नई दिल्ली: केंद्र सरकार ने सुप्रीम कोर्ट को सलाह दी है कि कॉलेजियम में उसके प्रतिनिधियों को भी शामिल किया जाए। कानून मंत्री किरण रिजिजू ने सीजेआई को चिट्ठी लिखकर कहा है कि जजों की नियुक्ति की प्रक्रिया में सरकारी प्रतिनिधि शामिल करने से सिस्टम में पारदर्शिता आएगी और जनता के प्रति जवाबदेही भी तय होगी। किरण रिजिजू ने पिछले साल नवंबर में कहा था कि कॉलेजियम सिस्टम में पारदर्शिता और जवाबदेही की कमी है। उन्होंने कहा था कि हाईकोर्ट में भी जजों की नियुक्ति प्रक्रिया में संबंधित राज्य सरकार के प्रतिनिधियों को

शामिल किया जाए। लोकसभा उपाध्यक्ष भी कह चुके हैं कि सुप्रीम कोर्ट अक्सर विधायिका के कामकाज में दखलंदाजी करता है। इस मामले में दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने प्रतिक्रिया दी है। उन्होंने कहा कि यह बेहद खतरनाक है। न्यायिक नियुक्तियों में सरकारी हस्तक्षेप बिल्कुल नहीं होना चाहिए।

पहला- क्या सुझाव मंजूर करेगा सुप्रीम कोर्ट?

कानून मंत्री के सुझाव को सुप्रीम कोर्ट मान ले, ऐसा मुश्किल है। सीजेआई चंद्रचूड़ की अगुआई वाले कॉलेजियम में 5 और सदस्य हैं। इनमें जस्टिस संजय किशन कौल, जस्टिस एस. अब्दुल नजीर, जस्टिस केएम जोसेफ, जस्टिस एमआर शाह और जस्टिस संजीव खन्ना शामिल हैं। पहले इसमें सीजेआई के अलावा चार और जस्टिस थे। जिनमें कोई भी सीजेआई का उत्तराधिकारी नहीं था। इसीलिए बाद में जस्टिस संजीव खन्ना को छठवें मेंबर के तौर पर कॉलेजियम में शामिल किया गया, जो कि सीजेआई के उत्तराधिकारी हैं।

कॉलेजियम इस सुझाव को सुप्रीम कोर्ट सरकार की नेशनल ज्यूडिशियल अपॉइंटमेंट कमीशन एक्ट लाने की सरकार की नई कोशिश के तौर पर देख रहा है। एनजेएसी को 2015 में संसद में पास किया गया था, लेकिन अक्टूबर 2015 में सुप्रीम कोर्ट की 5 जजों की बेंच ने इसे असंवैधानिक करार दे दिया था।

'आप' विधायकों ने किया एलजी कार्यालय की तरफ मार्च

नई दिल्ली: दिल्ली विधानसभा में आज तीन दिवसीय सत्र का प्रारंभ हंगामेदार रहा। भाजपा विधायक जहां एक ओर ऑक्सीजन सिलेंडर लेकर सदन पहुंचे तो दूसरी ओर आम आदमी पार्टी के विधायकों ने विदेश में शिक्षकों को प्रशिक्षित करने का मामला उठाया। विपक्ष की ओर से रखे गए मुद्दों पर चर्चा के लिए विधानसभा अध्यक्ष ने जैसे ही स्वीकृति दी, आप के विधायकों ने सरकार के कामकाज में दखल को लेकर उपराज्यपाल के विरोध में नारेबाजी करने लगे। इसके अलावा आप विधायक उपराज्यपाल से शिक्षकों को विदेश ट्रेनिंग के लिए भेजने की मांग को लेकर सदन से बाहर निकल आए। बात यहीं नहीं ठहरी। मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के नेतृत्व में सभी आप के सभी विधायक उपराज्यपाल कार्यालय

की तरफ पैदल मार्च करते हुए रवाना हुए। इस दौरान अरविंद केजरीवाल ने कहा कि वह सुप्रीम कोर्ट का ऑर्डर लेकर आये हैं। सुप्रीम कोर्ट ने चार जुलाई 2018 को बोला था कि एलजी को कोई भी स्वतंत्र निर्णय लेने का अधिकार नहीं है। सुप्रीम कोर्ट ने दो बार लिखा, क्योंकि पता था कि एक बार में नहीं मानेंगे। आगे उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री और विधायकों को एलजी हाउस सिर्फ इसलिए जाना पड़ रहा है, कि शिक्षकों को प्रशिक्षित किया जा सके। यह कोई बड़ी मांग नहीं है। हम उम्मीद करते हैं कि एलजी को गलती का अहसास होगा। आगे केजरीवाल ने कहा कि एलजी ने दिल्ली में योगा क्लास रोक दी। दिल्ली के मोहल्ला क्लीनिक का भुगतान रुकवा दिए। दिल्ली जल बोर्ड के बजट को रुकवा दिए। कोई पेमेंट नहीं होने दिया। बस मार्शल की बीते तीन महीने से पेमेंट नहीं होने दी। सुप्रीम कोर्ट के आदेश की कोई वैल्यू नहीं है। एलजी ये सारे काम कैसे रुकवा सकते हैं। वहीं उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया का कहना है कि अगर दिल्ली के मुख्यमंत्री चाहते हैं कि दिल्ली के शिक्षक ट्रेनिंग के लिए फिनलैंड जाएं, तो एलजी को रोकने का अधिकार नहीं है।

थोक महंगाई दरः दिसंबर में घटकर 4.95 फीसदी पर आई

नई दिल्ली: महंगाई के मोर्चे पर आम आदमी को राहत देने वाली खबर है। खुदरा के बाद अब थोक महंगाई दर में भी गिरावट दर्ज हुई है। थोक मूल्य सूचकांक (डब्ल्यूपीआई) पर आधारित महंगाई दर दिसंबर महीने में घटकर 4.95 फीसदी पर आ गई। वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय ने सोमवार को जारी बयान में यह जानकारी दी। मंत्रालय के मुताबिक मुख्य रूप से खाद्य पदार्थों और कच्चे तेल की कीमतों

में कमी के चलते थोक महंगाई दर में गिरावट आई है। आंकड़ों के मुताबिक डब्ल्यूपीआई पर आधारित महंगाई दर दिसंबर में घटकर 4.95 फीसदी पर आ गई है, जबकि नवंबर महीने में यह 5.85 फीसदी और दिसंबर, 2021 में 14.27 फीसदी थी।

खबर संक्षेप

लाखों की चोरी के बाद फिर हुआ चोरी का प्रयास

मऊआइमा। मऊआइमा में चोरों के हौसले पूरी तरह बुलंद हैं। आज तक हुई दर्जनों चोरी का पदार्फाश नहीं हुआ। एक गारमेंट्स की दुकान में लाखों की चोरी के बाद फिर चोरी का आसफल प्रयास किया गया। मामला सोशल मीडिया एंव ट्वीटर पर वायरल होने के बाद भी मुकदमा नहीं दर्ज हुआ । मऊआइमा क्षेत्र में आए दिन चोरी की घटनाओं से लोग भयभीत हैं। अब तक दर्जनों चोरी की घटनाओं का अभी तक पदार्फाश नहीं हुआ। बताया गया हैं की ग्राम गदियानी नहर के निकट चौराहे पर नागेंद्र सिंह पटेल पुत्र जीत लाल पटेल सिध्दार्थ गारमेंट्स के नाम से रेडीमेड की दुकान चलाते हैं। दिसम्बर माह में चोरों ने लाखों रुपये के सामानों की चोरी की थी।फिर विगत दिनों चोरों ने दुकान के दरवाजे का ताला तोड कर कुंडी तोडी परन्तु कुंडी फंस जाने से चोरों ने चार स्थान पर सेंधमारी किए परन्तु चोरी करने में आसफल रहे। भुक्भोगी नागेंद्र सिंह पटेल ने इसकी सूचना पुलिस को दी। परन्तु आज तक मुकदमा दर्ज नहीं किया गया। मामला सोशल मीडिया एंव ट्विटर पर वायरल हो रहा है।

दिनदहाड़े मासूम बालक का गला काट कर निर्मम हत्या

घर से लगभग दो सौ मीटर की दूरी पर बालक का शव कब्रिस्तान के झाडी में मिला, खबर सुनते भारी भीड़ जमा, डॉग स्क्वायड एंव फिंगर प्रिंट की टीम, सहायक पुलिस आयुक्त और एसीपी मौके पर पहुंचे

अखंड भारत संदेश

मऊआइमा। मऊआइमा के ग्राम किंगरिया का पूरा खानपुर नई बस्ती में स्थित सरकारी बाग कब्रिस्तान की खजूर की झाडी में एक मासूम पांच वर्ष के बालक का शव देख कर क्षेत्र में हडकंप मच गया। मृतक का गला धारदार हथियार से काटा गया था। जिसकी शिनाख्त नई बस्ती निवासी मोहम्मद कासिम के पुत्र मोहम्मद नाजिम पांच वर्ष के रूप में हुई।मृतक कक्षा दो का छात्र था। मृतक के पिता ने अज्ञात लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज करा दिया है। बता दें कि मऊआइमा थाना क्षेत्र के ग्राम किंगरिया का पूरा खानपुर स्थित नई बस्ती निवासी मोहम्मद कासिम पुत्र मोहम्मद शकील का परिवार रहता है। बताया गया है कि मोहम्मद कासिम का एक पुत्र पांच वर्ष मोहम्मद नाजिम और एक पुत्री आलिया और पत्नी रुबिना बानों हैं। जबकि छोटा भाई मोहम्मद हासिम तथा पिता शकील अलग पास में घर बनवा कर रहते हैं। मोहम्मद हासिम 32 वर्ष अभी अविवाहित है।बताते हैं कि आज सोमवार को मोहम्मद नाजिम पांच वर्ष मकतब में पढने नहीं गया। वह दस बजे के लगभग भोजन करके खेलने चला गया। लगभग बारह बजे दोपहर ने चांद नामक बच्चे सरकारी बाग स्थित कब्रिस्तान में मोहम्मद नाजिम का शव खजूर की झाड में देख कर शोर मचा दिया । तब तक काफी लोग एकत्रित हो गए देखा कि मोहम्मद नाजिम का धारदार हथियार से गला कटा था। पास में काफी खून बहा था वह हवाई चप्पल कपडा पहने था। । मऊआइमा थाने को सूचना मिलने पर इंस्पेक्टर सुरेश सिंह तथा भारी संख्या में पुलिस मौके पर पहुंच गयी। शव का पंचनामा भरकर कर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। जबकि मृतक के पिता मोहम्मद कासिम ने अज्ञात लोगों के खिलाफ हत्या का मुकदमा दर्ज करा दिया है।मौके पर सहायक पुलिस आयुक्त अभिषेक अग्रवाल तथा ए सी पी चिराग जैन मौका मुआयना करके जरुरी दिशा निर्देश देकर चले गए।

अवैध सम्बंधों को लेकर भी रही चर्चा

काफी देर के बाद फिंगर प्रिंट की टीम एंव डॉग स्क्वायड की टीम पहुंची । बताया गया है कि डॉग स्क्वायड टीम के साथ आए डॉग ने पहले मौके पर खून को सूंघा फिर काफी दूर तक जाकर एक खून के छिंटें पडी पैंट को उठा लिया फिर डॉग स्क्वायड की टीम को लेकर डॉग सीधे मृतक के अविवाहित चाचा मोहम्मद हासिम 32 वर्ष पुत्र मोहम्मद शकील का कपडा पकड लिया। जिसे पुलिस गिरफ्तार कर थाने ले जाकर पूछताछ के बाद दोबारा घटना स्थल पर लायी। फिर वापस लेकर चली गई। सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार क्षेत्र में यह चर्चा बना हुआ है कि बच्चे की हत्या नाजायज सम्बंधों को देख लिया था। ताकि वह किसी को बता न दे इस लिए हत्या की गई। इंस्पेक्टर मऊआइमा सुरेश सिंह ने बताया कि हत्या का जल्द खुलासा हो जाएगा। अभी कोई क्लू नहीं मिला है। दिन रात पुलिस खुलासे में लगी हुई है।

दो बोलेरो गाड़ी की आमने सामने टक्कर 4 घायल

अखंड भारत संदेश

मेजा रोड। इलाकाई थाना क्षेत्र में दो बोलेरो गाड़ी की आमने सामने टक्कर में 4 लोग घायल हो गए जिन्हें हॉस्पिटल में भर्ती कराया गया। बता दे कि सोमवार 11 बजे बिगहनी गांव से एक बोलेरो पर सवार 7 लोग दादी का इलाज कराने के लिए नैनी जा रहे थे??। जैसे ही बोलेरो मेजा थाना क्षेत्र के सिरसा चौकी अंतर्गत गोशौरा कला गांव के दुर्गावती इंटरनेशनल स्कूल के सामने पहुंची ही थी कि सामने से आ रही तेज रफ्तार अनियंत्रित बोलेरो गाड़ी ने जोरदार टक्कर मार दिया, घटना में बोलेरो गाड़ी क्षतिग्रस्त हो गई ?। टक्कर में चार लोग गंभीर रूप से घायल हो गए घायलों को स्थानीय लोगों की मदद से सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र रामनगर भेजा गया।वहीं दूसरी गाड़ी मध्यप्रदेश के सतना से आ रही थी जो कि भूई पारा में किसी व्यक्ति के जनाजे में शामिल होने के लिए जा रहे थे, जिसमें 3 लोग सवार थे। दुर्घटना के बाद तीनों गाड़ी छोड़कर मौके से फरार हो गए। सूचना पर पहुंची पुलिस लिखा पढ़ी कर चली गई।

वाहन की टक्क से बाइक सवार युवक की मौत

जसरा। घूरपुर थाना क्षेत्र के जसरा बाजार के आगे पुलिया के पास प्रयागराज से बीमार मां को दवा लेकर ननिहाल जा रहे बाइक सवार युवक को बीती रात अज्ञात वाहन की टक्कर लगने से वह सड़क के नीचे जा गिरा। सुबह होने पर ग्रामीणों ने जब देखा तो घूरपुर पुलिस को सूचना दी। सूचना पर पहुंची पुलिस ने लाश को कब्जे में लेकर पीएम के लिए प्रयागराज को भेज दिया। घूरपुर के तातारगंज के ईश्वरदीन शर्मा की बड़ीबेटी सविता शर्मा को पैरालाइसिस हो गया है। सविता का बेटा हर्ष उर्फ मन्नू शर्मा 17 वर्ष बरुआ घाट प्रयागराज से मां की दवा लेकर साढ़े नौ बजे रात अपने ननिहाल तातारगंज जा रहा था। जसरा बड़े नाले के पास रात में अज्ञात वाहन के टक्कर से वह बाइक समेत सड़क के बाहर छिटक कर गिर गया। सुबह शौच को गये ग्रामीणों ने देख घूरपुर पुलिस को सूचना दी। सूचना पर पहुंची पुलिस शव को पोस्टमार्टम के लिए प्रयागराज भेज दिया। इधर हर्ष के मौत की जानकारी जैसे ही तातारगंज पहुंची घर में कोहराम मच गया। हर्ष के परिजन सूचना पर पीएम हाउस प्रयागराज के लिएरवाना हो गये। पेरालिसिस मां सविता हुई बेहोश बेटे हर्ष के मौत की सूचना जैसे ही मां के पास पहुंची मां बेहोश हो गई और परिवार में कोहराम मच गया। घर की महिलाओं ने किसी प्रकार से उसे ढांढस बंधाने लगीं।

रेलवे लाइन पर मिला वृद्धा का शव

नैनी। जसरा रेलवे स्टेशन के पास होम सिग्नल के निकट शनिवार को एक वृद्ध महिला का शव मिला है। बताया जाता है कि रेल कर्मी की निगाह पड़ने पर उसने अधिकारियों को सूचित किया।सूचना मिलने पर नैनी जीआरपी के इंचार्ज बीपी सरोज वहां पहुंचे और शव के शिनाख्त करने का प्रयास किया लेकिन सफल नहीं हुए। शव का पंचनामा भरकर उसे पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। बीपी सरोज के अनुसार संभवत ट्रेन के सफर के दौरान वृद्धा गिर गई होगी। उसके सिर और चेहरे पर चोट के निशान हैं। पहचान के लिए प्रयास किया जा रहा है।

तालाब में मादक पदार्थ की वजह से लाखों की मछलियों की मौत, अज्ञात के खिलाफ पुलिस से शिकायत

करछना। थाना क्षेत्र के ग्राम सभा चंदौली के एक मत्स्य पालक तालाब में रविवार की रात्रि में किसी अज्ञात व्यक्ति की ओर से जहरीला पदार्थ डाल दिए जाने से तालाब की सारी मछलियां मर गई है । वही तालाब का पानी काला पड़ गया है। साथ ही साथ प्रदूषण भी व्याप्त हो गया है। करछना थाना क्षेत्र के ग्राम सभा चंदौली के मजरा प्रतापपुर गांव निवासी रामबाबू सोनकर एक मत्स्य पालक हैं । उन्होंने चंदौली गांव स्थित अपने निजी तालाब संख्या 390 में कई वर्षों से मत्स्य पालन का कार्यकरता चलाआरहा रहा है। और उसके आजीविका का यही एक सहारा था। रविवार की रात में किसी अज्ञात व्यक्ति द्वारा उक्त तालाब में जहरीला पदार्थ डाल दिया गया । जिससे उक्त तालाब की समस्त मछलियां मर गई। और तालाब का पूरा पानी जहरीला होकर काला हो गया है । जिससे उक्त तालाब का पानी भी किसी व्यक्ति के प्रयोग में नहीं आ सकता । इस कारण गांव के मवेशियों को भी उस तालाब के पानी से खतरा उत्पन्न हो गया है। भुक्तभोगी के मुताबिक तकरीबन ढाई लाख रुपए का नुकसान हुआ है। प्रार्थी ने अपने लिखित तहरीर में यह भी दर्शार्या है कि प्रार्थी अत्यंत गरीब व्यक्ति है। और इसी मत्स्य पालन के धंधे के सहारे ही अपना और अपने परिवार का भरण पोषण करता चला आ रहा है । इस घृणित कार्य से मत्स्य पालक सहित परिवार के लोग चिंतित व मायूस है। भुक्तभोगी की ओर से सोमवार को करछना थाने में अज्ञात लोगों के खिलाफ एफ आई आर दर्ज करने की लिखित तहरीर दी है।

न्यूज झरोखा

मां विंध्यवासिनी क्रिकेट मैच कबरा का जिला पंचायत सदस्य ने फीता काट कर किया उद्घाटन

करछना। विकास खंड करछना के कबरा गांव में क्रिकेट प्रतियोगिता का शुभारंभ किया गया जिसमें कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जिला पंचायत सदस्य डॉ विजय बाबू यादव ने फीता काटकर क्रिकेट टूनार्मेंट का उद्घाटन किया इस मौके पर संभ्रांत व्यक्ति चंद्र प्रकाश तिवारी धर्मेंद्र तिवारी एडवोकेट पंकज तिवारी नितेश तिवारी ग्राम प्रधान प्रेमचंद आदिवासी , ओमप्रकाश आदिवासी प्रधान पुत्र उपस्थित रहे डीहा बारी विवेक यादव , लाला यादव, मनोहर यादव आकाश सिंह सूरज उज्जवल ,निहाल सुकेश , जितेंद्र सरद अंकित मलिंगा 11सुनील अनिल कान्हा यादव अमरबहादुर गोलू कलाम जीतू विशाल नियाज करन सदानंद मुलायममलिंगा इलेवन वर्सेस डीहा बारी के बीच में मैच खेला था जिसमें दिया बारी टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए 108 रन का लक्ष्य दिया जिसके विपरीत मलिंगा 109 लक्ष्य का पीछा करने उतरी निर्धारित 10 ओवरों में 101 रन ही बना सकी सेवा 7 रन से हार का सामना करना पड़ा।

माघ मेले के प्रवेश मार्ग पर बह दूषित पानी

झूंसी। माघ मेला क्षेत्र में रेलवे ब्रिज एवं गंगोली शिवाला के बीच स्नान मार्ग पर लगातार दूषित जल बहने एवं जल जमाव से मकर संक्रांति पर्व पर स्नान करने आ रहे स्नानार्थियों को दिक्कत का सामना करना पड़ रहा है। झूंसी क्षेत्र की ओर से मेले में प्रवेश मार्ग पर काफी दिनों से एक आश्रम का गंदा पानी बह रहा है। इसकी वजह से मेला में प्रवेश करने वाले श्रद्धालुओं को कीचड़युक्त रास्ते से गुजरना पड़ रहा है। पैदल आवागमन कर रहे कई श्रद्धालु कीचड़ से बचने के लिए सड़क के किनारे से गुजरते समय फिसल कर नाली में भी गिर गए। मेला प्रशासन की इस दुर्व्यवस्था पर श्रद्धालुओं ने नाराजगी जताई है।

स्वास्थ्य शिविर में हुआ निःशुल्क दवा का वितरण

फूलपुर। गरीबों का स्वास्थ्य परीक्षण कर उनके मुकम्मल उपचार हेतु रविवार को करीम फाउंडेशन द्वारा कनौजा खुर्द गांव में निःशुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। मोहम्मद वासिल के दरवाजे पर आयोजित चिकित्सा शिविर में डॉक्टर एम०एस०सिद्दीकी व डॉक्टर मोहम्मद गुफरान ने सैकड़ों ग्रामीणों की स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का परिक्षण कर उन्हें उचित परामर्श दिया साथ ही सैकड़ों मरीजों को निःशुल्क दवा भी वितरित किया । इस मौके पर मोहम्मद वासिल , कमरुद्दीन रेहान , आफताब , वैस , मोनीश फरीद , फरहत मसूद , शहरोज , ईशान ,मोहसिन लालमणि यादव , दूधनाथ यादव राम अचल , संतोष के साथ ही सैकड़ों की संख्या में ग्रामीण मौजूद रहे।

शिव मंदिर पर सुंदर काण्ड एवं भंडारे का हुआ आयोजन

करछना। विकास खंड करछना परिसर में सोमवार को ब्लाकेश्वर शिव मंदिर पर प्रधान संघ एवं ब्लाक कर्मियों की ओर से वार्षिकोत्सव समारोह का आयोजन किया गया जिसमें बड़ी संख्या में प्रधानों क्षेत्र पंचायत सदस्यों एवं भक्त जनों ने मंदिर में सुंदर काण्ड का पाठ में शामिल होकर रुद्राभिषेक तत्पश्चात राम जानकी सेवा केंद्र द्वारा भजन कीर्तन की छठा बिखेरी गई जिसमें बड़ी संख्या में भक्तजनों ने भाग लेकर मंदिर प्रांगण में पूजा पाठ रुद्राभिषेक आरती भजन कीर्तन के साथ प्रसाद वितरण का ग्रहण किया तथा प्रधान संघ करछना की ओर से आयोजित बाटी चोखा का भोज प्रसाद भी ग्रहण किया इस मौके पर ब्लाक प्रमुख प्रतिनिधि कमलेश द्विवेदी, जिलाध्यक्ष कमल मिश्रा, संघ के अध्यक्ष अवतार किशन सिह,सुरेश पाण्डेय आशीष पाण्डेय.विनय कुमार ,शिव गणेश, प्रधान सोनाई,राज कुमार पटेल,धर्मराज सिह पटेल, संदीप कुमार, चंद्र प्रकाश तिवारी,बडे लाल,, मनरेगा प्रभारी मनीष शुक्ला, आवास बाबू ब्रिजेश द्विवेदी,एडिओ पंचायत विवेक कुमार मिश्रा, एडिओ समाज कल्याण विभाग रवि सिह.हिमाशू मिश्रा,बृजेश मौर्या धीतेश तिवारी,वीरू सिह,परमानन्द सहित कई प्रधान और प्रतिनिधि मौजूद रहे।

ग्राम प्रधान ने किया ग्रामीणों की शिकायत पर निरीक्षण, दो अध्यापक अनुपस्थित

अखंड भारत संदेश

पसना। कोराब ब्लॉक के ग्राम पंचायत अल्हवा में तैनात निरंतर अध्यापकों की अनुपस्थिति के चलते छात्रों का भविष्य चौपट हो गया है,अब उक्त विद्यालय में नाम लिखवा चुके बच्चों का नाम अभिभावक लोग कटवाना चाहते हैं,और अगल बगल के विद्यालयों में नाम लिखवाना चाहते हैं। ग्राम प्रधान ने ग्रामीणों की शिकायत पे सोलह जनवरी को ग्यारह बजे दिन निरीक्षण किया। ग्राम प्रधान अल्हवा अहद अहमद सिद्दीकी उर्फ शहजादे ने विद्यालय के निरीक्षण किया तो तैनात दो अध्यापक हमेशा की तरह फिर अनुपस्थित मिले। शिक्षा मित्र राम बहादुर कोल ने बताया कि दोनो अध्यापक गण माघ मेला में ड्यूटी लगवा लिया हैं। इस कारण सारा जिम्मा मेरे ऊपर है वही निभा रहा हूं। दर असल इंचार्ज अध्यापक आए दिन कभी कोरोना ड्यूटी तो कभी अन्य कार्यक्रमों में ड्यूटी बता कर तो कभी आकस्मिक अवकाश तो कभी बीमारी आदि के बहाने नदारद रहते हैं। किंतु माह में वेतन लगवाने के लिए जरूर आ जाते हैं। ग्राम प्रधान ने बताया कि दो साल से निरंतर शिकायत विभागीय अफसरों तक कर चुका हूं किंतु यह विभाग बिलकुल मूक दर्शक बन गया है। चर्चा है कि ग्राम प्रधान जब शिकायत करता है या निरीक्षण करता है तो उक्त अध्यापक जिले के किसी न किसी पार्टी के नेता का फोन प्रधान के पास कराता है कि कोई कार्यवाही मत कराइए मेरे ये रिश्तेदार हैं,या मित्र हैं,या बहुत खास हैं। किंतु किसी नेता या अधिकारी ने उक्त अध्यापकों की ड्यूटी प्रयागराज नगर के नजदीक नहीं करा पा रहा है। किंतु ग्राम प्रधान पर दबाव बनाया जाता है और गांव वाले कहते फिरते हैं कि प्रधान अध्यापकों से मिले हैं। ग्राम प्रधान की बातों पर गौर करें तो शिक्षा अधिकारियों से कई बार कहा गया कि को प्रतिदिन विद्यालय आने जाने वाले अध्यापक हैं उन्हे अल्हवा में नियुक्त कर दिया जाय। किंतु किसी ने ध्यान नहीं दिया। इस संबंध में जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी प्रयागराज के फोन पर संपर्क कर कार्यवाही किए जाने हेतु वार्ता करने के लिए प्रधान ने प्रयास किया किंतु फोन नहीं उठा।

प्रधान संघ चाका अध्यक्ष नीलम पथिक ने 6 सूत्रीय मांग पत्र बीडीओ को सौंपा

अखंड भारत संदेश

करछना। विकास खण्ड चाका के प्रधानो ने संघ के बैनर तले संघ की अध्यक्ष नीलम पथिक की अगुवाई में सोमवार को संगठन के पदाधिकारियो ने बीडीओ देव कुमार को प्रधानमंत्री को सम्बोधित 6 सूत्रीय एक ज्ञापन सौपा, जिनमे अधिकाश गावो मे नेटवर्क की समस्या के चलते एप के माध्यम से मजदूरी की उपस्थिति अकित नही हो पा रही है, ग्रामीण विकास विभाग द्वारा बीते दिनो दिए आदेश को वापस लिया जाए,मनरेगा की मजदूरी 213 की जगह चार सौ रुपए किया जाए राज्य वित्त आयोग प्रशासनिक सुधार आयोग की समस्त प्रमुख सिफारसो को पदेश मे लागू किया जाए,प्रधानो क्षेत्र पचायत सदस्यो और जिला पचायत सदस्यो को सुरक्षा हेतु शस्त्र लाइसेस मे वरीयता दी जाए,डाटा एटी आपरेटर शौचालय केयर टेकर और प्रधान के मानदेय की राज्य सरकार द्वारा अलगह से करने का वादा तत्काल अमल मे लिया जाए अस्थाई गौशाला की धनराशि सहित कई मांगो को लेकर सघ ने ज्ञापन सौपा।संघ के अध्यक्ष अवतार किशन सिंह,सुरेश पाण्डेय आशीष पाण्डेय.विनय कुमार, शिव गणेश पटेल, संदीप कुमार, चंद्र प्रकाश तिवारी,बडे लाल, मिथिलेश कुमार,राज कुमार पटेल, धर्मराज सिह पटेल बनवारी लाल पटेल,रवि सिह.हिमाशू मिश्रा,बृजेश मौर्या धीतेश तिवारी,वीरू सिंह,परमानन्द सहित कई प्रधान और प्रतिनिधि मौजूद रहे।

प्रधान संघ करछना ने 6 सूत्रीय मांग पत्र बीडीओ को सौंपा

करछना। विकास खण्ड करछना के प्रधानो ने सघ के बैनर तले सोमवार को संगठन के पदाधिकारियो ने बीडीओ देव कुमार को प्रधानमंत्री को सम्बोधित 6 सूत्रीय एक ज्ञापन सौपा, जिनमे अधिकाश गावो मे नेटवर्क की समस्या के चलते एप के माध्यम से मजदूरी की उपस्थिति अकित नही हो पा रही है, ग्रामीण विकास विभाग द्वारा बीते दिनो दिए आदेश को वापस लिया जाए,मनरेगा की मजदूरी 213 की जगह चार सौ रुपए किया जाए राज्य वित्त आयोग प्रशासनिक सुधार आयोग की समस्त प्रमुख सिफारसो को पदेश मे लागू किया जाए,प्रधानो क्षेत्र पचायत सदस्यो और जिला पचायत सदस्यो को सुरक्षा हेतु शस्त्र लाइसेस मे वरीयता दी जाए,डाटा एटी आपरेटर शौचालय केयर टेकर और प्रधान के मानदेय की राज्य सरकार द्वारा अलगह से करने का वादा तत्काल अमल मे लिया जाए अस्थाई गौशाला की धनराशि सहित कई मांगो को लेकर सघ ने ज्ञापन सौपा।

पुआल खाकर ठंड में गलकर मर रहे गोवंश

किहुनी खुर्द एवं महुली गौशाला में नोच कर खा रहे कुत्ते और कौवे

अखंड भारत संदेश

लेडियारी। योगी सरकार की सबसे महत्वपूर्ण योजनाओं में ग्रामपंचायत में गो वंश आश्रय स्थल की स्थापना की गई थी` लेकिन ग्राम प्रधान एवं सचिव शासन की मंशा पर पानी फेरा जा रहा है` अधिकारियों के लाख कोशिश के बावजूद ब्लाक कोरांव के ग्राम पंचायत किहुनी खुर्द एवं मेजा ब्लाक के महुली कलां गो शालाओं की हालत में कोई सुधार नहीं हो रहा है।पशुओं को केवल पुआल दिया जा रहा हैजिससे पशु ठंड से गलकर मर रहे हैं और कुत्ते, कौए नोच कर खा रहे हैं` शुक्रवार को विकास खंड कोरांव के किहुनी खुर्द एवं उससे सटे ग्राम पंचायत महुली कलां गांव में स्थित गो शालाओं को लेकर क्षेत्रीय लोगों में काफी आक्रोश एवं गुस्सा है। उक्त गो वंश आश्रय स्थल में भूषा पशुओं को भूषा नहीं दिया जाता है केवल पुआल और पुआल की कुटी खिलाई जा रही है। उक्त गो शालाओं की जमीनी हकीकत देख हर किसी के चेहरे पर व्यवस्था के प्रति काफी आक्रोश देखा गया। क्षेत्रीय लोगों एवं ग्राम वासियों ने उक्त प्रधानोंऔर सरकारी व्यवस्था के बिपरीत किए गए इंतजाम से काफी नाराजगी व्यक्त किया है`किहुनी खुर्द ग्राम पंचायत का गोपालकों ने बताया कि हमारे यहा छह पशु अब तक मर चुके हैं जिसका इलाज नहीं कराया गयो न ही भूषा की व्यवस्था की गई है। उक्त गो वंश आश्रय स्थलों में पशुओं के उपचार व चिकित्सा की कोई व्यवस्था नहीं है` इतना ही नहीं पशुओं की देखभाल करने वाला भी कोई नहीं रहता है।जिसके कारण सूनसान पाकर पशुओं को कुत्ते और कौएं नोच-नोचकर खा रहे है। ग्रामीणों की माने तो पशुओं को चारे के नाम पर केवल पुआल के अलावा चूनी, चोकर ,भूसा , कभी नहीं डाला जाता है` उन्हें पानी पिलाने वाला भी कोई नहीं रहता है। गो वंश आश्रय स्थल की जमीन पर पड़े बीमार पशु को कौए और कुत्ते नोच-नोचकर खा रहे थे` जब ग्रामीण पहुंचे तो कुत्ता भाग गया।

महिलाओं ने घेरकर 112 यूपी पुलिस से आरोपियों को छुड़ाया

घूरपुर। क्षेत्र के चक सारीपुर गांव में विवाद की शिकायत पर पहुंची 112 यूपी पुलिस ने आरोपितों को पकड़ गाड़ी में बैठाया तब तक आरोपियों के घर की महिलाओं ने घेर कर पुलिस कर्मियों से आरोपियों को मुक्त करा लिया। जिसका एक वीडियो भी शोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। घूरपुर थाना क्षेत्र के चकसारीपुर गांव में दो पक्षो में विवाद हो रहा था। जिसकी सूचना यूपी डायल 112 को दी गई । जिस पर पहुंची पुलिस ने दो आरोपियों को पकड़ थाने चलने के लिए कहा और गाड़ी पर बैठा लिया । इसी बीच उस पक्ष की महिलाओं ने पुलिस की गाड़ी को घेरकर गाड़ी पर बैठाए गए आरोपियों को पुलिस से छुड़ा लिया । बताया गया उक्त आरोपी के खिलाफ कोर्ट से गैर जमानती वारंट भी जारी है।

एक अच्छे नागरिक बनने के लिए महिलाओं का सहयोग जरूरी : प्रवीण कुमार सिंह

सोरांव। राष्ट्रीय हिंदू स्वंम सेवक संघ के चयन समिति के अध्यक्ष अभय प्रताप सिंह ने जिला कार्यालय टैगोर टाउन प्रयागराज में एक बैठक किए। जिसमें संघ से जुड़े सभी कार्यकर्ता व पदाधिकारियों की सहमति से संघ के जिम्मेदार कार्यकर्ता प्रवीण कुमार सिंह को जिला प्रयागराज का जिला अध्यक्ष नियुक्त किया गया।साथ ही हेमंत कुमार को जिला प्रभारी व नितेश त्रिपाठी को जिला विस्तारक एवं जीतलाल को जिला सह विस्तारक के रूप में मनोनीत किया गया है` जिसका संघ की तरफ से सभी को बधाई व आशीर्वाद दिया गया। वहीं नवनियुक्त अध्यक्ष प्रवीण कुमार संग सभी नियुक्त लोगों ने अपने अधिकार व दायित्व को ईमानदारी से निर्वाहन करने की बात कहे तथा अध्यक्ष द्वारा यह भी कहा गया कि प्रयागराज जिले में महिलाओं को भी संघ से जोड़ा जाएगा। और संघ की उपयोगिता को भी घर घर जाकर बताया जाएगा। तथा देश हित में महिलाओं की भूमिका के लिए भी प्रेरित किया जाएगा। जिससे देश हित व संघ हित में कंधे से कंधा मिलाकर कार्य कर सकें। इतना ही नहीं जरूरत मंदों, असहायों को स्वरोजगार भी मुहैया कराया जाएगा। इतना हीं नहीं सदैव सेवा भाव से समाज में लोगों की आवश्यकता के अनुसार मदद की जाएगी। इस मौके पर अतुल कुमार श्रीवास्तव, राजेश कुमार एडवोकेट, प्रभात तिवारी, शशांक शुक्ला, सुनील श्रीवास्तव, वरुण कुमार, शिवम तिवारी संग सैकड़ों पदाधिकारी व कार्यकर्ता मौजूद रहे।

खेलकूद प्रतियोगिता से शारीरिक मानसिक विकास होता है : सुरेंद्र चौधरी एमएलसी

प्रतापपुर। एमपीएल सीजन 3, टी-20 प्रीमियर लीग मैच का उद्घाटन मुख्य अतिथि विधान परिषद सदस्य सुरेंद्र चौधरी द्वारा मियांपुर खेल मैदान में किया गया।बैट बॉल खेलकर क्रिकेट का शुभारंभ करने के बाद खिलाड़ियों से परिचय किया तत्पश्चात उपस्थित क्षेत्रवासियों एवं खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन करते हुए सुरेंद्र चौधरी ने कहा कि खेलकूद प्रतियोगिता से हमारा शारीरिक मानसिक विकास होता है इससे भाईचारा बढ़ता है एवं वैचारिक सैद्धांतिक विकास होता है सभी खिलाड़ियों को पूरी ऊर्जा एवं ईमानदारी से खेलकूद प्रतियोगिता में भाग लेते हुए अपने परिवार क्षेत्र प्रदेश राष्ट्र का नाम रोशन करना चाहिए तथा पढ़ाई खेलकूद एवं अन्य जरूरी कार्यों मे संतुलन बनाये रखना बहुत जरूरी है। आयोजकों ने मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथियों का स्वागत स्मृति चिन्ह देकर एवं माल्यार्पण करके आभार व्यक्त किया।

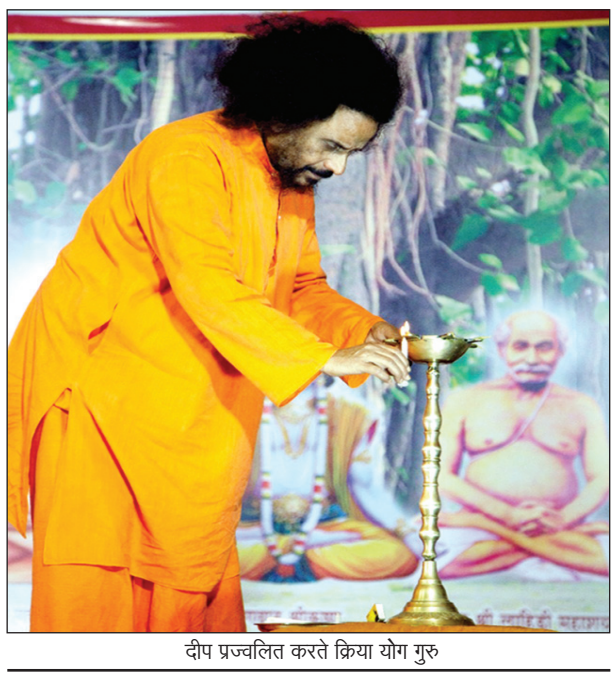

दीप प्रज्वलित करते क्रिया योग गुरु

साधकों को क्रियायोग की शिक्षा देते स्वामी श्री योगी सत्यम

माघ मेला शिविर पहुंचे क्रियायोग गुरु, दीप प्रज्वलित कर शिविर का किया शुभारंभ, उपस्थित रहे विदेशी साधक

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। माघ मेला क्षेत्र में सोमवार को त्रिवेणी रोड के गंगातट पर स्थित क्रियायोग शिविर में गुरूदेव स्वामी श्री योगी सत्यम् द्वारा द्वीप प्रज्जवलित कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया गया। क्रियायोग पर प्रकाश ड़ालते हुए स्वामी जी ने स्पष्ट किया कि मानव का लक्ष्य यह अनुभव करना है कि ब्रह्माण्ड की सभी रचनाऐं आपस में इस प्रकार जुड़ी है कि उनके बीच दूरी शून्य है। इस स्थिति को योग कहते है। धर्म एवं धार्मिकता वह व्यवस्था है, जिसमें मानव योग की अवस्था प्राप्त करने में सफल हो जाता है। धर्म शब्द धृ एवं म के सहयोग से बना है। धृ का अभिप्राय धारण करना व म का अभिप्राय सूक्ष्मतम व विशालतम अस्तित्व की संयुक्ता अवस्था। धर्ममय होते ही पूरा अस्तित्व अंहिसामय हो जाता है। इस स्थिति में सभी प्रकार के दुःख स्वतः दूर हो जाते है। योग की पूर्णता में स्थित ऋषि-मुनियों व अवतारों ने अनुसंधान किया है कि सामान्य रूप से जीवन यापन करने पर योग अवस्था को प्राप्त करने पर 10 लाख वर्ष की व्याधि-रहित समय की आवश्यकता होती हे। क्रियायोग के अभ्यास से 10 लाख वर्ष की लम्बी अवधि घटकर कुछ वर्षों में सिमट जाती है। जब मनुष्य पूर्ण भक्ति के साथ अभ्यास करता है तो भक्ति की तीव्रता के अनुसार योग अवस्था 3, 6, 12, 24, 48 व अधिकतम् 96 वर्ष के अन्दर प्राप्त कर लेता है। उक्त विचार क्रियायोग अभ्यास के उपरान्त व्यक्त किये गये।कार्यक्रम में भारत के प्रत्येक प्रदेश के साथ-साथ अमेरिका, कनाडा, यूरोप, ब्राजील, पुर्तगाल, नेपाल, सिंगापुर, स्विट्जर लैंड, आदि देशों से साधकों ने भाग लिया।

किसान सम्मान निधि : 216347 किसानों ने नहीं करवाई ई-केवाईसी

प्रयागराज। केवाईसी नहीं करवाने वाले हजारों किसानों को इस बार किसान सम्मान निधि का भुगतान नहीं किया जा सकेगा। यह जानकारी देते हुए उप कृषि निदेशक विनोद कुमार ने बताया कि जिले में प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना के कुल लाभार्थी 652905 हैं, जिसमें से 13वीं किश्त का भुगतान मात्र 431708 किसानों को ही मिल पाएगा। उन्होंने बताया कि इसका बड़ा कारण यह है कि 216347 किसानों ने अभी तक ई-केवाईसी नहीं कराई है। इसलिए उन्हें 13वीं किश्त से वंचित रहना पड़ेगा। यदि 31 जनवरी से पहले अपनी ई-केवाईसी किसी कामन सर्विस सेंटर पर जाकर बायोमैट्रिक विधि से अथवा स्वयं आनलाइन करा लेते हैं तो उन्हे सम्मान निधि का भुगतान किया जाएगा।उप कृषि निदेशक ने बताया कि इसमें तहसील सदर में 8413, बारा में 13411, हंडिया में 45150, करछना में 41458, कोरांव में 13075, मेजा में 23870 और सोरांव के 44592 किसान शामिल हैं। इसी प्रकार 84755 किसान ऐसे हैं, जिनका आधार कार्ड उनके बैंक खाते से एनपीसीआई पर लिंक नहीं है, जिसे वे स्वयं नहीं कर सकते हैं, इसके लिए उन्हें अपने बैंक शाखा से संपर्क करना पड़ेगा। जनपद में 63989 किसान ऐसे हैं, जिनकी भूमि का डिजिटलाइजेशन अभी पीएम किसान पोर्टल पर नहीं हो पाया है। यह किसान यदि अपनी खतौनी और हिस्सा प्रमाणपत्र उपलब्ध करा देते हैं, तो इनकी भूलेख मैपिंग कराकर इन्हें भी लाभांवित किया जा सकता है। केवल ऐसे किसानों को ही 13वीं किश्त दी जाएगी, जिनके भूलेख, ई-केवाईसी, और एनपीसीआई पर आधार से लिंकिंग पूर्ण है।

कैडेटों ने निकाली रैली यातायात एवं परिवहन विभाग की ओर से की गई पहल

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। आए दिन सड़क दुर्घटना में कमी लाने के उद्देश्य से सोवार को शहर में यातायात जागरूकता रैली निकाली गई। रैली राजकीय इंटर कॉलेज से रवाना हुई। यह मेडिकल कॉलेज चौराहा होते हुए शहर के प्रमुख चौराहों तक पहुंची। इसमें एनसीसी के कैडेट, एनएसएस के स्वयंसेवक, स्काउट गाइड, रोवर्स रेंजर के छात्र व छात्राएं तथा यातायात विभाग से जुड़े अधिकारी व कर्मचारी शामिल हुए। लोग हाथों में तख्तियां और बैनर लेकर चले थे। राजकीय इंटर कॉलेज के प्रधानाचार्य बीके सिंह व सहाकय संभागीय परिवहन अधिकारी (प्रवर्तन तृतीय) सुरेश कुमार मौर्य ने हरी झंडी दिखाकर रैली को रवाना किया।

गाड़ी चलाते समय न करें मोबाइल पर बात

शहर में लोगों को जागरूक करते हुए पैदल मार्च करते हुए चल रहे छात्रों ने स्लोगन के माध्यम से बताया कि दो पहिया वाहन चालक हेलमेट जरूर लगाएं। चार पहिया वाहन चालक सीट बेल्ट लगा कर ही वाहन चलाएं। नशे की हाल में वाहन न चलाएं, रेड सिग्नल को पार न करें, लेन ड्राइविंग के नियमों का पालन करें, तेज रफ्तार से वाहन न चलाएं, वाहन चलाते समय मोबाइल का प्रयोग न करें, स्लोगन से पैदल यात्रियों को सड़क सुरक्षा के नियमों को पालने करने के लिए जागरूक किया गया। इसमें यात्रीकर अधिकारी सुरेंद्र सिंह, विक्रांत सिंह, राम सागर, एनसीसी के कैप्टन उपेन्द्र नाथ सिंह, प्रभाकर त्रिपाठी एवं अन्य लोग रहे।

कोरोना काल में स्कूलों की 15 फीसदी फीस होगी माफ

इलाहाबाद हाईकोर्ट ने प्रदेस भर के स्कूलों को लेकर जारी किया निर्देश :

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने कोरोना काल में स्कूलों की 15 फीसदी फीस होगी माफ,हाईकोर्ट ने प्रदेसभर के स्कूलों को लेकर जारी किया निर्देश,सत्र 2020- 21 के लिए हाईकोर्ट ने जारी किया आदेश,कोर्ट ने कहा है कि सत्र 2020- 21 में ली गई पूरी फीस में 15 फीसदी फीस अगले सत्र में एडजस्ट करना होगा,स्कूल छोड़ चुके छात्रों को 15 फीसदी फीस वापस करनी होगी,दर्जनों याचीयो ने कोविड काल की फीस माफ करने की मांग की थी।

दो पहिया चालकों को भी बाई पास मार्ग से होकर पुराने पुल में मिलेगा प्रवेश

अखंड भारत संदेश

नैनी। पुराने पुल में अब दो पहिया वाहनों को भी चार पहिया वाहनों की तरह फूलमंडी होते हुए नीचे से होकर एग्रीकल्चर साइड से अंदर जाना पड़ेगा। शुक्रवार की रात प्रशासन की ओर से गाडर लगाकर रास्ते को जाम कर दिया गया। सुबह से बड़ी संख्या में दो पहिया चालक पुल पर पहुंचकर लौट जा रहे हैं। मालूम हो कि नए यमुना पुल के निर्माण के साथ ही पुराने पुल में चार पहिया वाहनों के घुसने के लिए फूलमंडी से यीशु दरबार होते हुए रीवा मार्ग को जोड़ने के लिए बाई पास सड़क बनाई गई थी, जबकि दो पहिया वाहन के लिए खड़ा लोहे का गाडर लगाकर सीधा घुसने की व्यवस्था की गई थी। शुक्रवार की रात अचानक प्रशासन की ओर से उक्त रास्ते को पूरी तरह से बंद कर दिया गया, जिससे दो पहिया चालकों के लिए मुश्किलें खड़ी

हो गई। बाई पास मार्ग काफी जर्जर है। साथ ही रात में अंधेरा होने की वजह हम आपको बताते चलें कि नैनी पुराने पुल से इसलिए लोग जाते थे की जिसको कोठा परचा जाना हो चौक जाना हो बड़ी स्टेशन जाना हो पुराने शहर की तरफ जाना हो जिसको नैनी पुराने पुल से पास पड़ता था।

नैनी जीआरपी चोरी के मोबाइल के साथ युवक गिरफ्तार

नैनी। मोबाइल चोरी की बढ़ रही वारदात के मद्देनजर नैनी जीआरपी नैनी द्वारा चलाए जा रहे अभियान के तहत रविवार को मुखबिर की सूचना पर नैनी जीआरपी इंचार्ज विरेन्द्र प्रसाद सरोज अपने हमराहियों के साथ स्टेशन परिसर मे चेंकिंग कर रहे थे। उसी दौरान एक युवक नैनी स्टेशन प्लेटफार्म नम्बर तीन के पूर्वी छोर पर खड़ा था। जीआरपी नैनी ने उसे पकड़ कर पूछताछ किया। जामातलाशी के दौरान युवक के पास दो चोरी का मोबाइल बरामद हुआ। जीआरपी के अनुसार गिरफ्तार युवक बारा पिपराव निवासी नीरज बिंद पुत्र छेदी बिंद को गिरफ्तार कर न्यायालय मे पेश किया। जीआरपी के अनुसार गिरफ्तार युवक ने बताया कि ट्रेन मे यात्रा करने वाले यात्री का मोबाइल व पैसा चोरी करता था।

बाइक की भिड़ंत, सड़क पर गिरे युवक पर चढ़ा ट्रैक्टर, मौत

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। कोरांव ब्लॉक मुख्यालय के पास ट्रैक्टर एजेंसी के सामने सोमवार शाम दो बाइक में भिड़ंत हो गई। दुर्घटना में सड़क पर गिरे एक बाइक सवार की जांघ पर पीछे से आ रहा ट्रैक्टर चढ़ गया। इसमें वह गंभीर घायल हो गया। उसे एसआरएन अस्पताल ले जाया जा रहा था, लेकिन रास्ते में उसकी मौत हो गई। मृतक सड़क निर्माण कर रही एक कंस्ट्रक्शन कंपनी में कर्मचारी था। घटना के बाद दूसरा बाइक सवार और ट्रैक्टर चालक मौके से फरार हो गए।कौंधियारा थाना क्षेत्र के देवरा दीवान का पूरा निवासी अखिलेश तिवारी (मोनू) (35) जेके कंस्ट्रक्शन कंपनी में कर्मचारी था। कंपनी कोहड़ार से ड्रमंडगंज मार्ग का निर्माण कर रही है। इसके ठेकेदार का अखिलेश करीबी था। स्थानीय लोगों ने बताया गया कि सड़क चौड़ीकरण को लेकर मार्ग के बगल पेड़ों की कटाई की जा रही थी। अखिलेश उसे देखने आया था। यहां से वह कोरांव बाजार चाय पीने गया। चाय पीकर वह वापस लौट रहा था।ब्लॉक मुख्यालय के बाद उसकी बाइक में सामने से आ रही मोटरसाइकिल ने टक्कर मार दी। इसके बाद अखिलेश अनियंत्रित होकर सड़क पर जा गिरे। इस दौरान ईंट लदा ट्रैक्टर उसकी जांघ में चढ़ गया। दुर्घटना में वह गंभीर रूप से घायल हो गया। राहगीर उसे सीएचसी कोरांव ले गए। हालत गंभीर होने पर चिकित्सकों ने उसे एसआरएन अस्पताल रेफर कर दिया। स्वास्थ्यकर्मी उसे अस्पताल ले जा रहे थे, रास्ते में ही उसकी मौत हो गई। इंस्पेक्टर कोरांव धीरेंद्र सिंह ने बताया कि परिजनों को घटना की जानकारी दे दी गई है। ट्रैक्टर और बाइक सवार घटना के बाद भाग गए।

कार ने बाइक में मारी टक्कर बाइक में लगी आग

झूंसी। थाना क्षेत्र के अंदावा जीटी रोड पर कार और बाइक के आमने-सामने की टक्कर में बाइक में आग लग गई। इससे बाइक पूरी तरह जलकर राख हो गई। बाइक सवार गंभीर रूप से घायल हुआ जिसे एसआरएन हॉस्पिटल में भर्ती कराया गया। कटका ओवर ब्रिज पर करीब दो माह से एक लेन पर नया ओवर ब्रिज का काम चल रहा है। जिससे दूसरी लाइन से ही आवागमन जारी है। सोमवार की शाम एक बाइक सवार झूंसी से अंदावा की ओर जा रहा था। उसी दौरान सामने से आ रही कार ने उसे टक्कर मार दी। टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि बाइक करीब सौ मीटर सड़क पर घिसटती चली गई। घर्षण से उस में आग लग गई। कुछ ही देर में बाइक जलकर राख हो गई जबकि बाइक सवार गंभीर रूप से घायल हो गया। सूचना पाते ही मौके पर पहुंची पुलिस उसे आनन-फानन एसआरएन अस्पताल ले गई और भर्ती करा दिया।

बस अड्डे पर दिनदहाड़े चाकू की नोंक पर महिला कंडक्टर से लूट

प्रयागराज। सिविल लाइंस में रोडवेज बस अड्डे पर सनसनीखेज वारदात हुई। चाकू की नोंक पर महिला कंडक्टर रंजना देवी (35) से 3500 नकद, टिकट मशीन (ईटीआईएम), मोबाइल समेत अन्य दस्तावेजों से भरा बैग लूटकर चार बदमाश भाग निकले। पीड़ित की ओर से तहरीर दी गई। उधर सिविल लाइंस पुलिस घटना को संदिग्ध मान रही है। पीड़िता का आरोप है कि थाने जाने पर उससे कहा गया कि लूट की जगह चोरी की तहरीर लेकर आओ। मूल रूप से कानपुर के सजेती थाना स्थित सवाईपुर धमराबुजुर्ग की रहने वाली रंजना वर्मा पत्नी शिवकुमार रोडवेज में परिचालक है। वह लगभग छह साल से लखनऊ में तैनात हैं। रविवार दोपहर 1.30 बजे के करीब चारबाग डिपो की बस लेकर वह सिविल लाइंस बस अड्डे पर पहुंचीं। इसके बाद ड्राइवर रामकिशोर (निवासी प्रतापगढ़) नवाब यूसुफ रोड साइड में बस खड़ी कर चाय पीने चला गया। जबकि, कंडक्टर रंजना बस में बैठी रही।रंजना ने बताया कि करीब 3.30 बजे चार युवक आए और पूछा कि बस कहां जाएगी। उसके यह कहने पर कि बस लखनऊ जाएगी तो चारों भीतर आकर बैठ गए। कहा कि उन्हें रायबरेली तक जाना है। पांच मिनट ही बीते होंगे कि चारों ने उसे घेर लिया और बैग छीनने लगे। विरोध करने पर चाकू निकाल लिया और बैग छीन लिया। इसके बाद बदमाश बस से उतरकर नवाब यूसुफ रोड की ओर भाग निकले। जाने से पहले धमकी दी कि शोर मचाया तो जान से मार देंगे। बदमाशों के भागने के बाद कंडक्टर ने शोर मचाकर ड्राइवर को बुलाया और घटना की जानकारी दी। ड्राइवर ने पहले अपने फोन से 112 नंबर पर कॉल की। कॉल कनेक्ट न होने पर उसने कार्यालय में जानकारी दी तो रोडवेज अफसर आ गए। इसके बाद सूचना पर पुलिस भी पहुंच गई। दिनदहाड़े घटना से वहां सनसनी फैल गई। कंडक्टर से पूछताछ के बाद पुलिस तलाश में लगी रही, लेकिन बदमाशों का कोई सुराग नहीं मिला। बाद में सिविल लाइंस इंस्पेक्टर वीरेंद्र सिंह यादव ने घटना से इंकार किया। कहा कि महिला कंडक्टर झूठी शिकायत कर रही है। उसने बैग कहीं गिरा दिया है या उससे बैग गुम हो गया है। इस मामले में देर रात तक एफआईआर नहीं दर्ज हो सकी थी।

पंचायत भवन में गांजा पीने से मना करने पर युवक को मार पीटा मुकदमा दर्ज

मऊआइमा। पंचायत भवन में गांजा पीने से मना करने पर एक युवक को जमकर पीटा गया और जान से मारने की धमकी भी दी गई। युवक ने तीन नामजद आधा दर्जन अज्ञातों के खिलाफ मुकदमा दर्ज करा दिया है। मऊआइमा थाना क्षेत्र के ग्राम सकरामऊ निवासी जगतबहादुर पुत्र जवाहर लाल का आरोप है कि वह कंबल वितरण कार्यक्रम से घर आ रहा था। आरोप है कि गांव के कतिपय लोग पंचायत भवन में गांजा पी रहे थे। मना करने उसे मारे पीटे और जान से मारने की धमकी भी दिए। जगत बहादुर ने मऊआइमा थाने में अनिल कुमार उर्फ बाई ,प्रभु ,शिवमूरत तथा आधा दर्जन अज्ञातों के खिलाफ मुकदमा दर्ज करा दिया है।

जिला अपराध निरोधक समिति सदस्यों ने पुलिस प्रशासन का किया सहयोग

अखंड भारत संदेश

नैनी। रविवार को मकर संक्रांति के स्नान पर्व पर जिला अपराध निरोधक समिति के सैकड़ो स्वयंसेवकों द्वारा सम्पूर्ण मेला क्षेत्र संगम नोज, गंगा घाटों,पालटून पुलों , हनुमान मंदिर, अरैल ,झूँसी बसअड्डों एवम रेलवे स्टेशनो पर आए हुए श्रद्धालुओं एवम स्नानार्थियों की मुस्तैदी से सेवा में लगे रहे। स्वयं सेवकों द्वारा मेले में दर्जनों भूले भटके लोगों को उनके परिजनों से मिलवाया एवम कुछ डूबते हुए स्नानार्थियों को जल पुलिस की मदद से बचाया । इसी क्रम में मोबाइल टीमें एक कुलदीपधर के नेतृत्व में विशाल श्रीवास्तव, प्रशांत सिंह, आदि अधिकारी गण पूरी मुस्तैदी के साथ

अपनी टीम को लेकर लगे रहे जिसमें श्री कुलदीप धर सर जी के निर्देशन पर पुलिस प्रशासन के साथ मिलकर अपनी सेवा देने में यूथ टीम प्रभारी मनीष विश्वकर्मा एवं उनके सदस्यगण लगे रहे जिसमें यूथ टीम सहयोगी बलराम मिश्रा, क्षेत्रीय कमेटी प्रभारी अभिषेक मिश्रा लक्ष्मीनारायण गौतम, सुजीत कुमार गौतम, मिथिलेश त्रिपाठी, शनि देव सिंह, विकास कुमार सिंह, गर्वित श्रीवास्तव, बबलू अली, आदि सदस्यगण सेवा में उपस्थित हैं।

कौशांबी के सांसद विनोद सोनकर को भांजे समेत गोली से उड़ाने की धमकी

मुकदमा दर्ज कर छानबीन में जुटी पुलिस

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। नवाबगंज में कौशाम्बी सांसद विनोद सोनकर को भांजे समेत गोली से उड़ाने की धमकी देने का मामला सामने आया है। भांजे आलोक प्रकाश का आरोप है कि तिलकोत्सव में जाने के दौरान यह घटना हुई। फिलहाल पुलिस ने नामजद मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। अल्लापुर के पूरा दलेल बचऊ निवासी आलोक प्रकाश पुत्र ओमप्रकाश सोनकर सांसद विनोद सोनकर के भांजे हैं। वह एचडीएफसी लाइफ में कार्यरत हैं।उन्होंने पुलिस को तहरीर देकर बताया है कि पिछले साल 27 नवंबर को उनकी कंपनी के ही पवन कुमार दुबे के नवाबगंज स्थित पैतृक आवास में तिलकोत्सव आयोजित था। इसमें शामिल होने के लिए वह भी गए थे। आरोप है कि वहां उदय प्रताप सिंह ने जातिसूचक शब्दों का प्रयोग करते हुए उन्हें गालियां दीं। इसके बाद धमकाते हुए कहा कि तुम्हें पांच राउंड व तुम्हारे मामा सांसद विनोद सोनकर को आठ राउंड गोली उतार दूंगा।यह भी कहा कि सारी नेतागिरी भी उतार दूंगा। आरोप यह भी है कि घटना के वक्त आरोपी नशे में था। आलोक ने पुलिस को यह भी बताया कि आरोपी एक हेल्थ केयर कंपनी में क्लस्टर हेड के पद पर कार्यरत है। काम का स्वभाव एक होने के कारण वह उससे ईष्या, प्रतिद्वंदिता रखता है। सहायक पुलिस आयुक्त सोरांव चिराग जैन ने बताया कि तहरीर के आधार पर मुकदमा दर्ज कर लिया गया है। जांच पड़ताल की जा रही है।

जन समस्याओ को लेकर विकास समिति की बैठक सम्पन्न

अखंड भारत संदेश

नैनी। अवंतिका विकास समिति के तत्वावधान में अवंतिका कॉलोनी नैनी के संभ्रांत नागरिकों की बैठक डी ब्लॉक स्थित प्रगति पार्क में संपन्न हुई। बैठक की अध्यक्षता मिथिलेश्वर प्रसाद मिश्रा एवं संचालन बद्री प्रसाद मिश्रा ने किया। बैठक के आयोजक संजीव गुप्ता ने बताया कि कालोनी के पार्कों के सुन्दरीकरण के आधे अधूरे कार्य को पूरा कराने, बुझी हुई स्ट्रीट लाइटो को जलवाने के साथ टाइमर लगाने, जलापूर्ति के जर्जर पाइपों को बदलवाने, माघमेला क्षेत्र को जाने वाले मुख्य मार्ग मे शुलभ कम्पलेक्स या शौचालय का निर्माण कराने व टूटी फूटी सड़को को बनवाने की जरूरत है। बैठक को संबोधित करते हुए समिति के संयोजक गजेंद्र प्रताप सिंह ने कहाकि जनता के धन से आराम फरमा रहे जनप्रतिनिधि एवं गरीबों के पैसों से सुखमय जीवन व्यतीत करने वाले अधिकारियों की उदासीनता का खामियाजा आम जनता को भुगतना पड़ रहा है। ऐसे मे कालोनी के नागरिक बर्दास्त नही कर सकते। बैठक में सर्वश्री नीलेश्वर प्रसाद मिश्रा, बी बी दुबे, राजेश पांडे, सुनील श्रीवास्तव, रजनीश कुमार श्रीवास्तव, दीपक मिश्रा, प्रदीप कुमार सिंह, सुभाष चंद्र अग्रवाल, विजय बहादुर श्रीवास्तव,अंकित त्रिपाठी, विकास दुबे, बलराम सिंह, राजेश सिंह, सुंदर लाल अग्रवाल, दिवाकर तिवारी, गिरीश मिश्रा, नागेश त्यागी, सुभाष चंद्र गुप्ता, एस एल विश्वकर्मा, नारायण सिंह, आशुतोष मिश्रा, राजेश्वर सिंह, आजम खान, सुनील साहनी, सुधाकर पांडे, अंजुम नाज, उषा किरण जैन, विशंभर सिंह यादव,शत्रुघ्न विश्वकर्मा, रघुनाथ प्रसाद केसरवानी, आदि ने भी विचार व्यक्त किये।

गाय की सेवा करना हमारी संस्कृति की पहचान-विपेन्द्र सिंह

फूलपुर। प्राचीन काल से ही गाय को माता की संज्ञा दी गई है। गौ माता की सेवा हमारी संस्कृति की भी परिचायक है। इसलिए गौ माता की सेवा करना एक पुनीत कार्य माना जाता है। उक्त बाते सोमवार को फूलपुर विकास खंड के सेहुवाडीह गांव में क्षेत्र पंचायत निधि से बनी विशाल कान्हा गौशाला का उद्घाटन करते हुए ब्लाक प्रमुख फूलपुर बिपेंद्र सिंह पटेल ने बतौर मुख्य अतिथि कही। उन्होंने कहा की प्रदेश की भाजपा सरकार ने गांव से लेकर शहर तक दर- दर भटक रहे मवेशियों के लिए कान्हा गौशालाओं का निर्माण करवाया है। जहां उनके खाने पीने के साथ ही उनकी समुचित देखभाल की ब्यापक ब्यवस्था की जाती है। प्रधान संघ अध्यक्ष दिलीप यादव ने कहा की हम सबको गौ माता की सेवा करनी चाहिए। भाजपा के आर्थिक प्रकोष्ठ के जिला संयोजक श्याम बाबू गुप्ता ने कहा कि पुराणों में भी गौ माता हमारी आराध्य और पूज्यनीय मानी गई हैं। इसके पूर्व खंड विकास अधिकारी फूलपुर हनुमान प्रसाद वर्मा और सहायक विकास अधिकारी पंचायत गुलाब चंद पांडेय सहित ब्लाक के अधिकारियों ने ब्लाक प्रमुख सहित मुख्य विकास अधिकारी सीपू गिरी को बुके भेंट कर स्वागत किया। मौके पर ब्लाक प्रमुख और मुख्य विकास अधिकारी ने गौ माता को हरा चारा खिलाकर उन्हे भरपेट चारा प्रतिदिन खिलाने की बात कही। इस अवसर पर जेई आर एस सचिच्दानंद पटेल ,जेई एम आई हौसला प्रसाद ,पशु चिकत्सा प्रभारी फूलपुर डाक्टर ए के सिंह,क्षेत्र पंचायत सदस्य आनंद सिंह,ग्राम पंचायत विकास अधिकारी अनिल कुमार मौर्य,अमित सिंह,रवि वर्मा ,अखिलेश यादव सहित बड़ी संख्या में ग्रामीण उपस्थित रहे।

विधायक अब्बास अंसारी के विवादित बयान देने के मामले में अंतिम सुनवाई मंगलवार को

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। बाहुबली मुख्तार अंसारी के बेटे अब्बास अंसारी के विवादित बयान के मामले में अंतिम सुनवाई मंगलवार को होगी। यह आदेश न्यायमूर्ति दिनेश कुमार सिंह ने अब्बास अंसारी की ओर से दाखिल याचिका पर सुनवाई करते हुए दिया है।मामले को सोमवार को सुनवाई के लिए सूचीबद्ध किया गया था। याची के अधिवक्ता उपेंद्र उपाध्याय की ओर से मंगलवार को बहस करने का अनुरोध किया गया। कोर्ट ने इसे स्वीकार करते हुए मंगलवार को तिथि तय कर दी। अब्बास अंसारी ने विधान सभा चुनाव में मऊ में आयोजित रैली में अधिकारियों से हिसाब-किताब करने का विवादित बयान दिया था। इस पर प्राथमिकी दर्ज कर कार्रवाई की गई। अब्बास ने प्राथमिकी को चुनौती देकर इसे रद्द करने की मांग की है।

अब्बास अंसारी ने क्या कहा

वायरल वीडियो के अनुसार इसमें सपा-सुभासपा गठबंधन के प्रत्याशी अब्बास अंसारी यह कहते नजर आ रहे हैं कि जिस नेता के साथ लाखों-करोड़ों बाहों का बल हो वह बाहुबली नहीं होगा तो कौन होगा। हम हैं, हमें इससे कोई गुरेज नहीं है। अगर मेरे लोगों की इज्जत, आन, बान, शान और आबरू पर कोई आंच डालने की कोशिश करेगा तो उस आंच को बुझाना हम जानते हैं। आज तक बुझाया है, आगे भी बुझाएंगे, हमें कोई रोक नहीं सकता। आगे कहा कि जिस दिन लखनऊ से आ रहा था उस दिन राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश भैया से मिला और लंबी बातचीत हुई। मैं उनसे कहकर आया हूं कि छह महीने तक किसी की ट्रांसफर पोस्टिंग नहीं होगी भइया। अब्बास ने आगे कहा, पहले जिन्होंने लोगों के कैरियर बर्बाद किए हैं। जिन्होंने जिनके ऊपर मुकदमे लगाए हैं, पहले उन अधिकारियों का हिसाब-किताब होगा।

हत्या का वांछित अभियुक्त किया गया गिरफ्तार

कोरांव। थाना कोरांव पुलिस ने कोरांव हत्या कांड में वांछित अभियुक्त को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। बता दें कि नागेंद्र पुत्र राम सहाय निवासी गजाधरपुर को मुकद्दमा अपराध संख्या 280/2022 धारा 147, 148, 149, 323, 302, आइपीसी,और धारा 34 में गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। गिरफ्तारी में थाना प्रभारी कोरांव धीरेंद्र सिंह एस आई सच्चिदानंद यादव सिपाही बजरंग बहादुर आदि ने की।

समरसता से ही भारतीय संस्कृत का हो सकता है संरक्षणः सांसद

समरसता भोज कवि सम्मेलन एवं सम्मान समारोह का किया गया आयोजन

अखंड भारत संदेश

लालगंज प्रतापगढ़। मकर संक्रांति के पर्व पर नगर में भाजपाइयों ने सम्मान समारोह एवं समरसता कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम का शुभारंभ बतौर मुख्य अतिथि भाजपा जिला अध्यक्ष हरिओम मिश्रा तथा विशिष्ट अतिथि सांसद संगम लाल गुप्ता ने मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण कर किया।समारोह में साहित्य साहित्य तथा पत्रकारिता के क्षेत्र में योगदान के लिए दर्जनभर प्रबुद्ध वर्ग से जुड़े लोगों का सम्मान भी किया गया।

समारोह को संबोधित करते हुए बीजेपी सांसद संगम लाल गुप्ता ने कहा कि भारतीय संस्कृत के संरक्षण में समरसता और सद्भाव ही मूल है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भारतीय संस्कृति का गौरव बढ़ाने के लिए भारतीय पर्वों को भी ऊंचाइयां प्रदान की है। कार्यक्रम में उन्होंने केंद्रीय तथा राज्य से जुड़े भाजपा की कल्याणकारी योजनाओं पर भी चर्चा की। बतौर मुख्य अतिथि भाजपा जिला अध्यक्ष हरिओम मिश्रा ने भी समरसता को ही विकास का मूल ठहराया। उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार के बनने से भारतीय संस्कृति को नई ऊर्जा मिली है। कार्यक्रम के संयोजक नगर पंचायत के नामित सभासद ज्ञानचंद्र मोदनवाल ने स्वागत भाषण में समरसता कार्यक्रम के उद्देश्य पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का संचालन साहित्यकार संतोष सिंह ने किया। वही कार्यक्रम को मंडल प्रभारी बृजेश चंद्र पांडे, मंडल अध्यक्ष राज कुमार वर्णवाल, अधिवक्ता राजेश तिवारी, नामित सभासद बृजेंद्र पांडे मंटू, मंडल महामंत्री राजेश मिश्रा, सांसद प्रतिनिधि विनोद मिश्रा बबलू ने भी संबोधित किया। कार्यक्रम के संयोजन में शशि प्रकाश यादव, भाजपा युवा मोर्चा मंडल अध्यक्ष नितेश द्विवेदी, युवा मोर्चा सोशल मीडिया प्रभारी रजत मोदनवाल का सराहनीय योगदान दिखा। आभार प्रदर्शन कार्यक्रम के संयोजक डॉ रामसमुझ मिश्र अकेला ने किया। वही कार्यक्रम में मौजूद साहित्यकार डॉ दुर्गा प्रसाद ओझा, शेख मुंशीरजा अनीश, सत्येंद्र सिंह सौम्य,फैय्याजअहमद परवाना, डॉ संतोष मिश्र ने भी समरसता तथा राष्ट्रीय सद्भावना पर आधारित काव्य पाठ से कार्यक्रम की शमा बांधी। इस मौके पर फैसल खान, पवन वर्मा, दीपक सिंह, ओमप्रकाश पांडे गुड्डू, मिथिलेश जायसवाल पप्पू, पवन वर्मा, दीपक सिंह, सभासद दिवाकर द्विवेदी, सीमा सरोज, अरुण गुप्ता, अधिवक्ता हेमंत पांडेय आदि मौजूद रहे।

रास्ता बंद होने से पटखौली वार्ड के लोगों ने किया विरोध प्रदर्शन, समस्या जानने पहुंचे सांसद

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। पटखौली वार्ड का रास्ता अवरुद्ध होने से सोमवार को लोगों ने विरोध प्रदर्षन किया जिसकी जानकारी होने पर सांसद संगम लाल गुप्ता मौके पर पहुंचे। सांसद ने इस सम्बन्ध में अधिकारियों से बात की और समाधान निकालने की दिषा में प्रयास करने का भरोसा दिया, तब मामला शांत हुआ।

बताया जाता है कि पटखौली व जिरियामऊ रेलवे लाइन के पूर्वी भाग में लोग रहते हैं। पुराना माल गोदाम का रास्ता बंद होने तथा रामलीला मैदान के बगल का रास्ता बंद होने से समस्या आई है। बताया जाता है कि प्रतापगढ़ रेलवे प्लेटफार्म का विस्तार होने से पटखौली वार्ड के लोगों के सामने यह समस्या उत्पन्न हुई है। रामलीला मैदान के उत्तरी भाग में एक अण्डरपास जीर्ण-शीर्ण हालत में है। फिलहाल इसी अण्डरपास को ठीक कराकर तथा अण्डरपास तक पहुंच मार्ग बनाकर समस्या का समाधान निकल सकता है। देखना है कि सांसद संगम लाल का प्रयास कब तक कारगर हो पाता है।

रास्ता अवरुद्ध होने पर विरोध प्रदर्शन करते लोग।

गोशाला में पशुओं को ठंड से बचाने के लिये जले अलाव

शासन के नोडल अधिकारी राम केवल ने बराछा गोशाला का किया निरीक्षण

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। उत्तर प्रदेश शासन के विशेश सचिव सामान्य प्रशासन एवं नियुक्ति तथा प्रतापगढ़ के नोडल अधिकारी राम केवल ने सोमवार को बराछा स्थित गोशाला का सघन निरीक्षण किया। नोडल अधिकारी ने गोशाला की साफ-सफाई पर संतोष जताते हुए उन्होंने कहा कि पशुओं को भीषण ठंड से बचाये रखने के लिये बोरा ओढ़ाए जाने के साथ-साथ अलाव की व्यवस्था की जानी चाहिये।उन्होंने निर्देशित किया कि प्रत्येक पशु को एक किलो दाना, पांच किलो हरा चारा और पांच किलो भूसा देने की व्यवस्था होनी चाहिये। शासन प्रति पशु 30 रुपये प्रतिदिन की दर अनुदान देता है। इससे इसकी व्यवस्था की जा सकती है। नोडल अधिकारी ने गोषाला में लगे गोबर गैस प्लांट जिससे बिजली जलती है, को बारीकी से देखा। लगभग आधे घंटे तक गोषाला का बारीकी से निरीक्षण करने के बाद कहा कि यह गोषाला प्रयास करने पर शीघ्र आत्मनिर्भर बन सकती है। गोषाला के निरीक्षण में एसडीएम सदर राहुल वर्मा, नगर पालिका के अधिषाषी अधिकारी राम अचल कुरील, सफाई निरीक्षक संतोष कुमार सिंह, मिथिलेष सिंह, प्रषांत सिंह तथा पषुपालन विभाग के विनय कुमार मौजूद रहे। नोडल अधिकारी राम केवल शासन के निर्देष पर दो दिन के दौरे पर प्रतापगढ़ आए हैं। उन्होंने विकास भवन में अधिकारियों के साथ बैठक कर शासन के योजनाओं की समीक्षा की।

गोशाला का निरीक्षण करते नोडल अधिकारी राम केवल।

युवक ने की आत्महत्या परिजनों में मचा कोहराम

लालगंज प्रतापगढ़। संदिग्ध दशा में युवक के आत्महत्या कर लेने से परिजनों में कोहराम मच गया। सांगीपुर थाना के ओरीपुर नैगीर निवासी रामपाल सरोज का पुत्र परमजीत सरोज 22 वर्ष संदिग्ध परिस्थितियों में जामुन के पेड़ में रस्सी से फंदा लगाकर आत्महत्या कर लिया। गांव के ही समीप पेड़ में रस्सी से गले में फंदे से झूलता परमजीत को देख लोग अवाक रह गए। परमजीत की मौत की खबर परिवार में पहुंचे तो परिवार में कोहराम मच गया। सूचना पर सांगीपुर पुलिस भी मौके पर पहुंची और युवक के शव का पंचनामा कर पीएम के लिए जिला मुख्यालय भिजवाया। इधर परमजीत की मौत को लेकर परिवार जनों ने चुप्पी साध रखी है। मौत का कारण स्पष्ट न होने से गांव में तरह-तरह की अंदरूनी चर्चा भी देखी सुनी गई। पुलिस का कहना है कि पीएम रिपोर्ट आने के बाद मौत का कारण

मनरेगा मजदूरों ने मजदूरी बढ़ाने को लेकर किया धरना प्रदर्शन

ब्लाक कालाकांकर में नारेबाजी कर मजदूरों ने सौंपा ज्ञापन

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। गैस सिलेंडर, सब्जी, चीनी तेल की मंहगाई को देखते हुए अपनी मनरेगा मजदूरी को 213 रु से 400 रु करने व नेटवर्किंग समस्या को लेकर ऑन लाइन हाजिरी को लेकर सोमवार को कालाकांकर ब्लाक के दर्जनों ग्राम पंचायत के मनरेगा मजदूरों का सब्र टूट गया और घर से फावड़ा तसला व थाली लेकर महिला पुरुष मजदूर ब्लाक मुख्यालय गेट पर धरना प्रदर्शन करने लगे और जमकर नारे बाजी किया।

मनरेगा मजदूरों ने कहा कि मंहगाई को देखते हुए मनरेगा मजदूरी को 213 से 400 रु करने व ऑन लाइन हाजिरी खत्म करके उपस्थिति पंजिका द्वारा हाजिरी लगाई जाय जिससे मजदूरों को परेशान न होना पड़े क्योकि ऑन लाइन में सबसे ज्यादा नेटवर्क की समस्या के कारण एनएमएमएस ऐप से हाजिरी नही हो पाती जिससे मस्टररोल शून्य हो जाता है। सहायक सचिव कम डाटा एंट्री ऑपरेटर शौचालय केयर टेकर एवं प्रधान के मानदेय की ब्यवस्था राज्य सरकार द्वारा अलग से की जाय। प्रधानों को सुरक्षा के लिए शस्त्र लाइसेंस में वरीयता दी जाय। इस दौरान मजदूरों ने लेखाकार श्रीनाथ को दिया जिसे लेखाकार ने आइएसबी ब्यास कुमार मौर्य को अवगत कराया। इस मौके पर ब्रजेश यादव अतौलिया, अनिल कुमार मौर्य परियावां, सुनील कुमार मौर्य, संजय त्रिपाठी प्रधान हिनाहू, सियाराम मौर्या आलापुर, राजेश मौर्या बडगौ, फूलचन्द पाल कदई, अमित कुमार रेवली, सुरेश यादव सोनामऊ, विकास सोनकर परसई, सत्येंद्र कुमार उर्फ मोनू अन्तामऊ, अर्जुन मौर्य, रमेश सिंह लवाना, राजकुमार पटेल कियावां, मुकेश सिंह रजवापुर, राकेश साहू रानीमऊ, शरद श्रीवास्तव केरावडीह, राजेन्द्र बहादुर उर्फ तालुकदार सिंह छिदौरा, बब्लू यादव कुसुवापुर, राजेश कुमार मिश्रा तिवारीपुर, डॉ सतपाल वर्मा सेखमोहम्मदपुर, प्रभाकर पटेल कडरौ, रामखेलावन पटेल जनवामऊ, संतोष कुमार यादव मधवापुर, पप्पू पनिगौ, जोखू यादव संग्रामपुर, प्रकाश चन्द्र त्रिपाठी बाजिदपुर, मनोज कुमार त्रिपाठी बरमौली आदि लोग मौजूद रहे।

ब्लाक कालाकांकर में तसला व थाली लेकर प्रदर्षन करते मजदूर।

सामाजिक सद्भावना सम्मान समारोह में असहायों को बांटा गया कम्बल

सांसद, प्रदेश अध्यक्ष अपना दल, उपजिलाधिकारी, समाजसेवियों तथा प्रबुद्धजन हुए शामिल

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। कर्मयोगीनी ममतामई माता शांति देवी की पावन स्मृति में माता शांति देवी सामाजिक सद्भावना सम्मान समारोह का आयोजन रेखा सदन महुली प्रतापगढ़ हुआ। सर्वप्रथम सांसद संगम लाल गुप्ता, पूर्व विधायक राजकुमार पाल, उपजिलाधिकारी शैलेंद्र कुमार वर्मा, साहित्यकार डॉ दयाराम मौर्य रत्न, आयोजक समाजसेवी रोशनलाल उमरवैश्य द्वारा माता शांति देवी के चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलन तथा माल्यार्पण किया गया।

इस दौरान चिलबिला महुली और आसपास के क्षेत्रों से आए 301 जरूरतमंद महिलाओं व पुरुषों को कंबल व गर्म कपड़े आदि अतिथियों द्वारा प्रदान किया गया। अपने उद्बोधन में सभी उपस्थित प्रबुद्ध जनों ने माता शांति देवी के व्यक्तित्व तथा कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए उनके प्रति श्रद्धा सुमन अर्पित किए। मुख्य अतिथि के रूप में सांसद संगम लाल गुप्ता ने माता के प्रति रोशनलाल उमरवैश्य के समर्पण भाव पर प्रकाश डालते हुए कहा कि वे माता-पिता धन्य हैं जिनके पुत्र जीवन में उनकी सेवा करते हैं। अतिविशिष्ट अतिथि पूर्व विधायक सदर व अपना दल प्रदेश अध्यक्ष राजकुमार पाल ने कहा कि सेवा ही धर्म है। विशिष्ट अतिथि उपजिलाधिकारी शैलेंद्र कुमार वर्मा ने कहा कि धन तो बहुत लोगों के पास होता है किंतु दान बहुत कम लोग देते हैं। समारोह की अध्यक्षता कर रहे पूर्व बाल न्यायाधीश व प्रख्यात साहित्यकार डॉ दयाराम मौर्य ने कहा कि सेवा सहयोग ही मानव कर्तव्य है। इस मौके पर उपायुक्त उद्योग दिनेश चैरसिया, उपनिदेशक नेहरू युवा केंद्र भारत सरकार के समर बहादुर सिंह, डिप्टी आर0एम0 बड़ौदा ग्रामीण बैंक बी0एन0 तिवारी, समाजसेवी बेल्हा देवी मंदिर उप प्रबंधक प्रमोद कुमार आदि ने सहभागिता की। कार्यक्रम का संचालन राकेश कनौजिया प्रवक्ता डायट द्वारा किया गया। आभार ज्ञापन कार्यक्रम के संयोजक रोशनलाल उमरवैश्य द्वारा किया गया।

माता शांति देवी के चित्र पर माल्यार्पण करते सांसद व अन्य।

खेत की रखवाली कर रहे किसान की सुअर के हमले से मौत

पट्टी, प्रतापगढ़। पट्टी तहसील क्षेत्र के विभिन्न स्थानों पर इस समय जंगली सूअर का खौफ नजर आ रहा है। रविवार की शाम को जंगली सुअर के हमले से किसान की मौत हो गई वहीं एक अन्य मामले में जंगली सुअर के हमले से किशोर बुरी तरीके से जख्मी हो गया। सुअर के हमले से घायल किसान को परिजन सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र ले गए लेकिन डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया हालांकि किशोर की मरहम पट्टी के बाद उसे घर भेज दिया गया। पट्टी तहसील क्षेत्र के आसपुर देवसरा थाना अंतर्गत सुरंगपुर गांव का रहने वाला फूलचंद सरोज (52) रविवार की शाम को घर से चार सौ मीटर दूर अपने आलू के खेत को देखभाल करने के लिए गया था, वह अपने खेत की देखरेख कर ही रहा था कि जंगली सूअर के झुंड में अचानक उसके ऊपर हमला कर दिया। उसके शोर-शराबा करने और चिल्लाने पर आसपास के लोग लाठी डंडा लेकर शोर मचाते हुए दौड़े तो जंगली सूअर जंगल की तरफ भाग निकले ।

केंद्रीय मंत्री का भाजपाइयों ने किया गर्मजोशी से किया स्वागत, मंत्री का हुआ सम्मान

अखंड भारत संदेश

लालगंज प्रतापगढ़। केंद्रीय आवास एवं शहरी विकास राज्य मंत्री कौशल किशोर का रविवार को यहां पहुंचने पर भाजपाइयों ने स्वागत किया। केंद्रीय मंत्री सबसे पहले स्थानीय लोक निर्माण विभाग निरीक्षण गृह पहुंचे यहां कार्यकताओं ने फूल मालाओं से उनका स्वागत किया। केंद्रीय मंत्री ने कार्यकताओं से मुलाकात कर भाजपा सरकार की योजनाओं को जनता तक मजबूती से पहुंचाए जाने की बात कही।

इसके बाद केंद्रीय मंत्री कौशल किशोर नगर पंचायत के उमापुर वार्ड पहुंचे, यहां भाजपा नेता ओमप्रकाश तिवारी झुन्ना के संयोजन में मंत्री का कार्यकताओं ने स्मृति चिन्ह प्रदान कर सारस्वत सम्मान किया। केंद्रीय राज्य मंत्री ने ओमप्रकाश तिवारी के आवास पर भी कार्यकताओं व स्थानीय लोगों से मुलाकात की। इस दौरान उन्होंने लोगों से कहा कि समाज को नशा मुक्ति जाने के लिए वह युवा पीढ़ी को जागरूक करें। केंद्रीय राज्य मंत्री ने यह भी कहा कि नशा मुक्त अभियान स्वस्थ भारत के निर्माण के लिए वरदान साबित होगा। उन्होंने कहा कि युवाओं के भविष्य को सुरक्षित बनाए रखने के लिए देश को पूरी तरह से नशा मुक्त किए जाने की आवश्यकता है। कार्यक्रम के संयोजक झुन्ना तिवारी द्वारा भाजपा जिला अध्यक्ष हरिओम मिश्रा हरिओम मिश्रा का भी सम्मान किया गया। इस मौके पर रामजी मिश्रा, अजय वर्मा, मिथिलेश जायसवाल पप्पू, अशोक मिश्रा, शुभम सिंह, ओम प्रकाश पांडे, डीपी सिंह, बबलू मिश्रा, बृजेंद्र पांडे मंटू आदि मौजूद रहे।

लालगंज में केंद्रीय मंत्री को सम्मानित करते भाजपाई।

गरीबों की सेवा से बड़ा कोई नही है पुण्यः उर्मिला

श्री वासुदेव शिक्षा निकेतन इका में वितरण किया गया कंबल

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। गरीबों की सेवा से बड़ा कोई दूसरा पुण्य कार्य नही है। गरीब व असहाय लोगो की मदद करना मानव जीवन का प्रथम धर्म है। यदि ईश्वर ने आपको कुछ दिया है तो उसे समाज के लोगो के साथ साझा करना चाहिए।

उक्त बातें श्री वासुदेव शिक्षा निकेतन इंटर कालेज भटनी की प्रबंधक उर्मिला सिंह ने विधवाओं व वृद्धों को कंबल वितरित करते हुए कही। इस दौरान क्षेत्र के जगमोहन, रामपति, माताफेर, जंगली यादव, रामदास, मंजू, रामसेवक, शिवशंकर मौर्य, धनेश गौतम, कलावती, निर्मला, बिरजू, अनिल शुक्ला, सुनीता, रामलखन, हुबराजा, भोला, राम अंजोर, माइका समेत सकड़ो गरीब व असहाय लोगों को ठंड से बचने के लिए कंबल प्रदान किया गया। कंबल पाकर सभी लोगो के चेहरे खिल उठे। कार्यक्रम का संयोजन विद्यालय के अध्यक्ष रमेश प्रताप सिंह ने व संचालन करुणेश सिंह ने किया। प्रधानाचार्य उमेश प्रताप सिंह ने कार्यक्रम में आए हुए लोगो के प्रति आभार प्रकट किया। इस मौके पर क्षेत्र के तमाम संभ्रांत लोगों के साथ सैकड़ों की संख्या में लोग मौजूद रहे।

असहायों को कम्बल वितरित करतीं उर्मिला सिंह।

ऋण के लिये शहरी बेरोजगार 25 जनवरी तक जमा करें आवेदन

प्रतापगढ़। परियोजना अधिकारी डूडा ने बताया है कि नगर पालिका परिषद बेल्हा प्रतापगढ़ सीमान्तर्गत निवासित शहरी गरीबों का दीनदयाल अन्त्योदय योजना-राष्ट्रीय शहरी आजीविका मिशन के तहत स्वरोजगार कार्यक्रम के अन्तर्गत नगर पालिका परिषद बेल्हा में संचालित है। योजनान्तर्गत रोजगार करने एवं रोजगार बढ़ाने हेतु व्यक्तिगत ऋण अधिकतम धनराशि रुपए 2 लाख एवं समूह ऋण ग्रुप लोन अधिकतम धनराशि 1 लाख तक ब्याज सब्सिडी ऋण हेतु आवेदन कर सकते है। उन्होने कहा है कि शहरी बेरोजगार जिनकी वार्षिक आय रुपए 10 लाख से कम हो ऋण आवेदन पत्र डूडा कार्यालय से निःशुल्क प्राप्त कर सकते है जिन लाभार्थियों की ऋण बैंकों से स्वीकृति/वितरण होगा।

एमडीपीजी कालेज में विषम सेमेस्टर की परीक्षाएं सम्पन्न

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। प्रो राजेंद्र सिंह (रज्जू भैय्या) विश्वविद्यालय की विषम सेमेस्टर परीक्षाएं एमडीपीजी केंद्र पर सुचारू रूप से संपन्न हो रही हैं। महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो मनोज मिश्र के निर्देशन में आंतरिक सचल दल द्वारा नकल विहीन परीक्षा कराने के लिए छात्र- छात्राओं की आवश्यक तलाशी ली जा रही है। महाविद्यालय के जन सूचना अधिकारी डॉ सी एन पांडे ने बताया कि प्रथम पाली में बीए प्रथम सेमेस्टर हिंदी की परीक्षा संपन्न हुई। प्रथम पाली में 546 परीक्षार्थी पंजीकृत थे जिनमें 516 उपस्थित तथा 30 अनुपस्थित रहे। द्वितीय पाली में बीए थर्ड सेमेस्टर हिंदी की परीक्षा हुई जिनमें 557 परीक्षार्थी पंजीकृत थे 550 ने परीक्षा दी एवं 7 अनुपस्थित रहे। प्रो ए के श्रीवास्तव, प्रो अरुण कुमार तिवारी, प्रो प्रदीप कुमार सिंह, डॉ अरविंद मोहन ओझा आदि लगातार परीक्षाओं की निगरानी करते रहे।

एमडीपीजी कालेज में चल रही परीक्षा का निरीक्षण करते सचल दल के अधिकारी

शरीर को स्वस्थ रखने के लिए व्यायाम और योगा जरुरीः डा0 पारुल

प्रतापगढ़। राजकीय बालिका इंटर कॉलेज में राष्ट्रीय किशोर स्वास्थ्य कार्यक्रम के अंतर्गत किशोर स्वास्थ्य मंच का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता गरिमा श्रीवास्तव प्रधानाचार्य राजकीय बालिका इंटर कॉलेज ने की। मुख्य अतिथि के रूप में डॉक्टर पारूल सक्सेना, मेडिकल ऑफिसर रहीं। विशिष्ट अतिथि में आकाशदीप डीयू एचसी सीएमओ ऑफिस रहे। कार्यक्रम का संचालन डॉक्टर मोहम्मद अनीस ने किया। इस अवसर पर छात्राओं को संबोधित करते हुए डॉक्टर पारुल सक्सेना ने बताया कि किशोरियों को अपने मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य के लिए हरी सब्जियों का ज्यादा प्रयोग करना चाहिए। जंक फूड का प्रयोग नहीं करना चाहिए। शरीर को स्वस्थ रखने के लिए व्यायाम और योगा करना चाहिए।

खबर संक्षेप

तमंचा कारतूस के साथ गिरफ्तार

कौशाम्बी। जनपद में अपराध एवं अपराधियों के विरूद्ध चलाये जा रहे अभियान के क्रम में थाना सैनी पुलिस बल द्वारा वांछित अभियुक्त धर्मा पासी पुत्र जोगी लाल निवासी घुमाई थाना सैनी को घुमाई फाटक के पास से एक अदद तमंचा 315 बोर व एक अदद जिन्दा कारतूस 315 बोर के साथ गिरफ्तार कर बरामदगी के आधार पर मुकदमा पंजीकृत कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त को न्यायालय भेज दिया है।

तीन वारण्टी अभियुक्त गिरफ्तार

कौशाम्बी। थाना कोखराज पुलिस बल द्वारा गोवध निवारण अधिनियम से सम्बन्धित वारटी अभियुक्त अजमेरी पुत्र छोटे लाल निवासी ननमई थाना कोखराज को गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त को न्यायालय भेज दिया है इसी प्रकार थाना महेवाघाट पुलिस बल द्वारा डीपी एक्ट से सम्बन्धित दो वारंटी अभियुक्तों चुनकी देवी उर्फ माया देवी पत्नी शिवबोधन सोनकर व शिव बोधन सोनकर पुत्र छोटा निवासीगण बैरागीपुर थाना महेवाघाट को गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त को न्यायालय भेज दिया है।

बैठक को संबोधित करते जिलाधिकारी

बैठक में उपस्थित विभिन्न विभाग के अधिकारी

जिलाधिकारी ने की कर-करेत्तर एवं राजस्व कार्यो की समीक्षा

अखंड भारत संदेश

लक्ष्य के सापेक्ष राजस्व वसूली में प्रगति सुनिश्चित करने के डीएम ने दिये निर्देश, वाणिज्यकर, खनन आबकारी, परिवहन, विद्युत, मण्डी, नगर निकायों में राजस्व वसूली कम पाये जाने पर नाराजगी

कौशाम्बी। जिलाधिकारी सुजीत कुमार द्वारा उदयन सभागार में सम्बन्धित अधिकारियों के साथ कर-करेत्तर एवं राजस्व कार्यों की समीक्षा की गई बैठक में जिलाधिकारी ने समीक्षा के दौरान वाणिज्यकर,, खनन, आबकारी, परिवहन, विद्युत, मण्डी,नगर निकायों में राजस्व वसूली कम पाये जाने पर नाराजगी प्रकट करते हुए सम्बन्धित अधिकारियों को लक्ष्य के सापेक्ष राजस्व वसूली में प्रगति सुनिश्चित करने के निर्देश दियें। उन्होंने राजस्व वसूली में अपेक्षित प्रगति न जाने पर ए0आर0टी0ओ0, जिला आबकारी अधिकारी, सहायक आयुक्त वाणिज्यकर एवं अधिशासी अभियन्ता विद्युत को चेतावनी जारी करने एवं स्पष्टीकरण प्राप्त करने के निर्देश दिये। उन्होंने सभी सम्बन्धित अधिकारियों को और अधिक प्रर्वतन कार्य करने एवं आर0सी0 की वसूली में प्रगति सुनिश्चित करने के निर्देश दिये। उन्होंने सभी उप जिलाधिकारियों एवं जिला आबकारी अधिकारी को अवैध शराब के विरूद्ध तथा वन विभाग के अधिकारी को अवैध आरा मशीनों के विरूद्ध नियमित रूप से कार्यवाही सुनिश्चित करने के निर्देश दिये। उन्होंने आईजीआरएस की समीक्षा के दौरान सभी अधिकारियों से कहा कि आईजीआरएस के तहत प्राप्त शिकायतों को समय के अन्दर निस्तारित किया जाय, यह सुनिश्चित किया जाय कि कोई शिकायत डिफाल्टर न होने पाये इस अवसर पर अपर जिलाधिकारी जयचन्द्र पाण्डेय, सभी उप जिलाधिकारीगण एवं ई-डीएम कीर्त कुमार सहित अन्य सम्बन्धित अधिकारीगण उपस्थित रहें।

न्यूज झरोखा

महापुरुषों को नमन करते हुए धूमधाम से मनाया मायावती का 67 वा जन्मदिन

कौशाम्बी। रविवार को ओसा स्थित बसपा कार्यालय मे बहन मायावती के जन्मदिन पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम मे बतौर मुख्य अतिथि के रूप में मुख्य जोन इंचार्ज सतीष जाटव व विशिष्ट अतिथि के रूप मे घनश्याम पटेल उपस्थित रहे।कार्यक्रम का संचालन जिलाध्यक्ष के.एल. गौतम ने किया। कार्यक्रम मे मुख्य अतिथि ने बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर सहित कांशीराम आदि महापुरुषो को नमन करते हुए बहन जी के 67वें जन्मदिन की बधाई देते हुए कहा कि बसपा पार्टी नही मिशन है। इस मिशन मे अपने आपको खपा कर मान्यवर कांशीराम ने इसकी जिम्मेदारी बहन मायावती के हाथो मे सौपा। बहन जी मिशन को आगे बढाते हुए चार बार मुख्यमंत्री बनी। उन्होंने आये हुए जनमानस से आने वाले नगर निकाय के चुनाव मे बसपा प्रत्याशियो को भारी मतो विजयी बनाने का संकल्प दियलाते हुए बसपा को मजबूत करने की बात कही।इस मौके पर महेन्द्र गौतम महताब आलम इखलाक अहमद मो. वैश नजीर अहमद संतोष गौतम महेश चौधरी श्लोक कुमार लालमन अम्बेडकर राम दयाल सरोज अरुण जायसवाल सुमन देवी आदि लोग उपस्थित रहे।

गरीब कमजोर जरूरतमंद को ब्लॉक प्रमुख ने दिया कम्बल

करारी कौशाम्बी। शीतलहर और ठंड को देखते हुए गरीब कमजोर जरूरतमंद लोगों को राहत देने के उद्देश्य से मंझनपुर ब्लॉक प्रमुख सरला राय और उनके पति हुबलाल दिवाकर ने सोमवार को गरीबों के बीच पहुंचकर कम्बल का वितरण किया है इस दौरान ब्लाक प्रमुख पति हुबलाल दिवाकर ने कहा कि गरीबों की सेवा करना पुनीत कार्य है और उन्होंने ठंड से बचाव के लिए गरीब लोगों को कम्बल दिया है जिससे गरीबों को ठंड में राहत मिल सके बताते चलें कि जनवरी माह के दूसरे सप्ताह में हाड़ कपाने वाली ठंड के चलते जनजीवन अस्त व्यस्त हो गया है जनवरी माह के दूसरे सप्ताह में कई दिनों तक सूर्य नारायण भगवान के दर्शन नहीं हुए हैं पूरे दिन आसमान में कुहरा छाया रहा जिससे गरीब कमजोर लोगों के सामने दिक्कतें उत्पन्न हो गई थी अपने बीच ब्लॉक प्रमुख को पाकर जरूरतमंद प्रसन्न दिखाई पड़ रहे थे और उन्होंने ब्लॉक प्रमुख की खुले मन से सराहना की है गरीबों के बीच कम्बल वितरण के दौरान तमाम लोग मौजूद रहे।

प्रशासन ने चलाया अवैध अतिक्रमण अभियान

कई वाहनों को किया जब्त दुकानदारों को अतिक्रमण न करने के दिए निर्देश

कौशाम्बी। जिले के सैनी कोतवाली क्षेत्र के सैनी चौराहे ,सिराथू रोड और कड़ा धाम रोड पर अवैध तरीके से वाहन खड़ा करने वालो और अवैध अतिक्रमण करने वाले दुकानदारों पर कार्रवाई की है।पुलिस ने रास्ते पर आटो खड़ा कर समस्या पैदा करने वाले आटो को जब्त करने की कार्यवाई की है।पुलिस ने अतिक्रमण करने वाले दुकानदारों को अतिक्रमण न करने के निर्देश दिए है। सिराथू सीओ के जी सिंह ने बताया कि अतिक्रमण अभियान चलाया गया है,अवैध रूप से रास्ते में आटो खड़ा करने वाले आटो को जब्त किया गया है,उन पर एमवी एक के तहत कार्यवाई की जा रही है,वही अवैध अतिक्रमण करने वाले दुकानदारों को अतिक्रमण न करने के निर्देश दिए गए है।

एक स्वर से उपस्थित पत्रकारों ने कहा कि कलम पर कुठाराघात नहीं होगा बर्दाश्त

संगठन विस्तार को लेकर भारतीय पत्रकार संघ के पत्रकारों ने मंझनपुर में की बैठक

कौशाम्बी। भारतीय पत्रकार संघ की एक बैठक जनपद मुख्यालय मंझनपुर में सोमवार को संपन्न हुई बैठक के दौरान भारतीय पत्रकार संघ के संगठन को विस्तार किए जाने पर विस्तार से चर्चा हुई है बैठक में निर्णय हुआ है कि जिले के तीनों तहसीलों में तहसील संगठन का जल्द गठन किया जाएगा इस दौरान तमाम पत्रकारों ने कहां कि निष्पक्ष न्याय पूर्ण तरीके से सत्य खबर लिखने पर आए दिन पत्रकारों को दिक्कतों से जूझना पड़ता है सत्य उजागर करने पर भ्रष्टाचार में लिप्त नुमाइंदे बौखला जाते हैं और कलम की आवाज दबाने का भरसक प्रयास करते हैं बैठक के दौरान एक स्वर से पत्रकारों ने कहा कि किसी भी कीमत पर निष्पक्ष लेखनी पर कुठाराघात बर्दाश्त नहीं किया जाएगा और लेखनी को रोकने के प्रयास करने वालों को मुंहतोड़ जवाब दिया जाएगा बैठक में निर्णय हुआ कि कलम की आवाज दबाने का प्रयास करने वाले लोगों के कारनामों को लेकर भारतीय पत्रकार संघ का एक प्रतिनिधिमंडल जल्द ही प्रयागराज आयुक्त और अपर पुलिस महानिदेशक प्रयागराज से मिलकर इस संबंध में चर्चा करेगा बैठक के दौरान भारतीय पत्रकार संघ के राष्ट्रीय संयुक्त मंत्री वरिष्ठ पत्रकार सुशील केसरवानी नथन पटेल सुशील मिश्रा धर्मेंद्र सोनकर शशि भूषण सिंह बब्बू पटेल राजकुमार सुबोध केसरवानी फैज अहमद समसूल हसन खान सियाराम, बृजेंद्र केसरवानी गणेश साहू शैलेंद्र कुमार विष्णु सोनी अजीत कुशवाहा अरविंद मौर्या सौरभ मिश्रा मुन्ना यादव मंजीत सिंह यादव अनिल कुमार सहित तमाम पत्रकारों ने पत्रकारिता पर हो रहे कुठाराघात पर चर्चा की है।

पूर्व प्रधान की तरह वर्तमान प्रधान भी सरकारी खजाने की रकम लूटने में लगीं

मंझनपुर विकासखंड क्षेत्र के ग्राम पंचायत अषाढा में 20 साल से हो रही धांधली पर अधिकारी नहीं हो रहे गंभीर

कौशाम्बी। विकासखंड मंझनपुर क्षेत्र के ग्राम पंचायत अषाढा दबंगों का गढ़ बन गया है बीते 20 वर्षों से सरकारी योजनाएं ग्राम प्रधान और पंचायत सचिव के घर पहुंच रही हैं ग्राम पंचायतों में विकास कार्य नहीं कराए जा रहे हैं जिससे पूरे गांव में 20 वर्ष के बाद भी नाली खड़ंजा सीसी रोड जल निकासी हैंडपंप आदि की व्यवस्था सुचारू नहीं हो सकी है पूर्व प्रधान पर लगातार भ्रष्टाचार धांधली का आरोप लगता रहा लेकिन समाजवादी पार्टी के नेता और दबंग होने के चलते अधिकारी कभी भी अषाढा ग्राम पंचायत की निष्पक्ष जांच नहीं कर पाए हैं जब कभी अधिकारियों ने निष्पक्ष जांच करने का प्रयास किया तो दबंग प्रधान ने ग्रामीणों को आगे कर विवाद की स्थिति उत्पन्न कर दी है। इस पंचवर्षीय में गांव की जनता ने नीलू सिंह को ग्राम प्रधान की कुर्सी सौंप दी है ग्रामीणों को उम्मीद थी कि पूर्व प्रधान के भ्रष्टाचार से गांव को मुक्ति मिलेगी और नीलू सिंह के कार्यकाल में गांव का भरपूर विकास होगा लेकिन पूर्व प्रधान की तर्ज पर नीलू सिंह भी भ्रष्टाचार के आकंठ में डूब गई हैं और सरकारी योजना से विकास कराए जाने के बजाय पूरे गांव की योजनाओं में बड़े पैमाने पर धांधली व्याप्त है। गांव में कराए जा रहे विकास कार्य के नाम पर किसी भी योजना में पारदर्शी तरीके से गांव का विकास नहीं हो रहा है मनरेगा योजना से लेकर सामुदायिक शौचालय सीसी रोड नाली निर्माण साफ सफाई में जमकर धांधली हुई है हैंडपंप रिबोर की धांधली के मामले में तो इस ग्राम पंचायत ने पूरे विकासखंड क्षेत्र को पीछे छोड़ दिया है हैंडपंप रिबोर और मरम्मत कराए बिना फर्जी बिल वाउचर के सहारे लाखों रुपए की रकम सरकारी खजाने से निकाली जा चुकी है पंचायत सचिव भी बराबर भ्रष्टाचार में हिस्सेदार हैं खंड विकास अधिकारी और एडीओ पंचायत ग्राम प्रधान के दबदबा के आगे निष्पक्ष जांच करने का साहस नहीं कर पाते हैं इलाके के लोगों ने ग्राम पंचायत अषाढा में हुई धांधली की उच्च स्तरीय जांच कराकर भ्रष्टाचार को उजागर करते हुए दोषी ग्राम प्रधान और पंचायत सचिव पर मुकदमा दर्ज कराकर इनकी गिरफ्तारी कराया जाना इनसे सरकारी रकम की रिकवरी कराए जाने की मांग की है।

महिला को टक्कर मारकर दुकान में घुसी कार महिला की मौत, चालक घायल

अखंड भारत संदेश

घर से पैदल दवा लेने महिला जा रही थी टेंगाई बाजार

दुर्घटना के बाद दुकान में घुसी कार

टेडीमोड कौशाम्बी। जिले के कोखराज थाना क्षेत्र में तेज रफ्तार का कहर देखने को मिला है तेज गति अनियंत्रित कार चालक ने एक महिला को टक्कर मारकर दुकान में घुस गई,कार की टक्कर से जहां महिला की मौत हो गई वही कार सवार भी घायल हो गया है।घटना के बाद लोगो की भीड़ जमा हो गई।सूचना पर पहुंची पुलिस ने घायल को एंबुलेंस से जिला अस्पताल भेजा और महिला के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। घटना क्रम के मुताबिक कोखराज थाना क्षेत्र के मनमऊ गांव की शब्बीरून निशा उम्र लगभग 50 वर्ष पत्नी स्वर्गीय सब्बीर अपने घर से पैदल टेंगाई चौराहा दवा लेने आ रही थी महिला जैसे ही टेंगाई चौराहे के पास पहुंची तभी पीछे से तेज रफ्तार अनियंत्रित कार चालक ने महिला को रौदते हुए सर्विस सेंटर दुकान में जा घुसी हादसे में महिला की मौके पर मौत हो गई दुकान में घुस जाने के बाद अनियंत्रित कार चालक भी घायल हो गया हादसा देखकर आसपास के लोगों की घटनास्थल में भीड़ जुट गई मामले की सूचना स्थानीय पुलिस को दी गई घायल चालक को चौराहे के लोगों ने एंबुलेंस की मदद से जिला अस्पताल पहुंचाया, सूचना पर पहुंची शहजादपुर चौकी पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया।महिला की मौत की सूचना मिलते ही रोते बिलखते परिजन भी घटनास्थल पर पहुंच गए हैं।

आधार की फीडिंग वाले बैंक खाते में किसानों को मिलेगी किसान सम्मान निधि की रकम

कौशाम्बी। जनपद के प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि के पात्र लाभार्थी कृषकों से अनुरोध है कि भारत सरकार द्वारा प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि के भुगतान की धनराशि पीएम किसान के पोर्टल पर फीड बैंक खाते के स्थान पर न होकर आधार की फीडिंग वाले बैंक खाते के आधार पर होगी। उक्त के क्रम में किसान भाईयों से 21 जनवरी, 2023 तक ई-केवाईसी और बैंक में जाकर एनपीसीआई अवश्य करा लें। किन्तु अभी भी जनपद के 39 हजार 767 कृषकों द्वारा ई-केवाईसी नहीं कराया गया है तथा 56 हजार 440 कृषकों ने एनपीसीआई (कृषकों के बैंक से होना है) नहीं कराया है जिसके कारण उनकी 13वीं किस्त जो जनवरी, 2023 में आनी है भारत सरकार द्वारा रोक दिया जायेगा अतः जनपद के कृषकों से अनुरोध है कि ई-केवाईसी हेतु सबसे पहले अपने नजदीकी आधार संशोधन केन्द्रो में जाकर अपने आधार को मोबाइल नंबर से जुड़वायें इसके पश्चात सहज जन सेवा केन्द्र/सीएससी सेन्टर में जा कर पीएम किसान योजनान्तगर्त ई-केवाईसी करायें। जिन लाभार्थी कृषकों द्वारा ई-केवाईसी कराया गया है किन्तु पीएम किसान का लाभ नहीं पा रहे है वे तत्काल अपने बैंक शाखा में जाकर एनपीसीआई करायें अन्यथा उनको प्राप्त होने वाली माह जनवरी, 2023 की किश्त व अन्य आने वाली समस्त किश्तें भारत सरकार द्वारा रोक दिया जायेगा जिसका उत्तरदायित्व आप सबका होगा। तत्काल ई-केवाईसी एवं बैंक में जाकर एनपीसीआई करायें ताकी निरन्तर पीएम किसान की किश्तें मिलती रहें।

केवल चावल देकर कार्डधारकों को गुमराह करने में लगे है कोटेदार

हर्रायपुर कौशाम्बी। मूरतगंज ब्लॉक क्षेत्र के अंतर्गत सैंता ग्राम सभा के कोटेदार इन दोनों राशन वितरण व्यवस्था में बड़ी हेराफेरी कर रहे हैं सरकार द्वारा कार्ड धारकों को गेहूं चावल दिए जाने का निर्देश है लेकिन कोटेदार केवल चावल देकर ग्रामीणों को गुमराह कर रहा है ग्रामीणों का कहना है कि गांव के कोटेदार द्वारा कार्ड धारकों को केवल चावल वितरण किया गया है और गेहूं अन्य जगह रखे हुए है गेहूं की कालाबाजारी कर कोटेदार मालामाल हो रहा है इस संबंध में जिला पूर्ति अधिकारी से बात की गई तो उन्होंने कहा कि गेहूं चावल दोनों दिए जाने का आदेश है यदि कार्ड धारक को गेहूं नहीं मिल रहा है तो कोटेदार पर कार्यवाही की जाएगी।

3 महीने बीते नाबालिग दलित बालिका को नहीं खोज सकी पुलिस!

अखंड भारत संदेश

सोने चांदी के जेवर और नकदी रुपए भी लेकर बालिका युवक के साथ हुई है फरार

कौशाम्बी। कोखराज थाना क्षेत्र के नौढिया गांव से 22 सितम्बर को एक दलित नाबालिग बालिका को गांव का युवक बहला-फुसलाकर प्रेम जाल में फंसा कर उठा ले गया था मामले की सूचना परिजनों ने स्थानीय पुलिस को दी पुलिस ने आरोपी युवक के विरुद्ध नामजद मुकदमा दर्ज कर लिया है लेकिन घटना को 3 महीने से अधिक बीत जाने के बाद गायब नाबालिग दलित बालिका को कोखराज पुलिस खोज नहीं सकी है जिससे बालिका के परिजन परेशान हैं। जानकारी के मुताबिक कोखराज थाना क्षेत्र के नौढिया गांव की एक दलित नाबालिग बालिका 22 सितंबर की सुबह घर से स्कूल जाने को निकली थी लेकिन बालिका स्कूल नहीं पहुँची गांव का एक युवक मनोज कुमार पुत्र कमलेश बालिका को अपने प्रेम जाल में फंसा कर बहला-फुसलाकर भगा ले गया जब शाम को बालिका वापस स्कूल से नहीं लौटी तो परिजन परेशान हो गए काफी खोजबीन के बाद परिजनों को मालूम हुआ कि युवक के साथ बालिका फरार हुई है घर देखने पर मालूम चला कि सोने चांदी के जेवर और 17000 नगद भी बालिका अपने साथ ले गई है परिजनों ने आरोपी युवक को नामजद करते हुए मामले की सूचना पुलिस को दी पुलिस ने मुकदमा तो दर्ज कर लिया है लेकिन दलित नाबालिग बालिका को खोजने के प्रयास में पुलिस 3 महीने से अधिक बीत जाने के बाद रत्ती भर आगे नहीं बढ़ सकी है जिससे बालिका के परिजन परेशान हैं।

एचएमआईएस यूपी एचएमआईएस ई कवच पर दिया गया प्रशिक्षण

अखंड भारत संदेश

प्रशिक्षण में बोलते मुख्य चिकित्सा अधिकारी

कौशांबी। जनपद स्तरीय एचएमआईएस यूपी एचएमआईएस ई कवच, अनमोल आरसीएच पोर्टल इत्यादि का प्रशिक्षण स्वास्थ्य विभाग द्वारा शुरू हुआ। तीन दिवसीय यह प्रशिक्षण मुख्य चिकित्सा अधिकारी सभागार में शुरू हुआ। इसकी अध्यक्षता सीएमओ सुर्षेद्र कुमार ने की। सीएमओ ने प्रशिक्षण में समस्त ब्लाक बीपीएम एनसीटीएस ऑपरेटरों को निर्देशित किया कि जितने भी स्वास्थ्य कार्यक्रम के इंडिकेटर हैं उनके अंकन सुधार किए जाएं और निरंतर प्रगति देखी जाए। बीसीपीएम आशाओं के जरिए गर्भवती को सारी सुविधाएं मुहैया कराते हुए उन्हें संस्थागत प्रसव के लिए प्रेरित करें। प्रशिक्षक और डिविजनल मॉनिटरिंग इवेलुएशन ऑफिसर दशरथ लाल ने जिले के सभी बीपीएम एनसीटीएस ऑपरेटरों को प्रशिक्षण दिया। डाटा स्पेशलिस्ट सत्यजीत श्रीवास्तव ने ब्लॉक के नए डाटा रिव्यु टूल विषय पर विस्तार से चर्चा करते हुए पूरी जानकारी दी। दशरथ लाल ने बताया कि ब्लॉक रिव्यु टूल में रैंकिंग के वह बिंदु हैं जिससे टूल में आंकड़ा डालने पर ब्लॉक की वर्तमान स्थिति दिख जाएगी। उन्होंने कहा कि इससे आसानी से वह ब्लाक स्वास्थ्य इकाई के इंडिकेटर को जान सकेंगे और जिनकी स्थिति खराब है उसकी जानकारी ब्लाक मिल जाएगी। इससे विशेष ध्यान देते हुए एक्शन प्लान तैयार कर उन कमियों को दूर किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि ब्लाक रिव्यु टूल में एचएमआईएस का डाटा डालकर सब सेंटर तक का डाटा उसमें आ जाएगी जिसमें सब सेंटर पर क्या कमियां हैं उसे देखकर दूर कर सकेंगे कार्यक्रम में डीपीएम ओ.पी राव द्वारा आरसीएच पोर्टल के 8 बिंदुओं पर चर्चा करते हुए कहा कि बच्चो का टीकाकरण ,गर्भवती माताओं का पंजीकरण डाटा को सही तरीके से अपलोड किए जाने हेतु निर्देशित किया गया। जनपद स्तरीय एचएमआईएस ऑपरेटर साहब आलम के द्वारा जनपद के एचएमआईएस डाटा के बारे में बताया कि यदि डाटा को भरने में जो भी कमियां पाई जाती हैं उसे दूर कर दिया जाए तो हमारी रैंकिंग और भी अच्छी हो जाएगी। देव प्रकाश यादव फैमिली प्लानिंग मैनेजर द्वारा परिवार नियोजन के डाटा में नसबंदी तथा स्पेशिंग मैथड के बारे में चर्चा की गई तथा कवच के बारे में बताया गया कि पोर्टल के माध्यम से बीएचआईआर का डिजिटलीकरण एवं दी जाने वाली सेवाओं का अपडेशन किया जाना है कार्यक्रम में यूपी के स्वास्थ्य केंद्र एप्लीकेशन का प्रशिक्षण कर जानकारी दी गई जिसके माध्यम से जनपद में उपलब्ध समस्त स्वास्थ इकाइयों का मानव संसाधन एवं दी जाने वाली सेवाओं को एक नजर में देखा जा सकेगा प्रशिक्षण में समस्त ब्लॉक के डीपीएम एमसीटीएस ऑपरेटर, अर्बन हेल्थ कोऑर्डिनेट, जनपदीय स्वास्थ्य शिक्षा अधिकारी द्वारा प्रतिभाग किया गया।

नहरों की पटरियों के कटने के डर से टेल तक नही पहुंचाया जा रहा पानी : अजय सोनी

अखंड भारत संदेश

जिले की सभी नहरों एवं रजबहों के टेल तक रोस्टर के अनुसार लगातार पानी पहुंचाने की सकिपा ने की मांग

किसानों से मुलाकात करते समर्थ किसान पार्टी नेता अजय सोनी

कौशाम्बी। समर्थ किसान पार्टी के नेता अजय सोनी ने सिंचाई विभाग के अधिकारियों की कारगुजारी पर तीखा हमला किया है। ग्राम फत्तेपुर (बेला) में सोमवार को किसानो से रूबरू होते हुए अजय सोनी ने कहा कि नहरों की पटरियों के कटने से किसानो के खेतों में पानी भर जाने के डर से सिंचाई विभाग कौशांबी और सिंचाई विभाग फतेहपुर नहरों एवं रजबहों के टेल तक पानी नही पहुंचा रहा है। इतना ही नहीं बल्कि जिन जिन नहरों में पानी छोड़ा भी गया, उन्हे भी नहर कटने के डर से बंद कर दिया जाता है। आगे कहा कि कई कई नहरों एवं रजबहों में विभाग के अधिकारी इसलिए पानी नही छोड़ रहे है कि नहरों एवं रजबहों की पटरियों की मानक के अनुरूप मरम्मत नहीं होने से कहीं पटरियां कट न जाएं और किसानो के खेतों में पानी न भर जाए। सोमवार को ग्राम फत्तेपुर (बेला) के किसानो से रूबरू हुए अजय सोनी ने सिंचाई विभाग के अधिकारियों के नहर सफाई के कार्य में खानापूर्ति करने का आरोप लगाते हुए कहा कि आधे अधूरे सफाई कार्य से नहर एवं रजबहों की पटरियों के कटने के डर से विभागीय अधिकारी या तो किसी नहर की टेल तक लगातार पानी नही चला रहे हैं या दो चार दिन चलाकर नहर बंद कर दे रहे हैं। साथ ही कई कई नहरों में टेल फीड कराने के नाम से दूसरी नहरों में बंधा लगाकर किसी तरह पानी चढ़ाने का स्वांग रच रहे हैं। समर्थ किसान पार्टी की ओर से अजय सोनी ने जिला प्रशासन एवं सिंचाई विभाग के उच्च अधिकारियों से नहरों एवं रजबहों के टेल तक लगातार पानी पहुंचाने की मांग की है अन्यथा धरना प्रदर्शन करने की बात कही है।इस मौके पर अजय सोनी के साथ ननका विश्वकर्मा, वीरेंद्र तिवारी, सुंदर लाल प्रजापति, राम सिंह यादव आदि लोग मौजूद रहे।

शिक्षक एमएलसी चुनाव को लेकर बैठक सम्पन्न

भारतीय जनता पार्टी कार्यालय में आयोजित हुई बैठक

अखंड भारत संदेश

उपस्थित लोगों को संबोधित करती जिला अध्यक्ष अनीता त्रिपाठी

बैठक में शिक्षक और भाजपा नेता

कौशाम्बी। एमएलसी चुनाव को लेकर एक बैठक भारतीय जनता पार्टी कार्यालय में आहूत किया गया। बैठक की अध्यक्षता जिला अध्यक्ष अनीता त्रिपाठी ने किया। इस मौके पर जिले के प्रभारी अनिल सिंह मौजूद रहे। बैठक में आगामी एमएलसी शिक्षक के चुनाव को लेकर चर्चा की गई कि अधिक से अधिक संख्या में वोटरों को पोलिंग बूथ तक लाया जा सके हैं। बैठक में इस बात की रणनीति बनी कि कैसे अधिक से अधिक वोटों को भारतीय जनता पार्टी के प्रत्याशी के समर्थन में डाला जा सके। इस मौके पर पार्टी के जिम्मेदार पदाधिकारियों को चुनावी जिम्मेदारियां सौंपी गई। इस मौके पर प्रमुख रूप से प्रभारी अनिल सिंह, पुष्पा देवी, ज्योति केशरवानी, वेद प्रकाश सत्यार्थी, अजय पाण्डेय, धर्मराज मौर्य, अजय तिवारी, राकेश पाण्डेय, चक्रेश मिश्रा, दिनेश पाण्डेय, शीलू पाण्डेय, आलोक तिवारी, जय सिंह पटेल, निथिश श्रीवस्तव, कमल कुशवाहा, दिलीप अग्रहरी, नितिन पासी, अवधेश शुक्ला, करुणेश त्रिपाठी, जय प्रकाश विश्वकर्मा, कुलदीप पाण्डेय, अरविन्द द्विवेदी, बबलू श्रीवास्तव, बाबूलाल प्रजापति सहित बड़ी संख्या में पार्टी कार्यकर्ता मौजूद रहे।

संपादकीय

आपदा जोखिम की जड़ें कहीं? अंकुर कहीं

प्रियंका सौरभ

प्राकृतिक आपदाएँ एक प्रमुख कारण हैं जो किसी राष्ट्र के जीवन और संपत्ति पर भारी बोझ का कारण बनते हैं। इसलिए आपदा के प्रभाव, उसके शमन और आपदा के प्रभावों को कम करने के लिए आवश्यक अन्य गतिविधियों के अध्ययन पर तत्काल ध्यान देना अनिवार्य है। आपदाएं मानव निर्मित और प्राकृतिक जन्म दोनों हो सकती हैं। मानव निर्मित आपदाओं में दंगे, युद्ध, परमाणु खतरे, खतरनाक अपशिष्ट आदि शामिल हैं। प्राकृतिक आपदाएं बाढ़, भूकंप, सुनामी, भूस्खलन, बादल फटने और आदि जैसे जलवायु कारकों और रोग, महामारी आदि जैसे जैविक कारकों के कारण हो सकती हैं। कुछ आपदाएँ सीधे प्रभावित करती हैं। और तत्काल प्रभाव पड़ता है और अन्य का दीर्घकालिक प्रभाव पड़ता है। किसी भी प्रकार की आपदा से हमेशा मानव जीवन और राज्य संपत्ति का भारी नुकसान होता है। जबकि कई आपदाओं में संपत्ति के विनाश को टालना संभव नहीं है लेकिन किसी भी आपदा में मानव जीवन को बचाया जा सकता है। आपदा घटनाओं की एक श्रृंखला है जो बड़े पैमाने पर जीवन, आजीविका और संपत्ति का विनाश करती है। जब आपदाएं अपरिहार्य हो जाती हैं, तो उनके जोखिम को कम करने की तैयारी के बारे में सोचना अनिवार्य हो जाता है। जैसा कि आम कहावत है, "रोकथाम इलाज से बेहतर है", यह न केवल जरूरी है बल्कि लचीलापन बनाने के लिए लाभदायक भी है, क्योंकि यह कम विनाश लाता है और यह आपदा के बाद राहत और पुनर्वास की तुलना में सस्ता है। आपदाएं मानव जाति के लिए एक विचार नहीं है। उन्होंने बाढ़, भूकंप, सुनामी, चक्रवात, कुछ नामों के लिए हर संभव रूप में अपनी नींव स्थापित की है। चाहे वह चीनी बाढ़ हो या फ्लोरिडा के चक्रवात, आपदा के निशान सीमाओं के पार हैं। इस संदर्भ में, मानव जाति के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि वह प्रतिक्रिया से रोकथाम की ओर परिवर्तन करे। पहले, तकनीकी बाधाओं के कारण तैयारी स्थानीय समुदायों के पारंपरिक ज्ञान तक सीमित थी जिसे अब वर्तमान पीढ़ी के नवाचार और अनुसंधान के साथ ठीक से एकीकृत करने की आवश्यकता है। आपदा तैयारी के इस तंत्र को विश्व स्तर पर लिया गया है और आपदा जोखिम न्यूनीकरण के लिए संयुक्त राष्ट्र कार्यालय जैसे संस्थान चचाओं और विचार-विमर्श के मंच हैं जहां राष्ट्रों को नागरिक समाज संगठन और स्थानीय समुदाय के सहयोग से आपदाओं के प्रभाव को कम करने के लिए तंत्र तैयार करने की आवश्यकता है। व्यापक आम सहमति के माध्यम से, विभिन्न राष्ट्रों की सरकारों को इन चार कार्यक्षेत्रों के माध्यम से तैयारियों के विचार को आगे बढ़ाने की आवश्यकता हैः पहले ट्रांसपोंडर के लिए चल रहा प्रशिक्षण, विनाश योजनाओं में सामुदायिक भागीदारी, बेहतर जोखिम मूल्यांकन, सरकार के प्रतिक्रिया समय को कम करना। सूची संपूर्ण नहीं है और विभिन्न राष्ट्रों की पारिस्थितिकी के अनुसार इसका विस्तार किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, इंडोनेशिया में उष्णकटिबंधीय चक्रवातों के प्रति उच्च भेद्यता है। तैयारियों के स्तर के अनुसार जो पहले से मौजूद है, देश को अन्य कार्यक्षेत्रों में विस्तार करने की आवश्यकता है।

इसकी पुष्टि इस तथ्य से की जा सकती है कि फिलीपींस और भारत जैसे देशों ने चक्रवातों से निपटने के लिए एक बेहतर तंत्र स्थापित किया है, जो इन क्षेत्रों में लगातार घटनाएं होती रहती हैं। टाइफून हागुपिट जो फिलीपींस से टकराया था, मौसम का सबसे मजबूत था, लेकिन बेहतर तैयारी के उपायों के साथ मृत्यु दर में भारी कमी आई है। लगभग, 2,27,००० लोगों को तुरंत आपातकालीन आश्रयों में पहुंचाया गया। मानव संसाधन जो हर अर्थव्यवस्था के लिए सर्वोपरि है, उसे पहले ध्यान देने की जरूरत है। पहले उत्तरदाताओं को निवारक उपाय करने, निकासी मार्गों की योजना बनाने, पहुंच में प्रशिक्षित करने की आवश्यकता है आपातकालीन आश्रयों और आपातकालीन योजनाओं के लिए उनमें से कुछ हैं यहां सरकार की भूमिका सर्वोत्कृष्ट हो जाती है। जोखिम मूल्यांकन से लेकर तैयारियों तक, पूरी प्रक्रिया को सावधानीपूर्वक नियोजित करने की आवश्यकता है। यहां, स्थानीय समुदाय के ज्ञान और नागरिक समाज संगठन की भागीदारी का पूरा लाभ उठाया जा सकता है। सर्वोत्तम प्रथाओं को विश्व स्तर पर साझा करने की आवश्यकता है और दृष्टिकोण समन्वयात्मक होना चाहिए। ह्योगो फ्रेमवर्क के लिए संयुक्त राष्ट्र महासभा संकल्प द्वारा पारित कार्रवाई, लचीलापन बनाने के लिए एक एकीकृत योजना प्रदान करती है। एचएफए कार्रवाई के लिए पांच प्राथमिकताओं की रूपरेखा तैयार करता है, और आपदा लचीलापन प्राप्त करने के लिए मार्गदर्शक सिद्धांत और व्यावहारिक साधन प्रदान करता है। इसे कई सरकारों और अंतरराष्ट्रीय एजेंसियों ने स्वीकार किया है। विकासशील अर्थव्यवस्था जैसे भारत में तेजी से शहरीकरण हो रहा है और विकास जोरों पर है, आपदाओं की संवेदनशीलता कई गुना बढ़ जाती है। इसके शीर्ष पर, भारत की एक बहुत लंबी तटरेखा है, लगभग 7,500 किमी जो हर समय चक्रवातों के प्रति संवेदनशील रहती है। उत्तराखंड बाढ़, जम्मू-कश्मीर बाढ़, पूर्वी तट पर फैलिन और हुदहुद चक्रवात कुछ हैं, हाल के दिनों में देश ने आपदाएं देखी हैं। उड़ीसा चक्रवात और दुनिया भर में विभिन्न अन्य आपदाओं में भारी तबाही से संकेत लेते हुए, सरकार ने काफी हद तक संस्थागत तंत्र को मजबूत किया है। सरकार ने 2005 में आपदा प्रबंधन अधिनियम बनाया जो विभिन्न स्तरों पर आपदा प्रबंधन प्राधिकरण, राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण, राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण, जिला आपदा प्रबंधन प्राधिकरण और राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण की स्थापना करता है। इसके बाद, राष्ट्रीय चक्रवात जोखिम न्यूनीकरण परियोजना को बहु-खतरा जोखिम प्रबंधन में चक्रवात पूवार्नुमान, ट्रैकिंग और चेतावनी प्रणाली और क्षमता निर्माण के उन्नयन के उद्देश्य से अनुमोदित किया गया था।

देशी नाचो-नाचो को अवार्ड, थिरक उठा भारत

कलाकार होने के नाते राष्ट्रपति जेलेन्स्की ने खुद इस गाने की शूटिंग के लिए मंजूरी दी थी। फिल्म आरआरआर में जूनियर एनटीआर और रामचरण ने 1920 के ब्रिटिश राज के समय भारत के स्वतंत्रता सेनानी कोमाराम भीम और अल्लुरी सीतारामाराजू की भूमिका निभाई थी। इसके अलावा इस फिल्म में आलिया भट्ट, अजय देवगन के साथ-साथ ब्रिटिश एक्टर रे स्टीवेंसन, एलिसन डूडी और ओलिविया मारेंस भी शामिल थे। फिल्म में जूनियर एनटीआर और रामचरण के देशी डांस नाचो-नाचो में ऐसा धमाल किया की ब्रिटिश डांस पार्टी में नाचो-नाचो पर गोरे अंग्रेज भी थिरकने लगे थे

फिल्मों के माध्यम से जनमानस में राष्ट्रीय चेतना का संचार भी होता है। फिल्में समाज मे होतें अन्याय, जुल्म ज्यादतियों के विरुद्ध एक नवीन चेतना का निर्माण करती है। दक्षिण भारतीय फिल्मों का बढ़ता आकर्षण इन्ही मानवीय भावनाओं के प्रगटीकरण के परिणामस्वरुप ही निर्मित हुआ है

भारत के लिए गौरवशाली पल है। इस गरिमामयी उपलब्धि से भारत के कला प्रेमी थिरक उठें है। थिरके भी क्यों नहीं बात ही थिरकने की है। नाटू-नाटू पर ऐसे नाचे की सबको नचा दिया। फिल्म आरआरआर के गाने नाटू-नाटू मतलब नाचो-नाचो को बेस्ट ओरिजनल सॉन्ग के लिए अमेरिका के लॉस एंजेलिस में आयोजित 80 वें गोल्डन ग्लोब अवार्ड 2023 के लिए नवाजा गया। गोल्डन ग्लोब अवाडर्स आस्कर के पुरुस्कार के बाद फिल्म ओर मनोरंजन जगत का सबसे बड़ा अवार्ड माना जाता है। यह उपलब्धि भारतीय सिनेमा जगत की स्वर्णिम उपलब्धियों में से एक मॉनी जा रही है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के शब्दों में 'भारतीय सिनेमा के लिए ऐतिहासिक क्षण है।, फिल्म के संगीतकार एमएम कीरावानी ने अवार्ड लेनें के दौरान भावुक अंदाज में कहा 'इस उपलब्धि के पीछे पूरी टीम छिपी है। जिसमे डायरेक्टर, राजमौली, कोरियोग्राफर प्रेम रक्षित, गीतकार चंद्रबोस और गायक सिप्लिगूँज उन्होनें भैरव को भी धन्यवाद दिया।' इस गाने की शूटिंग यूक्रेन के राष्ट्रपति भवन में हुई थी। कलाकार होने के नाते राष्ट्रपति जेलेन्स्की ने खुद इस गाने की शूटिंग के लिए मंजूरी दी थी। फिल्म आरआरआर में जूनियर एनटीआर और रामचरण ने 1920 के ब्रिटिश राज के समय भारत के स्वतंत्रता सेनानी कोमाराम भीम और अल्लुरी सीतारामाराजू की भूमिका निभाई थी। इसके अलावा इस फिल्म में आलिया भट्ट, अजय देवगन के साथ-साथ ब्रिटिश एक्टर रे स्टीवेंसन, एलिसन डूडी और ओलिविया मारेंस भी शामिल थे। फिल्म में जूनियर एनटीआर और रामचरण के देशी डांस नाचो-नाचो में ऐसा धमाल किया की ब्रिटिश डांस पार्टी में नाचो-नाचो पर गोरे अंग्रेज भी थिरकने लगे थे। गीत भी देशी अंदाज से परिपूर्ण दिखाई दिया। शब्द-शब्द देशी ओर गांव के रंग में रंगा दिखाई दिया। अवार्ड मिलने के बाद इस गीत के शब्द-शब्द पर गौर किया। जिसके बोल कुछ इस तरह के है 'बैल जैसे धूल उड़ा के, सींग उठा के तुम भी नाचो। बाजे जम के ताल-ढोल, बेटा राजू , उड़ के नाचो। तीरों से भी तेज कोई कर सके जो भेद नाचो, अस्तबल में घोड़े जैसे बाग-डोर छोड़ नाचो। मिट्टी जोता, रोड मोटा, मिर्चा खाके ऐसे नाचो, हाँ आजा छोरे, हाँ आजा गोरे हाँ आजा छोरे। नाचो, नाचो-नाचो, नाचो वीरे नाचो। कच्ची केरी जैसा खट्टा नाचो, नाचो, नाचो-नाचो, बिच्छू काटा लागे ऐसा नाचो। गूँजे ढोल ऐसे देखो धन-धना के रोगी नाचे, शोर सुन लो है धमाका, जैसे शेर हाथी नाचे। देखो, दिल का ये मेला, यारा अपने साथ नाचो। एड़ियों के जोरों पे धूम-धड़का देशी नाचो, वो पसीना माथे का चमके-दमके ऐसे नाचो। नाचो, नाचो-नाचो, उसने चखा लागे तीखा नाचो, झूमे गांव, है रेला, ऊंचा पाँव यूँ पटका है ये देशी एक मेला, कैसा रहा यकायकी। धुमुक-धुमुक नाचे जा, दुनियाँ हिला दे सारी। नाचो, नाचो, नाचो।' इस गाने के बोल भी देशी अंदाज में रंगे सजें संवरें है, तो नृत्य भी दुनियाँ को हिला देने वाला रहा है। दुनियाँ को हिला देने वाला ही नहीं भारत को अवार्ड दिला देने वाला भी रहा है। फिल्म आरआरआर स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़ी हुई है। इसलिए राष्ट्रीय भावनाएँ भी उफान मारती दिखाई देती है। फिल्म आरआरआर भी लगान की तरह अंग्रेजो के द्वारा भारतीयों से दोयम दर्जे के व्यवहार को प्रदर्शित करतीं फिल्म है। दक्षिण भारत का भी अपना स्वतंत्रताकालीन इतिहास रहा है। इस फिल्म में अंग्रेजो के भारतीयों पर किये जुल्म और ज्यादतियों को बखूबी प्रदर्शित किया। दक्षिण भारतीय फिल्मों ने विगत कुछ बरसों में दक्षिण के दर्शकों को नहीं अपितु सम्पूर्ण भारत ओर दुनियाँ के दर्शकों को आकर्षित किया है। फिल्में सिर्फ मनोरंजन का माध्यम ही नहीं होती है।

फिल्मों के माध्यम से जनमानस में राष्ट्रीय चेतना का संचार भी होता है। फिल्में समाज मे होतें अन्याय, जुल्म ज्यादतियों के विरुद्ध एक नवीन चेतना का निर्माण करती है। दक्षिण भारतीय फिल्मों का बढ़ता आकर्षण इन्ही मानवीय भावनाओं के प्रगटीकरण के परिणामस्वरुप ही निर्मित हुआ है। जिसे वैश्विक स्तर पर सराहना के साथ अवार्ड भी मिल रहा है। आरआरआर ने ग्लोबल लेवल पर 1200 करोड़ रुपए से ज्यादा की कमाई की थी। नाटू-नाटू याने नाचो-नाचो बेस्ट ओरिजनल सॉन्ग मोशन पिक्चर की कैटगरी में गोल्डन ग्लोब अवार्ड के लिए चुना गया है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मिले इस अवार्ड से भारत का गौरव बड़ा है। फिल्म का यह गाना आस्कर फिल्म अवार्ड की दौड़ में भी शामिल है। भारतीय फिल्म जगत के इस गौरव पूर्ण क्षण से पूरा भारत गौरवान्वित है। फिल्म के नाचो-नाचो गाने को सुनकर और देखकर मन मयूर सा नाच उठता है। भारतीय संगीत की परिभाषा को जाना तो पाया "गीतम, वादयम तथा नृत्यं त्रयम संगीतमुच्यते" अर्थात गायन, वादन एवं नृत्य इन तीनो कलाओं के समावेश को ही संगीत की पूर्णता माना गया है। भारत में दक्षिण भारतीय संगीत दक्षिण भारत मे तो हिंदुस्तानी संगीत शेष हिंदुस्तान में लोकप्रिय रहा है। भारतवर्ष में सारी सभ्यताओं में संगीत का बड़ा महत्व रहा है। साधक नृत्य, वादन ओर गायन से ही ईश्वर की आराधना करतें है। भारत के देशी गीत और नृत्य को अंतर राष्ट्रीय मंच पर सम्मान मिलना भारतीय संगीत और फिल्मी जगत के लिए गौरव की बात है। भारतीय सिनेमा और मनोरंजन जगत को अपनी उत्कृष्टता प्रदर्शित करना होगी। अंतर राष्ट्रीय मंच पर भारत की ख्याति और कीर्ति पताका फहराने में फिल्मी जगत भी अपनी अहम भूमिका निभा सकता है। डायरेक्टर एसएस राजामौली की फिल्म आरआरआर ने यह गौरव भारत को दिलाया है। देशी नाचो-नाचो पर सारा भारत थिरक रहा है। यह थिरकन निरन्तर चलती रहना चाहिए। गोल्डन ग्लोब से आस्कर तक चलती रहना चाहिए। भारत के सम्पूर्ण फिल्मी जगत को संगीत की इस महान कला में फूहड़पन और अश्लीलता के समावेश की गैरजरूरी मौजूदगी पर भी विचार करना होगा।

संगीत की यह पवित्र परम्परा जिसमे मनोरंजन के साथ अध्यात्म का भी समावेश है। संगीत की यहीं आध्यात्मिक शक्ति विश्व के लोगो में भारत के प्रति जुड़ने का भाव पैदा करती रही है। नाचो-नाचो के देशी नृत्य और गीत ने इस बात को पुख्ता कर दिया है। सच रामचरण और एनटीआर फिल्म में ऐसे नाचे की सारी दुनियाँ को हिला दिया है।

डिजिटल इंडियाः नया भारत-नयी क्रांति

श्याम जाजू

उभरते भारत की पहचान आज दुनिया में न सिर्फ एक आर्थिक महाशक्ति और सैन्य ताकत के रूप में होती है बल्कि सूचना तकनीक के क्षेत्र में हुई अभूतपूर्व प्रगति से भी होती है । कभी दुनिया में सूचना तकनीक के मात्र बैक ऑफिस के रूप में जाने जाना वाला भारत अब डिजिटल तकनीक और उसके व्यावहारिक उपयोग में दुनिया के अग्रणी देशों में शामिल हो गया है। और इसके पीछे हैं अत्यंत सफल डिजिटल इंडिया अभियान जिसने सच में देश की तस्वीर बदल कर रख दी है। अभी कुछ दिन पूर्व भारत यात्रा पर आये माइक्रोसॉफ्ट के प्रमुख सत्या नडेला ने कहा कि भारत का डिजिटल स्वरूप अद्भुत है। जितनी तेजी से भारत ने प्रौद्योगिकी का उपयोग कर भारत को डिजिटल रूप से सशक्त समाज और ज्ञान-आधारित अर्थव्यवस्था में बदलने का सफल प्रयास किया है, ऐसा मैंने पहले नहीं देखा है। वहीं हाल ही में भारत आये जी 20 के प्रतिनिधियों ने भारत को "डिजिटल तकनीक का अग्रणी" कहते हुए यहां हुए डिजिटल परिवर्तन की सराहना की और राजस्थान के उदयपुर में शिल्पग्राम में राजस्थानी हस्तकला की वस्तुओं को खरीदने के लिए यूपीआई (यूनाइटेड पेमेंट्स इंटरफेस) का भी उपयोग किया। प्रतिनिधिमंडल की एक सदस्य सऊदी अरब की प्रतिनिधि राशा खालिद बिन अफतान ने कहा कि यह अभूतपूर्व है और सभी देशों को भारत और इसकी उच्च तकनीक से सीखने की जरूरत है। दरअसल डिजिटल इंडिया ने देश में एक आर्थिक क्रांति का सूत्रपात किया है जिसके मूल में है सुशासन और नागरिक सशक्तिकरण। कुछ ही वर्षों में डिजिटल इंडिया ने भारत को डिजिटल रूप से सशक्त समाज में बदलने के अपने प्रयासों में महत्वपूर्ण प्रगति की है। कार्यक्रम ने सफलतापूर्वक इंटरनेट कनेक्टिविटी का विस्तार किया है जिसने शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के बीच डिजिटल विभाजन को पाटने में मदद की है। आज देश की अधिकांश ग्राम पंचायतों को हाई स्पीड इंटरनेट से जोड़ दिया गया है। इसने ग्रामीण क्षेत्रों में ऑनलाइन सेवाओं की उपलब्धता में काफी सुधार किया है और नागरिकों के लिए डिजिटल तकनीकों के उपयोग के माध्यम से सरकारी सेवाओं तक पहुंच को आसान बना दिया है। आज अधिकांश सरकारी सेवायें ऑनलाइन उपलब्ध हैं। इससे पारदर्शिता बढ़ाने, भ्रष्टाचार को कम करने और सरकारी सेवाओं की दक्षता में सुधार करने में मदद मिली है। इन प्रयासों का नागरिकों के जीवन और देश के विकास पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है।डिजिटल इंडिया अभियान को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 01 जुलाई 2015 को लॉन्च किया था। इसका प्रारंभिक उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों को हाई-स्पीड इंटरनेट नेटवर्क से जोड़ना और देश में डिजिटल साक्षरता और उपयोग में सुधार करना था। यह पूरा अभियान तीन प्रमुख क्षेत्रों पर केंद्रित था - प्रत्येक नागरिक के लिए एक उपयोगिता के रूप में डिजिटल बुनियादी ढांचा, मांग पर शासन और सेवाएं, और नागरिकों का डिजिटल सशक्तिकरण। दरअसल, डिजिटल इंडिया कार्यक्रम भारत को बदलने, डिजिटल सेवाओं के साथ लोगों को सशक्त बनाने और उन्हें बेहतर जीवन जीने में मदद करने के लिए भविष्य का एक रोड मैप है। इसमें एक राष्ट्रीय ई-गवर्नेंस मिशन, राष्ट्रीय घटक, स्मार्ट शहरों की पहल और डिजिटल इंडिया का प्रमुख कार्यक्रम डिजिलाइट शामिल हैं। इस कार्यक्रम का उद्देश्य भारतीय नागरिकों को आर्थिक और सामाजिक रूप से सक्षम बनाना है। डिजिटल इंडिया के नौ स्तंभ हैं ब्रॉडबैंड हाइवे, मोबाइल कनेक्टिविटी तक सार्वभौमिक पहुंच, सार्वजनिक इंटरनेट एक्सेस कार्यक्रम, ई-गवर्नेंसः प्रौद्योगिकी के माध्यम से सरकार में सुधार, ई-क्रांति - सेवाओं की इलेक्ट्रॉनिक डिलीवरी, सभी के लिए सूचना, इलेक्ट्रॉनिक्स विनिर्माण, नौकरियों के लिए आईटी और प्रारंभिक फसल कार्यक्रम। इनमें से प्रत्येक क्षेत्र अपने आप में एक जटिल कार्यक्रम है और कई मंत्रालयों और विभागों में फैला हुआ है। डिजिटल इंडिया के तहत महत्वपूर्ण पहलों में शामिल हैं: डिजिलॉकर, ई-स्वास्थ्य अभियान, ई-शिक्षा अभियान, ई-क्रांति (सेवाओं की इलेक्ट्रॉनिक डिलीवरी), भीम - यूपीआई पोर्टल और ई-अस्पताल आदि।

डिजिटल इंडिया कार्यक्रम भले ही औपचारिक रूप से 2015 में प्रारम्भ हुआ हो, इसकी नींव पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने 2002 में ही रख दी थी। 2014 के लोकसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी ने अपने चुनाव घोषणापत्र में डिजिटल भारत के विकास को एक महत्वपूर्ण लक्ष्य बनाया था जिसका उद्देश्य भारत के प्रत्येक नागरिक को डिजिटल रूप से सशक्त बनाना व भारत को ग्लोबल नॉलेज हब बनाने के साथ हर घर को डिजिटल रूप से साक्षर बनाना था। इस घोषणापत्र में ई-गवर्नेंस पर विशेष ध्यान दिया गया था क्योंकि बीजेपी का मानना था कि सूचना और संचार प्रौद्योगिकी भारत के सशक्तिकरण, नागरिकों की समानता और दक्षता के लिए एक महत्वपूर्ण सूत्र है। इसलिए घोषणा पात्र में ब्रॉडबैंड, सहभागी शासन, डिजिटल लर्निंग, टेली-मेडिसिन, ई-भाषा आदि का उल्लेख किया गया था।

आज ये सभी घोषणाएं मूर्त रूप ले चुकी हैं। डिजिटल अपनाने के मंच पर भारत विश्व स्तर पर एक अग्रणी देश बन गया है। आज भारत के 84 करोड़ लोग इंटरनेट से जुड़े हैं। देश में 100 करोड़ से अधिक मोबाइल फोन उपयोगकर्ता हैं जिसमे से 60 करोड़ लोग स्मार्ट फोन का उपयोग करते हैं। भारत की डिजिटल अर्थव्यवस्था वर्ष 2025 तक 1 ट्रिलियन डालर को पार करने की संभावना है। ई-गवर्नेंस से संबंधित इलेक्ट्रॉनिक लेनदेन में व्यापक वृद्धि हुई है। भारत नेट कार्यक्रम के तहत लगभग 3 लाख किलोमीटर के ऑप्टिकल फाइबर नेटवर्क ने 1।15 लाख से अधिक ग्राम पंचायतों को जोड़ा गया है। चाहे शहर हो या गांव, छोटे खुदरा व्यापारी हों या बड़े व्यावसायिक संसथान, सभी यूपीआई का उपयोग कर रहे हैं। 10 रुपये की मूंगफली भी आज क्यूआरकोड की मदद से खरीदी जा सकती है। ज्यादा पुरानी बात नहीं है जब 2017 में कांग्रेस के नेता, पूर्व वित्त मंत्री प चिदंबरम ने संसद में डिजिटल पेमेंट का मजाक उड़ाते हुए कहा था कि क्या गांव में कभी कोई आलू और टमाटर खरीद कर साढ़े सात रुपये डिजिटल तरीके से दे पायेगा? आज भारत की डिजिटल क्रांति ने न केवल उनकी बात का सम्यक जवाब दिया बल्कि पूरे देश और दुनिया को हतप्रभ कर दिया। मात्र तीन बरस में 2021 में ही डिजिटल भुगतान ने 100 बिलियन डालर (लगभग आठ लाख करोड़ रुपये) का आंकड़ा छू लिया और अब डिजिटल लें-दें में दुनिया का नंबर एक देश बन गया है। हाल ही में 5जी के लॉन्च के अवसर पर प्रधानमंत्री मोदी ने इस घटना का जिक्र करते हुए कहा कि एक समय था जब मुट्ठी भर संभ्रांत वर्ग के लोग और उनमें से कुछ संसद के अंदर डिजिटल इंडिया का मजाक उड़ाया करते थे। वे सोचते थे कि गरीब लोगों में कोई क्षमता नहीं है और वे डिजिटल चीजों को नहीं समझ सकते हैं। उन्हें संदेह था कि गरीब लोग डिजिटल का मतलब भी नहीं समझेंगे। लेकिन देश के आम आदमी की समझ में, उसकी विद्वता में, उसके जिज्ञासु मन में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने हमेशा भरोसा किया है। नि:संदेह डिजिटल इंडिया में भारत को डिजिटल रूप से सशक्त समाज में बदलने की एक अत्यंत सार्थक एवं प्रभावी पहल है और इसने अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में महत्वपूर्ण प्रगति की है। इस कार्यक्रम ने सफलतापूर्वक इंटरनेट कनेक्टिविटी का विस्तार किया है और ई-गवर्नेंस और ई-स्वास्थ्य पहलों को लागू किया है, जिससे देश के नागरिकों को बहुत लाभ हुआ है। डिजिटल इंडिया की सफलता डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा देने और डिजिटल प्रौद्योगिकियों तक पहुंच बढ़ाने के इच्छुक अन्य देशों के लिए एक मॉडल के रूप में कार्य करती है। कभी और देशों की सफलता में अपनी प्रगति के गुर ढूंढता भारत आज शेष दुनिया के लिए प्रमुख रोल मॉडल बन गया है। और इसके मूल में है - डिजिटल इंडिया। यही है इसकी सबसे बड़ी सफलता।

(लेखक, भारतीय जनता पार्टी के निवर्तमान राष्ट्रीय उपाध्यक्ष हैं।)

जोड़ो, तोड़ो, मोड़ो, छोडो ..अभियान

रेखा शाह आरबी

हम लोगों के देश में कुछ ना कुछ चलता ही रहता है यह चलते-फिरते लोगों का देश है,कोई न कोई ट्रेंड. कोई न कोई अभियान ..कोई न कोई एक्शन मोड में रहता ही है । अपने देश में खाने की कमी हो सकती है रोजगार की कमी हो सकती है लेकिन साहित्यकारों, विशेषकर व्यंग कारों को को लेखन के लिए विषय की कमी नहीं हो सकती ..विषयो से भरा पूरा देश है। इसके लिए सभी साहित्यकारों व्यंगकारो को देश के बुद्धिजीवी नेताओ का सभी नेताओं का आभारी रहना चाहिए ।वैसे साहित्यकार बुद्धिजीवी अन्य समय पर तो शासन और सत्ता पर भारी रहते है पर कभी-कभी ऐसे जगहों पर आभारी रहना चाहिए वैसे भी नेता और लेखक में शनि और सूर्य देव वाला रिश्ता रहता है पर आजकल के नेता और कुछ साहित्यकार दोनों समझदार हैं अपनी अपनी कक्षा में अपनी अपनी यात्रा पूरी करते हैं बिना एक दूसरे से टकराए। और कभी-कभी एक ही कक्षा में अपनी यात्रा करने लगते हैं आपसी सौहार्द प्रेम भाव को बढ़ावा देने के लिए। और वह कक्षा होती है राग दरबारी कक्षा। आजादी से पहले भी देश में अभियान छेड़ा गया था अंग्रेजों भारत छोड़ो अभियान ..अंग्रेज भारत से अपने मन में भारत को बसाकर सारी अच्छी-अच्छी चीजें आदतें उठा ले गए और इंडिया को छोड़ गए तब से लेकर अब तक भारत के सभी बुद्धिजीवी प्राणी इंडिया को भारत बनाने पर तुले लगे हुए हैं कुछ लोगों को भारतीय से ज्यादा इंडिया का नागरिक बनना पसंद होता है वह इस अभियान की निंदा करते है पर निंदा करने वालों का क्या है अच्छा करें तब भी जग में निंदा करने वाले मिल जाएंगे बुरा करिए तब भी कुछ लोग निंदा करेंगे लेकिन कभी-कभी निंदा करने वाला ही आपके व्यक्तित्व का परिमार्जन कर देता है इसीलिए तो कहा गया है " निंदक नियरे राखिए आंगन कुटी छवाय" और अभी जाने कितना समय लगेगा इंडिया को भारत बनाने में.. अभी कार्य प्रगति पर है।अतःभारत को हृदय में बसाने वाले लोग.. इस स्लोगन से अपने आप को संतुष्ट कर सकते हैं। आजकल देश की हर पार्टी कोई न कोई अभियान चला रही है अभियान पहले भी चलते रहे हैं लेकिन अब के अभियान कुछ अलग ही अंदाज में चलते है..चल रहे हैं। कोई जोड़ो अभियान चला रहा है तो कोई उसकी जोड़ी हुई भार्मिक दीवार को तोड़ने का अभियान चला रहा है और कोई अपनी कुर्सी की टूटी हुई टांग जोड़ने के लिए अपनी दीवार जोड़ने में लगा हुआ है और जिन को जोड़ने तोड़ने से फुर्सत है वह इन अभियानों को अपनी ओर मोड़ने का अभियान चला रहे हैं और जिन से यह भी नहीं हो पा रहा है वह लंबी-लंबी छोड़ने का अभियान चला रहे हैं। राजनीति में तो हर पार्टी कुछ न कुछ छोड़ती ही रहती है जिसका कचरा जनता को बटोरना पड़ता है अतः जनता बटोर रही है और बटोरने के सिवा कुछ नहीं कर सकती है अतः कभी-कभी जनता भी जोड़ो छोड़ो के बजाय मरोड़ो अभियान चला चला कर कभी-कभी इन लोगों की गर्दन मरोड़ देती है । क्योंकि अपने देश में जोड़ने तोड़ने मोड़ने की अभूतपूर्व कला का अविष्कार देश के नेताओं ने किया था तो वह अब तक इस अविष्कार के पुरस्कार पर अपना पहला अधिकार बनाए हुए हैं और बनाऐ रखने की परंपरा बनाए रखेंगे । जनता को जोड़ने तोड़ने के तमाशे में मिलना जुलना तो कुछ नहीं है ना पहले कुछ मिला है ना अब कुछ मिलेगा अतः वह अभी तमाशाई बनी हुई है। जनता को इस जोड़ने तोड़ने के खेल में रुचि और अरूचि तो तब जागृत हो जब वह अपनी दैनिक जरूरतों से फ्री हो जाए लेकिन ना वह फ्री होगी ना उसका पेट भरेगा और ना वह इस पचड़े में पड़ेगी। इसके लिए उन्हें देश के धन पशुओं का आभारी होना चाहिए क्योंकि उनकी भूख जनता की भूख पर भारी पड़ती है। खाली पेट इंसान भूख को सोचता है और भरे पेट वाले को खुराफात सुझाई देती है। तो यह जोड़ने तोड़ने का खेल भरे पेट वालों की खुराफात है यह सब उच्च वर्ग का खेल है निम्न वर्ग वालों के लिए इसमें मनोरंजक कुछ भी नहीं ।

जुमलों की चाभी

डॉ. सुरेश कुमार मिश्रा

देश में किसान के लिए गरीब शब्द का वही महत्व है जो शरीर के लिए सांस का है। कहते हैं मुल्ला की दौड़ मस्जिद तक होती है और किसान की दौड़ मसान तक होती है। दोनों को बड़ी जल्दी रहती है। दोनों सिर झुकाते हैं, लेकिन एक का सिर उठता है और दूसरे का सदा के लिए झुककर मिट जाता है। किसान के लिए किसानी करना उसका पैशन नहीं मजबूरी है, क्योंकि वह कोई दूसरा काम जानता नहीं है। एक किसान अपनी बेटी के साथ एक छोटी सी झोंपड़ी में रहता था। उसके पास खेती करने के लिए इतनी कम जमीन थी कि उसकी फसल को बेचकर उसे न के बराबर रूपए मिलते थे। उन रुपयों से वे लोग ठीक से खाना भी नहीं खा पाते थे। वह गिरगिट राजा के पास अपनी समस्या लेकर आया। राजा रंग बदलने में माहिर थे। उन्होंने किसान को झूठे वादों के बीज और खाद के लिए अपने चमचों के खून चूसने वाले बैंक से उधार लेने के लिए कहा। इसके बदले में ऋण माफी और बीमा योजना का लाभ वाला झांसा देकर उसे भ्रमित कर दिया। उन्होंने कहा, ह्ययह जमीन तो तुम्हारी ही रहेगी, लेकिन उस पर उगने वाली फसल हमारी होगी। बदले में उसकी कीमत तुम्हें दे दी जाएगी।ह्व किसान ने गिरगिट राजा को बहुत-बहुत धन्यवाद दिया। एक दिन किसान खेत की जुताई कर रहा था। तभी उसका हल किसी कठोर चीज से टकराया। उसने वहाँ खोदकर देखा तो उसे ब्लैक मनी वाला ताला मिला। किसान ईमानदार था। उसने अपनी बेटी से कहा- 'हमें यह ताला झूठे वादों के बीज बोते समय मिला है। वादे जिनके झूठे हों, उसी का

इस कदर गरजा बुलडोजर, पूरी बाजार हो गई ध्वस्त

एसडीएम-सीओ सिटी की मौजूदगी में हुआ ध्वस्तीकरण

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। जिला मुख्यालय में सोमवार को सूबे के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का बुलडोजर दो अलग-अलग स्थानों पर इस कदर गरजा कि पूरी बाजार ध्वस्त हो गई। ध्वस्तीकरण के शिकार 16 दलितों ने एसडीएम सदर राजबहादुर से अनुसूचित जनजाति आयोग के पत्र का हवाला देकर गुहार भी लगाई, लेकिन कोई सुनवाई नहीं हुई।

सोमवार को बाबा का बुलडोजर जिला मुख्यालय के बस स्टैण्ड स्थित पुराने कुआ के पास गरजा। बुलडोजर ने यहां पर स्थित अंग्रेजी-देशी शराब दुकानों समेत तीस वर्षों से चल रही प्यारे के वेल्डिंग कारखाने को भी ढहा दिया। यहीं पर रहने वाले तकरीबन 16 दलितों के घर भी बुलडोजर ने ढहा दिये। यहां रहने वाले दलितों ने एसडीएम सदर राजबहादुर से अनुसूचित जनजाति आयोग के पत्र का हवाला देते हुए गुहार लगाई कि जाडे के दिनों में वे कैसे गुजारा करेंगे। इस बात का एसडीएम सदर पर कोई असर नहीं हुआ। उन्होंने कहा कि सभी लोगों से प्रार्थना पत्र लेकर इन्हें प्राथमिकता के आधार पर बसाने की प्रक्रिया शुरू की जाये। इस बात के निर्देश उन्होंने ईओ लालचन्द्र को दिये।

इसके बाद बुलडोजर ट्राफिक चैराहा स्थित लोनिवि की दीवार से सटी अंकित पहारिया व तिवारी की दुकानों में गरजा। बुलडोजर ने यहां बनी अंकित पहारिया की मेडिकल स्टोर की दो मंजिला दुकान को पल भर में ढहा दिया। इसी प्रकार तिवारी की दुकान भी ढहा दी गई। बुलडोजर के प्रतिष्ठानों को ढहाने के दौरान शहर के तमाम तमाशबीनों की भारी भीड जमा रही। भीड को नियंत्रित करने को शहर कोतवाल एके मिश्रा व सीओ सिटी हर्ष पाण्डेय मौजूद रहे। बुलडोजर की कार्यवाही दौरान किसी ने कोई प्रतिरोध नहीं किया।

16 दलितों का भी करुण-क्रन्दन सांसद को नहीं दिया सुनाई

चित्रकूट। जिले में आज फिर चले बुलडोजर की कार्यवाही में लोगों ने सांसद आरके सिंह पटेल को फिर से दोषी करार देते हुए कहा कि उनके खास के बस स्टैण्ड पर स्थित सुलभ शौचालय पर बुलडोजर नहीं चला। इसे लेकर लोगों ने कहा कि सांसद की मनमानी से लोगों पर कहर टूट पडा है। 16 दलितों की भी गुहार नहीं सुनी गई। भेदभाव पूर्ण ढंग से चल रहे बुलडोजर की कार्यवाही पर लोगों ने खासी नाराजगी जताते हुए कहा कि सांसद की जातिवादी मानसिकता के चलते ये सब हो रहा है। सांसद चाहते तो पहले सुलभ शौचालय की इमारत गिरती, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। इसे लेकर लोगों में सांसद के प्रति खासा रोष देखने को मिला।

चुनाव छोटा हो या बडा होता है महत्वपूर्ण: डीएम

एमएलसी चुनाव की डीएम ने की तैयारी

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। जिलाधिकारी/सहायक रिटर्निंग आफीसर अभिषेक आनन्द ने झांसी खंड शिक्षक स्नातक चुनाव को शान्तिपूर्ण, स्वतंत्र एवं निष्पक्ष ढंग से सम्पन्न कराने को पुलिस अधीक्षक श्रीमती वृन्दा शुक्ला की मौजूदगी में विभिन्न व्यवस्थाओं के लिए नियुक्त नोडल प्रभारी/सहायक प्रभारी/जोनल/सेक्टर मजिस्टेज्टों के साथ समीक्षा बैठक कर बिन्दुवार आचार संहिता, कार्मिक नियुक्ति, प्रशिक्षण व्यवस्था मद पत्र, यातायात मतदाता सूची, बूथ निर्माण आदि पर चर्चा की।

सोमवार को जिलाधिकारी अभिषेक आनन्द ने कलेक्टेज्ट सभागार में हुई बैठक में कहा कि प्रेक्षक, मीडिया सेल, कम्प्यूटर, सीसीटीवी वेबकास्टिंग, विधिक सेल, आनलाइन व आफलाइन सूचनाओं को भेजने बाबत संबंधित प्रभारियों से विस्तृत चर्चा की। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिये कि शिक्षक स्नातक का मतदान तीस जनवरी को होना है। चुनाव छोटा हो या बडा महत्वपूर्ण होता है।

इसके मद्देनजर चुनाव को सकुशल सम्पन्न कराने के निर्देश देते हुए सीडीओ से कहा कि प्रशिक्षण दौरान सभी पीठासीन अधिकारियों व मतदान कर्मियों को चुनाव के बारे में विस्तार से जानकारी दी जाये, ताकि मतदान दौरान कोई समस्या न हो। बैठक में सीडीओ अमृतपाल कौर, एडीएम कुंवर बहादुर सिंह, एसडीएम सदर राजबहादुर, मऊ एसडीएम नवदीप शुक्ला, मानिकपुर एसडीएम प्रमेश श्रीवास्तव, सीओ सिटी हर्ष पाण्डेय, मऊ सीओ शीतला प्रसाद पाण्डेय, राजापुर सीओ एसपी सोनकर समेत संबंधित जोनल-सेक्टर मजिस्टेज्ट मौजूद रहे।

एनसीसी छात्रों को टीएसआई ने संकेतों के बारे में दी जानकारी

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक श्रीमती वृन्दा शुक्ला के निर्देश पर सडक सुरक्षा माह की बाबत सीओ यातायात राजकमल की देखरेख में यातायात प्रभारी मनोज कुमार व टीएसआई योगेश कुमार यादव ने चित्रकूट इंटर कालेज के एनसीसी छात्रों को ट्राफिक चैराहे में यातायात संकेतों के बारे में जानकारी दी।

सोमवार को ट्राफिक चैराहे में यातायात अधिकारियों ने बताया कि चैराहे पर एक यातायात पुलिस का सिपाही किस ढंग से यातायात संचालित करता है। कैसे एक तरफ की सडक के यातायात को रोककर दूसरी ओर के यातायात को पास करता है। इस बाबत विस्तार से जानकारी एनसीसी छात्रों को दी गई। सभी छात्रों को यातायात नियमों के पालन के प्रति जागरूक किया।

अधिकारियों ने कहा कि सभी छात्र अपने परिजनों एवं नाते-रिश्तेदारों को यातायात नियमों के पालन के प्रति जागरूक करें। बतायें कि दोपहिया वाहन चलाते समय हेलमेट और चारपहिया वाहन चलाते समय सीटबेल्ट का प्रयोग अवश्य करें।

एसपी ने सीओ सिटी के साथ देखा भरतकूप मेला

मेले में लोगों की सुरक्षा का लिया जायजा

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। मकर संक्रान्ति पर्व पर भरतकूप में लगे विशाल मेले को देखने पुलिस अधीक्षक श्रीमती वृन्दा शुक्ला पहुंची। उन्होंने सीओ सिटी हर्ष पाण्डेय के साथ मेले का निरीक्षण कर भीडभाड देखते हुए चैकस व्यवस्था करने के निर्देश दिये। सोमवार को पुलिस अधीक्षक श्रीमती वृन्दा शुक्ला भरतकूप में लगे मकर संक्रान्ति पर्व पर मेला देखने पहुंची। भरतकूप कस्बे में पांच दिवसीय मेला के दूसरे दिन भी भारी तादाद में लोगों ने भरतकूप में स्नान कर दान दिया।

हजारों श्रद्धालुओं ने ऐतिहासिक कूप के जल से तर्पण किया। प्रतिवर्ष की भांति मेले में लाखों श्रद्धालुओं ने हिस्सा लिया। ऐतिहासिक भरतकूप मेले का खासा महत्व है। माना जाता है कि मकर संक्रान्ति पर्व पर जो लोग प्रयागराज नहीं जा पाते, वे भरतकूप में स्नान कर पुण्य को प्राप्त कर लेते हैं। पुलिस अधीक्षक श्रीमती वृन्दा शुक्ला ने सीओ सिटी हर्ष पाण्डेय के साथ मेला की सुरक्षा व्यवस्था का जायजा लिया। भरतकूप थाने के थानाध्यक्ष दुर्गेश गुप्ता को निर्देश दिये कि मेले में शान्ति व्यवस्था चैकस रखें। मेला ड्यूटी में तैनात पुलिस कर्मियों की ड्यूटी भी समय-समय पर चेक करते रहें।

न्याय चक्र फाउंडेशन ने चलाया विधिक जागरूकता अभियान

अवागढ़। प्रेमा देवी पब्लिक स्कूल में दोपहर 12 बजे विधिक जागरूकता अभियान के तहत एक बैठक हुई, बैठक में समीम खान प्रदेश वरिष्ठ मीडिया प्रभारी ने सभी पदाधिकारियों को जागरूक किया और दलित पीड़ितों को न्याय दिलाने की बात कहीं, एटा से हिरदेश बघेल को जिलाध्यक्ष नियुक्ति किया गया। यह बैठक राष्ट्रीय अध्यक्ष हरेकृष्ण पांडेय जी के निर्देशन में एवं समीम खान के नेतृत्व में हुई संतोष कुमार शर्मा मंडल अध्यक्ष व नरेश चंद्र मिश्रा जिला प्रभारी ने

कहा कि हमारी न्याय चक्र फाउंडेशन संस्था जमीनी स्तर पर कार्य कर रही है और गरीबों को निशुल्क न्याय दिलाती है इस मौके पर समीम खान प्रदेश वरिष्ठ मीडिया प्रभारी, संतोष कुमार मंडल अध्यक्ष, नरेश चंद्र मिश्रा जिला प्रभारी, जिला अध्यक्ष हिरदेश बघेल , राजमोहन जिला सचिव, शिव मोहन जिला प्रवक्ता, रमेश जादौन मंडल मीडिया प्रभारी, नौशाद अली, परवेज अली, गिर्राज, छोटेलाल, डोरीलाल आदि लोग मौजूद रहे।

फटाफट खबरें

सम्राट अशोक सावदिया सेवा संस्था के तत्वावधान में गोष्ठी का आयोजन

अफजलगढ़। ब्लाक क्षेत्र के गाँव चोहड़वाला में सम्राट अशोक सावदीया सेवा संस्था द्वारा गाव स्थित धर्मशाला में एक गोश्ठी का आयोजन किया गया। संस्था के संस्थापक व राष्ट्रीय अध्यक्ष ईश्वर सिंह व अतिथियो ने वहां स्थित बाबा भीमराव अंबेडकर की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया। तदुपरांत आगंतुक अतिथियों का ग्रामीणों ने पुष्प माला व बुके आदि भेट कर स्वागत किया गया।

संस्था के राष्ट्रीय अध्यक्ष इश्वर सिंह सावदीया के साथ यूपी प्रदेश प्रभारी सूरज सन्यासी, कोषाध्यक्ष नीतू सिंह,महासचिव हेमंत सिंह,कपिल कुमार, संगठन प्रदेश प्रभरी नवनीत राजपूत, आदि ने कार्यक्रम में उपस्थित होकर आए हुय संस्था के अन्य पदाधिकारी महिला व पुरुषों को संस्था के उद्देश्यों के बारे में बताया की संस्था हर व्यक्ति को रोजगार देने के लिये प्रतिबद्ध है ।संस्था से जुड़े लोगों को आर्थिक सहायता कर भी उन्हें मशीनों आदि को उपलब्ध करा रही ह ।संगठन पूरे देश मे काम रही है । भी सदस्यों ने अपने विचार रखे । इस दौरान कार्यक्रम में दर्जनों गाव के लोगो ने शिरकत की ।

क्षेत्रीय विधायक पहुँचे गाँव- गाँव, सुनी ग्रामीणों की समस्याएं

अफजलगढ़। विधान सभा क्षेत्र बढापुर 19 के वर्तमान भाजपा विधायक सुशांत सिंह ने अफजलगढ़ ब्लाक क्षेत्र के दर्जन भर गांव में पंचायत घर, धर्मशाला व मंदिर प्रागणों में सभाये कर ग्रामीणों की समस्याये सुनी, वही प्रत्येक गांव में ग्रामीणों की मांग पर उनकी माँग के अनुसार आर सीसी सड़को, शेड,तथा शव दाह गृह आदि शीघ्र ही बनवाने का आश्वासन दिया। क्षेत्रीय विधायक ने अपने काफिले के साथ गांव रामगंगा फार्म, सजापुर खैरीखत्ता, बैरीखत्ता प्रेमपुरी, रसूलाबाद, रसूलपुर आबाद, हिदायतपुर जामनवाला, मुरलीवाला कालागढ आदि में भ्रमण कर लोगो को समस्याओ को जाना। इस दौरान रसूलाबाद में ग्रामीणों के द्वारा विधायक सुशान्त सिंह के समक्ष पंचायत घर में शेड, शमशान घाट की माँग रखी गयी जिसे विधायक के द्वारा सहर्ष स्वीकार कर लिया गया। इस मौके पर विधायक कुँवर सुशान्त सिंह सहित ब्लाक प्रमुख, प्रदीप कुमार, पूर्व ब्लाक प्रमुख मलकीत सिंह, ग्राम प्रधान रसूलपुर आबाद रईस अहमद, पूर्व प्रधान सतेंदर सिंह, बलकार चन्द, अनिल नारायण,कुणाल चौहान नितिन आदि मौजूद रहे।

अवैध कब्जे पर चला प्रशासन का चाबुक

अफजलगढ़। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने प्रदेश में सक्रिय भू माफियाओं के खिलाफ कड़ी कार्रवाई के निर्देश दे रखे हैं. इसी के तहत बिजनोर में।जिलाधिकारी के आदेश पर एसडीम मनोज कुमार ने तहसील में भू माफियाओं के खिलाफ बड़ा अभियान चला रखा है। जिसके अंतर्गत एक सप्ताह में ही।कई स्थानों पर अफजलगढ़ ब्लाक सहित सरकारी भूमि कब्जा मुक्त कराई गई। प्रशासन ने अपने अभियान में थाना क्षेत्र में ग्राम समाज, स्कूल आदि की जमीन पर अतिक्रमण कर रहे लोगों के खिलाफ अभियान चलाया इस दौरान लगभग 68 बीघा सरकारी जमीन को मुक्त करा कर समीकान किया गया। शनिवार को नायब तहसीलदार डॉक्टर अजय कुमार के नेतृत्व में तहसील प्रशासन ने सबसे पहले थाना क्षेत्र के गांव अनवरपुर चण्डिका मे प्राथमिक विद्यालय की हदबंदी कराकर स्कूल की चहारदीवारी के लिए भूमि चिन्हित कर दी। उसके बाद राजस्व टीम ने ग्राम पंचायत तुरतपुर में पशुपालन विभाग की 10 एकड़ जमीन का सीमांकन कर ग्राम प्रधान को सुपुर्दगी नामा दिया गया।और अंत में राजस्व प्रशासन की ओर से गांव मुस्तफाबाद गढ़ी में 18 बीघा जमीन का सीमांकन का कार्य किया इस दौरान कब्जाधारी परिवार की महिला व पुरुषों ने कार्य को रोकने हेतु ट्रैक्टर के आगे खड़े होकर कार्य रोकना चाहा किन्तु । पुलिस बल के सख्ती दिखाने पर परिवार पीछे हट गया। जमीन का सीमांकन कर ग्राम प्रधान सीरवासुचंद की सुपुर्दगी में दे दी।इस दौरान उपनिरीक्षक अनोखे लाल, आशीष तोमर,काजल तेवतिया लेखपाल गौरव चौहान, ऋषिपाल, ब्रजमोहन, नागेंद्र सिंह आदि मौजूद रहे।

जालौन पुलिस ने तीन चोरों को चोरी की 11 मोटर साइकिलों सहित गिरफ्तार कर भेजा जेल

उरई(जालौन)। जालौन जनपद के नवागंतुक पुलिस अधीक्षक डा.ईरज राजा के निर्देशन में थाना कोतवाली जालौन पुलिस द्वारा 3 शातिर वाहन चोरों को चोरी की 11 अदद मोटरसाइकिल के साथ गिरफ्तार कर आवश्यक विधिक कार्यवाही कर जेल भेज दिया गया। उपरोक्त संबंध में पुलिस अधीक्षक ने पुलिस लाइन में आयोजित पत्रकार वार्ता में बताया गया है कि जालौन कोतवाली पुलिस ने गत रात्रि गश्त के दौरान तीन चोरों को कस्बे में एक चोरी की मोटर साइकिल सहित गिरफ्तार किया गया।जिन्होंने पूंछ तांछ में 10 और मोटर साइकिल चोरी की घटना कबूल की।जिनकी निशान देही पर डीड मेमोरियल स्कूल के पीछे जंगल कस्बा जालौन में चोरी की मोटर साइकिलें बरामद की गई, जिन्होंने अपने नाम लालू उर्फ वृजेन्द्र पुत्र भारत सिंह निवासी ग्राम कुंवरपुरा थाना रेंढ़र व कस्बा व थाना लहार जिला भिण्ड म.प्र.निवासी चतुरी उर्फ जीतू पुत्र स्व. सुरेश व राजकुमार पुत्र रामसिया बताये गए।चोरों ने पूंछ तांछ में मुकदमों की तारीखों व अपने खर्च के लिए मोटर साइकिलों की चोरी करते थे।उन्हें बेचकर अपना व अपने मुकदमों का खर्च चलाते हैं।

अधेड़ की लाश मिलने से मचा हड़कंप

बिजनौर/अफजलगढ़। थाना छेत्र में अधेड़ की लाश मिलने से मचा हड़कंप सूचना पर पहुंची स्थानीय पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए जिला अस्पताल भेजा। जानकारी के अनुसार थाना क्षेत्र के शेरगढ़ समीप पेट्रोल पंप के पास एक 65 वर्षीय व्यक्ति का शव पड़ा मेला। तो वही जानकारी देते हुए थाना प्रभारी निरीक्षक ने बताया कि अधेड़ व्यक्ति को भी मांगते हुए देखा गया था। जबकि मृतक की अभी तक कोई शिनाख्त नहीं हो पाई है। फिलहाल पुलिस ने शव का पंचनामा भरकर पोस्टमार्टम के लिए जिला अस्पताल भेज दिया है। इसमें डॉक्टरों का कहना है कि अधेड़ की मौत अधिक कमजोरी और ठंड से हुई है। फिलहाल अधेड़ की मौत का सही कारण अभी तक पता नहीं चल पाया है, पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही सही कारण पता चल पाएगा।

विधायक ओम कुमार ने प्राइवेट हॉस्पिटल का फीता काटकर किया उद्घाटन

बिजनौर। रविवार को नगर स्थित सीएचसी के सामने क्षेत्रिय विधायक ने फीता काटकर एक प्राइवेट हॉस्पिटल का उद्घाटन किया। रविवार को नगर स्थित सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के सामने हल्दौर सिटी के नाम से खुला हास्पिटल का संयुक्त रुप से फीता काटकर क्षेत्रिय विधायक ओम कुमार ने किया जिसमें डाङ्ग आशु आत्रे डाङ्ग के पी सिंह - डाङ्ग- गोल्डी वर्मा -डाङ्ग योगेन्द्र सिंह - डाङ्ग- पराजिता सिंह डाङ्ग- कपिल आदि मौजूद रहकर मरीजों का इलाज करेंगे बताया गया है कि अब मरीजों को बिजनौर - मुरादाबाद -मेरठ - दिल्ली बाहर जाने की जरूरत नहीं होगी सभी प्रकार के इलाज यहीं किए जाएंगे! हल्दौर में एक मात्र बड़ा अस्पताल खुल गया है। जिसमें सभी प्रकार के आपरेशन भी किए जाएंगे। उद्घाटन कार्यक्रम के मौके पर नगर के गणमान्य लोग एवं डाक्टर समेत सैकड़ों लोगों की भीड़ रही। नहटौर ब्लाक के पूर्व ब्लाक प्रमुख नवनिहाल सिंह हल्दौर स्टेट के कुंवर प्रमोद कुमार -भाजपा जिलाध्यक्ष सुभाष बाल्मिकी - भाजपा मंडल अध्यक्ष दर्पण रावल -अनिल सिंह - लिटटू मारवाड़ी-। नसीम अहमद- राजेश खन्ना- यादराम सिंह- बार एसोसिएशन के पूर्व अध्यक्ष बबली एडवोकेट - हल्दौर नगर पालिका परिषद के अध्यक्ष पद के दावेदार सीताराम सैनी।

न्यूज झरोखा

पर्व पर श्रद्धालुओं को पिलाई गरमा-गरम चाय

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। मकर संक्रान्ति पर्व पर मां सेवा संस्थान ने तीर्थयात्रियों को मुखारबिन्दु में चाय, बिस्कुट वितरित किया। चाय वितरण शिविर का शुभारम्भ प्रमुख पुजारी नन्दकिशोर दास व विशिष्ट अतिथि जिला विकास अधिकारी राजकुमार त्रिपाठी ने किया।

सोमवार को कामतानाथ प्रमुख द्वार मुखारबिन्दु पर श्री मां सेवा संस्थान के चाय वितरण शिविर का शुभारम्भ संस्था की प्रबंधक श्रीमती संजुला पाण्डेय, सचिव जितेन्द्र सिंह की देखरेख में शुरू हुआ। संस्था के सचिव जितेन्द्र सिंह ने बताया कि संस्था के सदस्य एवं धार्मिक आस्थावान लोगों के आपसी सहयोग से मयार्दा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम की कर्मस्थली में पधारे तीर्थयात्रियों को भीषण सर्दी के मौसम में गरमा-गरम चाय व बिस्कुट बांटकर राहत महसूस कराई गई। इस कार्यक्रम में लोगों ने भूरि-भूरि सराहना की।

इस मौके पर रामनरेन्द्र पाण्डेय, चन्द्रमोहन द्विवेदी, रामबहोरी गैस वाले, ओमप्रकाश साहू, अनिल अग्रवाल, आशीष पटेल, मुन्ना सोनी, सुनील सुहाने, संजीव मित्तल, डॉ स्वतंत्र प्रकाश श्रीवास्तव, डॉ नागेन्द्र सिंह, राजीव गुप्ता, रेखा सिंह, अर्चना अग्रवाल, रामारानी दास, छाया गुप्ता, गंगोत्री देवी, रजनी बरसइया, राजकिशोर त्रिपाठी, प्रकाश केशरवानी, ओमनाथ पाण्डेय, लोकेन्द्रनाथ पाण्डेय आदि मौजूद रहे।

दम्पति के विवाद को पुलिस ने सुलझाया

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक श्रीमती वृन्दा शुक्ला के निर्देश पर सामाजिक रिश्तों को बचाने के प्रयास के क्रम में महिला थाना प्रभारी ने दम्पति के विवाद को सुलझाकर शादी के अटूट बंधन को टूटने से बचाया।

सोमवार को कोतवाली कर्वी के काली देवी गली के अन्दर की श्रीमती रूबी ने अपने पति गोलू पुत्र रमजान के खिलाफ दिये पत्र में एसपी को बताया कि पति नयापुरा बंधान बाट जिला महोबा आये दिन विवाद कर उसे घर से निकाल दिया है। महिला थाना प्रभारी श्रीमती सविता श्रीवास्तव ने शिकायतकर्ता की बातों को समझकर पति को थाने बुलाया। दोनों पक्षों को समझा-बुझाकर भविष्य में विवाद न करने तालमेल से रहने की सलाह दी।

दोनों पक्षों ने पति-पत्नी के कर्तव्यों का पालन करने की बात कही। महिला थाने में दोनों पक्षों के बीच सुलह होने पर दम्पति को सही ढंग से पारिवारिक दायित्वों का निर्वहन करने की सलाह दी। इस मौके पर महिला थाना प्रभारी श्रीमती सविता श्रीवास्तव, महिला सिपाही रीता यादव व नीतू द्विवेदी मौजूद रहीं।

फांसी के फंदे पर लटकी शिक्षिका, मायके पक्ष ने पति पर लगाया हत्या का आरोप

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। शिवरामपुर पुलिस चैकी क्षेत्र के खुटहा गांव के मोड के पास स्थित एक घर में अराधना पाण्डेय (40) पत्नी रामभूषण पाण्डेय का शव फांसी के फंदे पर लटकता मिला। मृतका के परिजनों ने पति पर हत्या का आरोप लगाया है। ससुरालीजनों ने आरोप को गलत बताया है।

ये घटना शिवरामपुर पुलिस चैकी के खुटहा मोड के पास सोमवार को दोपहर में हुई। मृतका की भाभी मोहनी द्विवेदी ने बताया कि अराधना पाण्डेय के पति रामभूषण पाण्डेय इन दिनों पहाडी ब्लाक के देवल गांव के परिषदीय स्कूल में सहायक शिक्षक हैं। आरोप लगाया कि पति ने पत्नी की हत्या की है। पति के पीटने के चलते अराधना पाण्डेय अलग रहने लगी थी। शहर के बेडीपुलिया स्थित एक प्राइवेट स्कूल में शिक्षिका थी। इनका मामला अदालत तक पहुंचा था। एक बार समझौता भी हुआ था। पति आये दिन पत्नी को परेशान करता था। चैकी शिवरामपुर प्रभारी राजोल नागर ने बताया कि परिजनों ने घटना की सूचना दी है। तहरीर पर पति के खिलाफ मामला दर्ज किया गया है। शव का पंचनामा कर पोस्टमार्टम को मर्चरी भेजा गया है। मृतका के दो पुत्रियां हैं।

राहगीरों के बीच नि:शुल्क चाय का वितरण किया

नगीना। बस स्टैंड नगीना में राहगीरों को निशुल्क चाय वितरण का कार्य किया गया। यह प्रोग्राम ऑल इंडिया पयाम इंसानियत फोरम यूनिट नगीना की ओर से किया गया इसमें यूनिट के कार्यकर्ता तंजील आलम ने बताया ऐसे प्रोग्राम करने का मकसद लोगों को थोड़ी बहुत राहत देने की एक कोशिश है और इसके जरिए आपस में हिंदू मुस्लिम एकता आपस में प्यार मोहब्बत बरकरार रहे। इसी तर्ज पर इस यूनिट में हिंदू मुस्लिम नौजवान मिलकर इस कार्य को पुण्य का काम समझ कर करते हैं।

आज के इस प्रोग्राम में हिस्सा लेने वालों में आदिल कादरी श्रीकांत कपिल मौलाना आमिर धर्मेंद्र आनंद अतुल अंदाज जी मोहम्मद दानिश जैद हुजैफा मोहम्मद रज्जाक वगैरा ने इस पुण्य का काम में हिस्सा लिया।

दक्षिण कोरिया के राष्ट्रपति यूएई के दौरे पर, हथियार समझौते की संभावना

यूएइ। दक्षिण कोरिया के राष्ट्रपति यून सुक योल का संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) के दौरे पर गर्मजोशी से स्वागत किया गया। यून ने सैन्य साजो-सामान के समझौते के विस्तार की उम्मीद जताई है। यून की यात्रा ऐसे समय में हो रही है जब दक्षिण कोरिया ने यूएई के साथ अरबों डॉलर के व्यापारिक करार कर रखे हैं और संयुक्त अरब अमीरात की रक्षा के लिए विशेष बलों के सैनिकों की तैनाती के समझौते को लेकर उसकी आलोचना हो रही है। यून अबू धाबी के कसर अल वतन पैलेस पहुंचे। यून का यूएई के नेता शेख मोहम्मद बिन जायद अल नाहयान ने स्वागत किया, जिन्होंने पिछले साल मई में पदभार संभाला था।

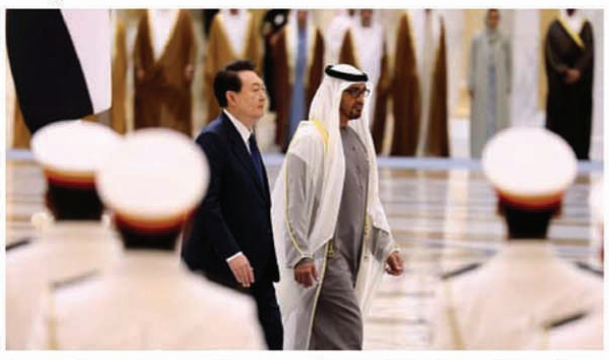

यून और उनकी पत्नी किम केओन के आगमन पर सेना द्वारा उन्हें सलामी गारद पेश किया गया। एक सैन्य बैंड ने दक्षिण कोरियाई और यूएई के राष्ट्रगान बजाए। समारोह के बाद, दक्षिण कोरिया की 'योनहाप' समाचार एजेंसी ने शेख मोहम्मद के हवाले से कहा कि यूएई ने दक्षिण कोरिया में 30 अरब डॉलर का निवेश करने की योजना बनाई है। उन्होंने कहा, ''हमने कोरिया गणराज्य में विश्वास के साथ निवेश करने का फैसला किया है जो सभी परिस्थितियों में अपने वादे को निभाता है।'' यून की सरकार में राष्ट्रीय सुरक्षा मामलों के निदेशक किम सुंग-हान ने कहा, ''यह यात्रा हमारे मित्र देश यूएई के साथ परमाणु ऊर्जा, ऊर्जा, निवेश और रक्षा के चार प्रमुख क्षेत्रों में रणनीतिक सहयोग को मजबूत करेगी।'' शनिवार को, 'योनहाप' एजेंसी ने राष्ट्रपति कार्यालय के एक अज्ञात अधिकारी के हवाले से यह भी कहा कि हथियार समझौते की योजना बनाई गई है। एक अधिकारी ने कहा, ''हथियार उद्योग से जुड़े दक्षिण कोरिया और यूएई के बीच सुरक्षा या सैन्य सहयोग के लिए माहौल काफी समझदारीपूर्ण है।

तालीबान राज में दहशत, अफगानिस्तान की पूर्व महिला सांसद मुरसल नबीजादा की गोली मारकर हत्या

काबुल। अफगानिस्तान की पूर्व महिला सांसद मुर्सल नबीजादा और उनके एक अंगरक्षक की उनके काबुल स्थित आवास पर गोली मारकर हत्या कर दी गई। पुलिस ने कहा कि अज्ञात हमलावरों ने अफगानिस्तान के पूर्व सांसद मुर्सल नबीजादा और उनके एक अंगरक्षक की हत्या को अंजाम दिया।

मुर्सल नबीज़ादा उन कुछ महिला सांसदों में से थीं, जो अगस्त 2021 में तालिबान के सत्ता पर क़ब्ज़ा करने के बाद काबुल में रुकी थीं। यह पहली बार है जब पिछले प्रशासन के किसी सांसद को अधिग्रहण के बाद से शहर में मार दिया गया है।स्थानीय पुलिस प्रमुख मोलवी हमीदुल्ला खालिद ने एएफपी के

हवाले से कहा कि नबीजादा और उनके गार्ड की शनिवार तड़के करीब तीन बजे उसी कमरे में गोली मारकर हत्या कर दी गई। उसने कहा कि उसका भाई और एक दूसरा सुरक्षाकर्मी घायल हो गया। तीसरा सुरक्षाकर्मी रुपये और जेवरात लेकर मौके से फरार हो गया। पूर्व विधायक का उनके घर की पहली मंजिल पर निधन हो गया, जिसे वह अपने कार्यालय के रूप में इस्तेमाल करती थीं। खालिद ने कहा कि जांच चल रही है। उन्होंने संभावित उद्देश्यों के बारे में पूछे गए सवालों का जवाब नहीं दिया।काबुल पुलिस के प्रवक्ता खालिद जादरान ने कहा, नबीजादा और उनके एक अंगरक्षक की उनके घर में गोली मारकर हत्या कर दी गई। सुरक्षा बलों ने घटना की जांच शुरू कर दी है।÷ उन्होंने कहा कि पूर्व विधायक का एक भाई भी हमले में घायल हो गया था, जो शनिवार और रविवार की रात के दौरान हुआ था। पूर्व सांसद मरियम सोलेमानखिल ने ट्विटर पर कहा कि नबीज़ादा अफगानिस्तान के लिए निडर चैंपियन थे।

इमरान खान ने कहा कि पाकिस्तान के राष्ट्रपति जल्द ही शहबाज शरीफ को विश्वास मत का सामना करने के लिए कहेंगे

इस्लामाबाद। पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान ने कहा है कि राष्ट्रपति आरिफ अल्वी जल्द ही प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ से विश्वास मत का सामना करने के लिए कहेंगे। खान का यह बयान ऐसे समय आया है जब उन्होंने देश में मध्यावधि चुनाव के लिए सरकार पर दबाव बनाने के प्रयास तेज कर दिये हैं। खान ने यहां मीडिया से बातचीत और साथ साक्षात्कार में कहा, ''शहबाज शरीफ ने पंजाब में हमारी परीक्षा ली थी और अब यह साबित करने की बारी उनकी है कि उनके पास नेशनल असेंबली में बहुमत है या नहीं।''पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ अध्यक्ष खान ने संघीय गठबंधन में मतभेदों का हवाला देते हुए कहा, ''पहले शहबाज शरीफ विश्वास मत की परीक्षा दें...और बाद में हमारी उनके लिए दूसरी योजना हैं।'' गौरतलब है कि मुत्ताहिदा कौमी मूवमेंट-पाकिस्तान (एमक्यूएम-पी) ने कराची और हैदराबाद में स्थानीय निकाय चुनावों के मुद्दे पर गठबंधन छोड़ने की धमकी दी है। राष्ट्रपति अल्वी, खान की पीटीआई

पार्टी के हैं और संघीय गठबंधन बेहद मामूली बहुमत पर चल रहा है। नेशनल असेंबली में एमक्यूएम-पी के सात सदस्य हैं और अगर वह गठबंधन छोड़ने का फैसला करता है तो शहबाज सरकार बरकरार नहीं रह सकती। खान देश में मध्यावधि चुनाव कराने पर जोर दे रहे हैं। खान ने कहा कि नए सिरे से चुनाव ही मुल्क को आर्थिक संकट से बाहर निकाल सकता है। बहरहाल, संघीय सरकार का कहना है कि अगस्त में सरकार का कार्यकाल पूरा होने के बाद ही आम चुनाव कराए जाएंगे। इस बीच,पाकिस्तान में पंजाब के राज्यपाल बालीगुर रहमान द्वारा मुख्यमंत्री चौधरी परवेज इलाही की सलाह पर हस्ताक्षर करने से इनकार किए जाने के 48 घंटे बाद पंजाब विधानसभा संविधान के अनुसार शनिवार शाम भंग हो गई। इलाही ने पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) के अध्यक्ष इमरान खान की ''इच्छा'' के अनुसार विधानसभा भंग करने की सलाह बृहस्पतिवार को भेजी थी। राज्यपाल ने इस सलाह पर हस्ताक्षर नहीं किए। इसके बाद संविधान के अनुसार राज्यपाल को सलाह भेजे जाने के 48 घंटे बाद विधानसभा भंग हो गई। खान ने कहा कि कुछ दिन में खैबर पख्तूनख्वा असेंबली भी भंग की जाएगी। इस बीच, पाकिस्तान मुस्लिम लीग-नवाज (पीएमएल-एन) के प्रमुख नेता नवाज शरीफ ने लंदन से वीडियो लिंक के जरिए शनिवार शाम को लाहौर में पार्टी की एक बैठक की अध्यक्षता की। वह नवंबर 2019 से ही लंदन में हैं। पीएमएल-एन की प्रवक्ता और संघीय सूचना मंत्री मरियम औरंगजेब ने कहा, ''नवाज शरीफ ने पार्टी नेताओं और कार्यकर्ताओं को पंजाब में चुनाव की तैयारियां शुरू करने का निर्देश दिया है। उन्होंने प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ को टिकट वितरित करने के लिए एक संसदीय बोर्ड गठित करने के लिए भी कहा है।

पोखरा में दुर्घटनाग्रस्त विमान का ब्लैक बॉक्स मिला

काठमांडू (नेपाल)। मध्य नेपाल के पोखरा में दुर्घटनाग्रस्त विमान का ब्लैक बॉक्स 24 घंटे बाद सोमवार को राहत और बचाव अभियान के बीच बरामद हो गया। अधिकारी अब पता लगाएंगे कि यह हादसा किस कारण से हुआ था। काठमांडू एयरपोर्ट के एक

अधिकारी ने कहा है कि सर्च ऑपरेशन के दौरान क्षतिग्रस्त विमान का ब्लैक बॉक्स बरामद हो गया है। उल्लेखनीय है कि किसी भी विमान हादसे की वजह का पता लगाने के लिए दो डिवाइस का मिलना बहुत जरूरी होता है। एयरक्राफ्ट के फ्लाइट डाटा रिकॉर्डर (एफडीआर) और कॉकपिट वॉयस रिकॉर्डर (सीवीआर) को ब्लैक बॉक्स कहा जाता है। इनमें से एक के जरिए कॉकपिट के अंदर की बातें रिकॉर्ड होती हैं और दूसरे में विमान से जुड़े आंकड़े, जैसे-गति और ऊंचाई रिकॉर्ड होती है। यह ऑरेंज कलर का होता है। यह किसी भी चीज से क्षतिग्रस्त नहीं होता है। लगभग 20,000 फीट की दूरी से इसका पता लगाया जा सकता है। इसकी बैटरी 30 दिन तक ही चलती है। लेकिन इसका डाटा वर्षों बाद भी सुरक्षित रहता है।

बाइडन के आवास पर और गोपनीय दस्तावेज मिले : व्हाइट हाउस

वाशिंगटन। अमेरिका के राष्ट्रपति जो. बाइडन के डेलवेयर आवास से गोपनीय दस्तावेज के पांच अतिरिक्त पन्ने मिले हैं। व्हाइट हाउस ने बताया कि इसके साथ ही अभी तक बाइडन के आवास से करीब 24 गोपनीय दस्तावेज बरामद हो चुके हैं। ये दस्तावेज ऐसे समय मिले हैं जब कुछ घंटे पहले व्हाइट हाउस अधिवक्ता कार्यालय ने एक बयान जारी करके बाइडन के आवास से एक गोपनीय दस्तावेज बरामद होने की जानकारी दी थी और अटॉर्नी जनरल मेरिक गारलैंड ने पूर्व अमेरिकी अटॉर्नी रॉबर्ट हुर को मामले की जांच करने के लिए विशेष अधिवक्ता नियुक्त किया था। इसके साथ ही बाइडन के डेलावेयर आवास और वाशिंगटन डीसी स्थित उनके निजी कार्यालय से बरामद दस्तावेजों की कुल संख्या तकरीबन 24 हो गयी है।बहरहाल, इन दस्तावेजों की विस्तृत जानकारियां अभी पता नहीं है लेकिन ये उस दौर के हैं जब बाइडन 2009 से 2016 तक बराक ओबामा प्रशासन में उपराष्ट्रपति थे।

सराफा बाजार: नई ऊंचाई पर पहुंचा सोना, कीमत 58 हजार के पार

नई दिल्ली। घरेलू सराफा बाजार में आज सोना ऑल टाइम हाई के नए रिकॉर्ड पर पहुंच गया। सराफा बाजार की तेजी की वजह से सोना पहली बार 55,800 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर से ऊपर जाकर खुला। इसके पहले तक सोना का ऑल टाइम हाई रिकॉर्ड 56,600 रुपये प्रति 10 ग्राम था। आपको बता दें कि जनवरी में सोने की कीमत में लगातार तेजी आई है। ये चमकीली धातु कई बार 56 हजार रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर को पार करने में सफल रही है। 13 जनवरी को भी सोना 56,462 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर तक पहुंचा था। लेकिन आज इस चमकीली धातु ने 352 रुपये प्रति 10 ग्राम की छलांग लगाकर कीमत का नया रिकॉर्ड कायम कर लिया। आज के कारोबार में चांदी ने भी 1,100 रुपये प्रति किलोग्राम से भी अधिक की छलांग लगाई। इस तेजी के कारण चांदी एक बार फिर 69,000 रुपये प्रति किलोग्राम के स्तर को पार कर गया। इंडियन बुलियन एंड ज्वेलर्स एसोसिएशन (आईबीजेए) की ओर से उपलब्ध कराई गई जानकारी के मुताबिक घरेलू सराफा बाजार में आज कारोबारी यानी 24 कैरेट (999) सोने की औसत कीमत 352 रुपये की तेजी के साथ उछल कर 56,814 रुपये प्रति 10 ग्राम (अस्थाई) हो गई। इसी तरह 23 कैरेट (995) सोने की कीमत भी 351 रुपये की मजबूती के साथ 56,587 रुपये प्रति 10 ग्राम (अस्थाई) हो गई।

अखंड भारत संदेश
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक
स्वामी श्री योगी सत्यम् फॉर
योग सत्संग समिति
द्वारा विपिन इण्टरप्राइजेज
1/6C माधव कुंज
कटरा प्रयागराज से मुद्रित
एवं
क्रियायोग आश्रम एण्ड अनुसंधान संस्थान
झूंसी, प्रयागराज उत्तर प्रदेश
से प्रकाशित।
सम्पादक
स्वामी श्री योगी सत्यम्
Title UPHIN 29506
ऑफिस मो.:
9565333000
Email:-
akhandbharatsandesh1@gmail.com
सभी विवादों का न्याय क्षेत्र
प्रयागराज होगा।

दावोस शिखर सम्मेलन में जुटेंगे दुनिया भर के दिग्गज, भारत की भी अहम हिस्सेदारी

दावोस। स्विट्जरलैंड की बर्फीली वादियों वाले शहर दावोस में वैश्विक नेताओं का बड़ा जमावड़ा शुरू होगा जिसमें भारत के लगभग सौ लोगों समेत हजारों प्रतिनिधि खंडित दुनिया में सहयोग के विषय पर चर्चा करेंगे। विश्व आर्थिक मंच (डब्ल्यूईएफ) की पिछली वार्षिक बैठक सामान्य चलन से हटकर गत वर्ष मई में आयोजित करनी पड़ी थी। दावोस शिखर सम्मेलन आम तौर पर जनवरी में आयोजित होता रहा है लेकिन कोविड-19 महामारी संबंधी प्रतिबंधों के कारण ऐसा नहीं हो पाया था। इसके पहले वर्ष 2021 की बैठक भी ऑनलाइन ही हो पाई थी। महामारी से जुड़ी कुछ बंदिशों के अब भी कायम रहने, यूक्रेन में युद्ध जारी रहने और भू-राजनीतिक स्थिति के आर्थिक दुष्प्रभावों के साथ स्वास्थ्य संकट ने इस बार की दावोस बैठक को काफी दिलचस्प बना दिया है।सोमवार से शुरू होने वाली बैठक के लिए अगले पांच दिनों में लगभग 50 शासनाध्यक्षों एवं

राष्ट्राध्यक्षों के शामिल होने की उम्मीद है। भारत की तरफ से इसमें चार केंद्रीय मंत्री- मनसुख मंडाविया, अश्विनी वैष्णव, स्मृति ईरानी और आर के सिंह के अलावा महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे भी शामिल होंगे। कई अधिकारी और कारोबारी उद्यमी भी इसमें मौजूद होंगे। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और कर्नाटक के बी एस बोम्मई भी इस बैठक में जाने वाले थे लेकिन अब उनके शिखर सम्मेलन में भाग लेने की संभावना नहीं है। हालांकि राज्यसभा सांसद राघव चड्ढा, तेलंगाना के मंत्री के टी रामाराव और तमिलनाडु के मंत्री थंगम थेनारासु दावोस पहुंच चुके हैं।

कारोबारी जगत के दिग्गजों में गौतम अडानी, संजीव बजाज, कुमार मंगलम बिड़ला, एन चंद्रशेखरन, नादिर गोदरेज, अजीत गुलाबचंद, सज्जन जिंदल, सुनील मित्तल, रोशनी नादर मल्होत्रा, नंदन नीलेकणि, अदार पूनावाला, रिषद प्रेमजी और सुमंत सिन्हा के बैठक में शामिल होने की संभावना है। दावोस बैठक में दुनिया भर के नेताओं से तात्कालिक आर्थिक, ऊर्जा और खाद्य संकट दूर करने के लिए और अधिक टिकाऊ एवं जुझारू दुनिया के लिए जमीनी स्तर पर काम करने का आह्वान किया जाएगा। आयोजकों को चीन और जापान सहित एशिया से अच्छी भागीदारी होने की उम्मीद है। डब्ल्यूईएफ की 53वीं वार्षिक बैठक का विषय एक खंडित विश्व में सहयोग होगा। इसमें 130 देशों के 2,700 से अधिक नेताओं को बुलाएगा जिनमें 52 राष्ट्र-प्रमुख एवं शासन-प्रमुख भी होंगे।इसमें शिरकत करने वाले शीर्ष राजनीतिक नेताओं में जर्मन चांसलर ओलाफ शोल्ज, यूरोपीय आयोग की प्रमुख उर्सुला वॉन डेर लिएन, यूरोपीय संसद के अध्यक्ष रॉबर्टा मेट्सोला, दक्षिण कोरियाई राष्ट्रपति यून सुक-योल, दक्षिण अफ्रीका के राष्ट्रपति सिरिल एम रामफोसा, स्पेन के प्रधानमंत्री पेड्रो सांचेज और स्विस राष्ट्रपति एलेन बर्सेट शामिल हैं। डब्ल्यूईएफ के संस्थापक एवं कार्यकारी चेयरमैन क्लॉस श्वाब ने कहा, हम इस समय राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक ताकतों को वैश्विक और राष्ट्रीय स्तर पर विखंडन करता हुआ देखते हैं। भरोसे में आई इस गिरावट की असली वजह को दूर करने के लिए हमें सरकार और व्यापार क्षेत्रों के बीच सहयोग बढ़ाने की जरूरत है।

बलूचिस्तान में सिलेंडर विस्फोट, एक ही परिवार के छह लोगों की मौत

इस्लामाबाद। पाकिस्तान के दक्षिण-पश्चिमी बलूचिस्तान प्रांत हुए एक सिलेंडर विस्फोट में चार बच्चों समेत एक ही परिवार के छह लोगों की मौत हो गई है। प्रांतीय राजधानी क्वेटा में कड़ाके की ठंड से बचने के लिए परिवार ने हीटर चालू करने की कोशिश की, तभी धमाके के साथ विस्फोट हो गया। माना जा रहा है कि इस धमाके के पीछे की वजह गैस रिसाव है।

स्थानीय पुलिस ने मीडिया को बताया कि धमाका सिलेंडर से गैस लीक होने के कारण हुआ, जिससे पूरा घर क्षतिग्रस्त हो गया। धमाका इतनी तेज था कि आस-पास के लोग तुरंत मौके पर इकट्ठा हो गए। बचाव कर्मियों के अनुसार विस्फोट के बाद एक दंपति और उनके चार बच्चों की मौके पर ही मौत हो गई। सभी शवों को अस्पताल में स्थानांतरित कर दिया गया है।

उत्तरी चीन में रासायनिक संयंत्र में विस्फोट, दो की मौत, 12 लापता और 34 घायल

बीजिंग। पूर्वोत्तर चीन में एक रासायनिक संयंत्र में हुए भीषण विस्फोट में कम से कम दो लोगों की मौत हो गई और 12 लापता हो गए। राजधानी बीजिंग के पूर्व में लियाओनिंग प्रांत के पंजिन शहर के बाहरी इलाके में हुए विस्फोट में 34 अन्य लोग घायल हो गए। स्थानीय सरकार के समाचार विज्ञप्ति में रासायनिक प्रसंस्करण मशीनरी, पाइप और भंडारण कंटेनरों के परिसर से आग की लपटों और घने काले धुएं की तस्वीरें दिखाई गईं।शहर के उपनगरों में पानशान काउंटी की सरकार ने एक समाचार विज्ञप्ति में कहा कि दमकल कर्मियों ने आग पर काबू पा लिया है और स्थानीय पर्यावरण विभाग क्षेत्र में वायु गुणवत्ता पर प्रभाव की निगरानी कर रहा है। अधिकारियों ने कहा कि दुर्घटना के कारणों की जांच की जा रही है। सोशल मीडिया पर पोस्ट करने वाले लोगों ने कहा कि उन्हें विस्फोट का झटका महसूस हुआ, लेकिन नुकसान संयंत्र से आगे

नहीं बढ़ा। दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था वाला चीन नियमित रूप से घातक औद्योगिक दुर्घटनाओं का शिकार होता है।उत्तरी बंदरगाह शहर टियांजिन में एक रासायनिक गोदाम में 2015 में हुए विस्फोट के बाद से केंद्र सरकार ने मजबूत सुरक्षा उपायों का वादा किया था। इस दुर्घटना में 173 लोग मारे गए थे, जिनमें से अधिकांश अग्निशामक और पुलिस अधिकारी थे। उस मामले में, कई स्थानीय अधिकारियों पर सुरक्षा उल्लंघनों की उपेक्षा करने के लिए रिश्वत लेने का आरोप लगाया गया था।

दक्षिण कोरिया में बर्फ से ढकी सड़क पर करीब 50 वाहन टकराए, एक व्यक्ति की मौत व कई अन्य घायल

सियोल। दक्षिण कोरिया की राजधानी के पास बर्फ से ढके राजमार्ग पर रात करीब 50 वाहन आपस में टकरा गए, जिसमें एक व्यक्ति की मौत हो गई और कई अन्य लोग घायल हो गए। पोचिओन शहर में दमकल विभाग के एक अधिकारी ह्वांग ताए-जियोन ने बताया कि गुरी-पोचिओन राजमार्ग पर कम से कम 47 वाहन सड़क पर फिसलन के कारण एक-दूसरे से टकरा गए। तस्वीरों में पुलिस अधिकारियों और बचावकर्मियों को 'स्ट्रेचर' लिए, मलबे के बीच, सड़क पर भागते हुए देखा जा सकता है। एक यात्री बस सहित कई वाहन आगे और पीछे से क्षतिग्रस्त हो गए।उत्तरी ग्योंगगी प्रांत के दमकल विभाग के अधिकारी किम डोग-वान ने बताया कि एक व्यक्ति को दिल का दौरा पड़ने के बाद अस्पताल ले जाया गया, जहां चिकित्सकों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। कम से कम तीन वाहन सवार लोग गंभीर रूप से घायल हो गए, वहीं करीब 29 लोगों को मामूली चोटें आई हैं। ह्वांग ने बताया कि जिन घायलों को अस्पताल ले जाने की जरूरत नहीं थी, उन्हें बचावकर्मियों ने बसों में उनके घर

पहुंचाया। हादसा सियोल के उत्तर में करीब 40 किलोमीटर की दूरी पर स्थित पोचिओन जाने वाले एक राजमार्ग के पास हुआ।

शरीफ ने कहा कि मित्र देशों से और कर्ज लेने में शर्मिंदगी महसूस होती है

काठमांडू (नेपाल)। पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ ने कहा है कि मित्र देशों से और कर्ज मांगने में उन्हें शर्मिंदगी महसूस होती है क्योंकि यह नकदी संकट से जूझ रहे देश की आर्थिक चुनौतियों का स्थायी समाधान नहीं है। शरीफ पंजाब प्रांत की राजधानी लाहौर में पाकिस्तान प्रशासनिक सेवा (पीएएस) के परिवीक्षाधीन अधिकारियों के पासिंग आउट समारोह को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने इस दौरान अपने संबोधन में इसको लेकर खेद जताया कि पिछले 75 वर्षों के दौरान देश की विभिन्न सरकारों ने आर्थिक मुद्दों पर ध्यान नहीं दिया।'जियो न्यूज' के अनुसार शरीफ ने वित्तीय सहायता के लिए सऊदी अरब की प्रशंसा करते हुए कहा कि और ऋण मांगने में उन्हें वास्तव में शर्मिंदगी महसूस होती है। उन्होंने कहा कि विदेशी ऋण मांगना पाकिस्तान की आर्थिक चुनौतियों का सही समाधान नहीं है क्योंकि ऋण अंततः वापस करना होगा। उन्होंने कहा कि यदि सही नीतियों को सही समय पर लागू किया गया होता तो सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी)को प्राप्त किया जा सकता था और विदेशी ऋणों से बचा जा सकता था। वर्तमान समय में पाकिस्तान आर्थिक मुद्दों का सामना कर रहा है।